

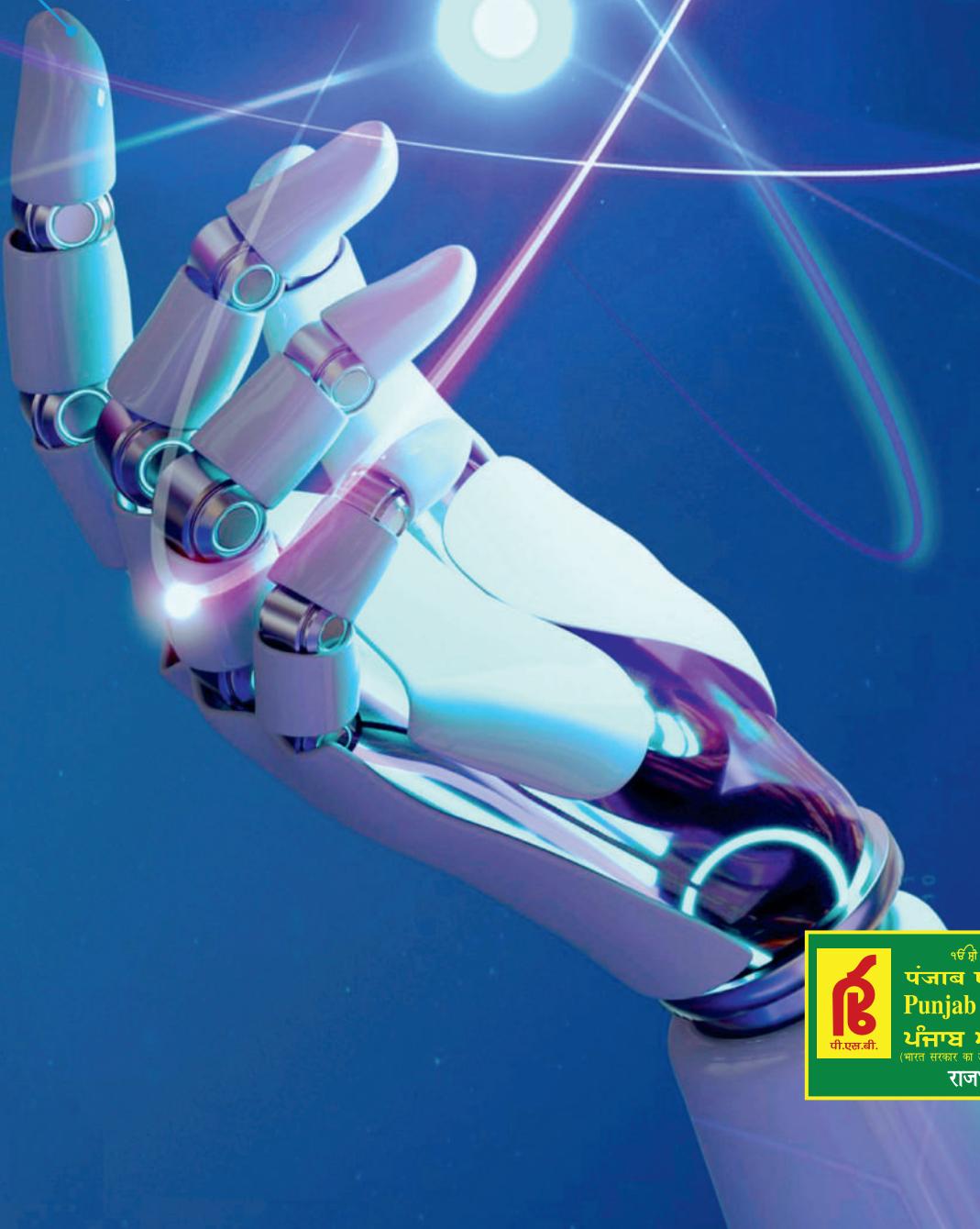


ਪੀ. ਏਂਡ ਸੰਡ. ਬੈਂਕ

ਰਾਜਮਾਣਾ ਅੰਕੁਰ

ਦਿਸ਼ਾਂਬਦ 2023

ਕੁਤ੍ਰਿਮ ਬੁਦਧਿਮतਾ ਵਿਸ਼ੇ਷ਾਂਕ



ੴ ਪ੍ਰੀ ਅਖਿਲਗੁਰ ਨੇ ਕੀ ਹੁਕਮਿ॥
ਪੰਜਾਬ ਏਂਡ ਸਿੰਘ ਬੈਂਕ
Punjab & Sind Bank
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਘ ਬੈਂਕ
(ਭਾਰਤ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਉਦੱਤ / A Govt. of India Undertaking)

ਰਾਜਮਾਣਾ ਵਿਭਾਗ

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

प्रधान कार्यालय स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक 13 दिसंबर, 2023 को माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय श्री स्वरूप कुमार साहा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में कार्यकारी निदेशक डॉ. रामजस चादव, श्री रवि मेहरा सहित प्रधान कार्यालय के समस्त विभागों के महाप्रबंधक व अन्य उच्चाधिकारी उपस्थित रहे। इस दौरान बैंक में हो रहे राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की गई और राजभाषा संबंधी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया।



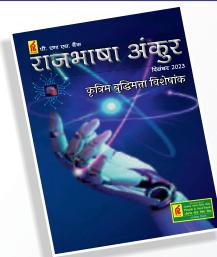
इस अवसर पर माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय ने अपने कर कमलों से बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका “राजभाषा अंकुर” के नवीनतम अंक का विमोचन किया।

ਪੰਜਾਬ ਏਣਡ ਸਿੰਘ ਬੈਂਕ

ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਾਰਾਲਿਆ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ ਕੀ ਹਿੰਦੀ ਪਤ੍ਰਿਕਾ
ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਅੰਕੁਰ

(ਕੇਵਲ ਆਂਤਰਿਕ ਵਿਤਰਣ ਹੇਤੁ)

ਬੈਂਕ ਹਾਊਸ, ਪ੍ਰਥਮ ਤਲ, 21, ਰਾਜੇਨਦ੍ਰ ਪਲੇਸ, ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ-110 008



ਦਿਸੰਬਰ 2023

ਮੁੱਖ ਸਂਰਕਕ

ਸ਼੍ਰੀ ਸ਼ਵਲੁਪ ਕੁਮਾਰ ਸਾਹਿਤ
ਪ੍ਰਬੰਧ ਨਿਦੇਸ਼ਕ ਏਵਾਂ ਮੁੱਖ ਕਾਰਘਕਾਰੀ ਅਧਿਕਾਰੀ

ਸਂਰਕਕ

ਡਾਕਾਂ ਰਾਮਜ਼ਸ ਯਾਦਵ
ਕਾਰਘਕਾਰੀ ਨਿਦੇਸ਼ਕ

ਸ਼੍ਰੀ ਰਵਿ ਮੋਹਦਾ
ਕਾਰਘਕਾਰੀ ਨਿਦੇਸ਼ਕ

ਮੁੱਖ ਸਾਂਪਾਦਕ

ਸ਼੍ਰੀ ਗਜਦਾਜ ਦੇਵੀ ਸਿੰਹ ਠਾਕੁਰ
ਮਹਾਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸਹ ਮੁੱਖ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਅਧਿਕਾਰੀ

ਸਾਂਪਾਦਕ ਵ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ

ਸ਼੍ਰੀ ਨਿਖਿਲ ਸ਼ਾਮਾ
ਮੁੱਖ ਪ੍ਰਬੰਧਕ (ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ)

ਸਾਂਪਾਦਕ ਮੰਡਲ

ਸ਼੍ਰੀ ਦੇਵੇਨ੍ਦਰ ਕੁਮਾਰ, ਵਰਿ਷਼ਟ ਪ੍ਰਬੰਧਕ (ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ)
ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਭਾਰਤੀ, ਪ੍ਰਬੰਧਕ (ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ)

ਸ਼੍ਰੀ ਮੋਹਨ ਲਾਲ, ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਅਧਿਕਾਰੀ

ਸ਼੍ਰੀ ਰੂਪ ਕੁਮਾਰ, ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਅਧਿਕਾਰੀ

ਈ-ਮੈਲ : ho.rajbhasha@psb.co.in

ਪੰਜੀਕਰਣ ਸੰਖਾ : ਏਫ.2 (25) ਪ੍ਰੈਸ. 91

(ਪਤ੍ਰਿਕਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਤਿਥੀ : 31.01.2024)

'ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਅੰਕੁਰ' ਮੈਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਸਾਮਗ੍ਰੀ ਮੈਂ ਦਿੱਏ ਗਏ ਵਿਚਾਰ, ਸੰਬੰਧਿਤ ਲੇਖਕਾਂ ਕੇ ਅਪਨੇ ਹਨ। ਪੰਜਾਬ ਏਣਡ ਸਿੰਘ ਬੈਂਕ ਕਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦੇ ਸਹਮਤ ਹੋਨਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਸਾਮਗ੍ਰੀ ਕੀ ਮੌਲਿਕ ਏਵਾਂ ਕੌਂਪੀਅਟ ਅਧਿਕਾਰਾਂ ਕੇ ਪ੍ਰਤਿ ਭੀ ਲੇਖਕ ਸ਼ਵਯਾਂ ਉਤਰਦਾਵੀ ਹਨ।

ਮੁਦ्रਕ : ਬੀ.ਏ.ਮ. ਑ਫਸੈਟ ਪ੍ਰਿੰਟਰਸ

ਏਚ-37, ਸੇਕਟਰ 63, ਨੋਏਡਾ, ਉਤਰ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ - 201301

ਫੋਨ ਨੰ. : 0120 4111952, 9811068514

ਈ-ਮੈਲ: bmoffsetprinters@gmail.com

ਵਿ਷ਯ-ਸੂਚੀ

| ਕ੍ਰ. ਸਾਂ. | ਵਿਵਰਣ | ਪ੃ਛ ਸਾਂ. |
|-----------|--|----------|
| 1 | ਸਾਂਪਾਦਕ ਮੰਡਲ/ਵਿ਷ਯ-ਸੂਚੀ | 1 |
| 2 | ਆਪਕੀ ਕਲਮ ਸੇ | 2 |
| 3 | ਸਾਂਪਾਦਕੀਯ | 3 |
| 4 | ਕ੃ਤ੍ਰਿਮ ਬੁਦ਼ਿਸਤਾ- ਪਟਿਚਾਈ ਏਵਾਂ ਸੰਭਾਵਨਾਏਂ | 4-7 |
| 5 | ਬੈਂਕਿੰਗ ਕਾ ਡਿਜਿਟਲ ਰੂਪਾਂਤਰਣ | 8-11 |
| 6 | ਸੰਸਦੀਯ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਸਮਿਤਿ ਕਾ ਜਧਪੁਰ ਦੌਰਾ | 12-13 |
| 7 | ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਮੈਂ ਆਨੇ ਵਾਲੀ ਸਮਸਥਾਏਂ | 14-16 |
| 8 | ਗ੍ਰਾਹਕ ਕੇ ਮੁੱਖ ਸੇ | 17 |
| 9 | ਜਨਮਨਮਈ ਸੁਭਦ੍ਰਾ | 18-19 |
| 10 | ਆਲੋਚਨ ਏਵਾਂ ਸਾਕਾਂ ਤੇ ਸਮਿਤਿ ਕਾ ਕੋਲਕਾਤਾ ਦੌਰਾ | 20 |
| 11 | ਦਿੱਲੀ ਬੈਂਕ ਨਰਾਕਾਸ਼ ਮੈਂ ਹਮਾਰਾ ਬੈਂਕ | 21 |
| 12 | ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਾਰਾਲਿਆ ਮੈਂ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ ਵਿਤਰਣ ਸਮਾਰੋਹ-2023 | 22-23 |
| 13 | ਸਾਖ ਸੂਚਨਾ ਕਾਂਪਨੀਆਂ | 24-27 |
| 14 | ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਤਪਲਿਖਿਆਂ | 28 |
| 15 | ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਸਾਂਗੋਢੀ | 29 |
| 16 | ਕਾਵਿ ਮੰਜੂਸ਼ਾ | 30-31 |
| 17 | ਹਿੰਦੀ ਕਾਰਘਕਾਲਾਏਂ | 32-33 |
| 18 | ਭਵਿਤਵ ਕੀ ਬੈਂਕਿੰਗ | 34-37 |
| 19 | ਨਵੀਂ ਸ਼ਾਖਾਓਂ ਕਾ ਸ਼ੁਮਾਰਿਂ | 38-39 |
| 20 | ਕਹਾਨੀ-ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਕੀ ਕੀਮਤ | 40 |
| 21 | ਜ਼ਰਾ ਸੋਚਿਏ! | 41 |
| 22 | ਕ੃ਤ੍ਰਿਮ ਬੁਦ਼ਿਸਤਾ ਔਰ ਮਾਨਵ ਜੀਵਨ | 42-44 |



आपकी कलम से.....

बैंक की हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' के नवीनतम अंक की प्रति प्राप्त हुई, बहुत-बहुत धन्यवाद! संपादकीय में बिल्कुल सही कहा गया है कि भाषा केवल अभिव्यक्ति या संचार का पाठ्यम नहीं है वरन् यह हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। श्री यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी के लेख 'भारत की राजभाषा में लिपि विमर्श' में लिपियों के विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से भारत की लिपियों का बड़ी ही सुंदरता से वर्णन किया गया है। 'राजभाषा हिंदी और अमृत महोत्सव' नामक संस्मरण में श्री राहुल सावंत ने राजभाषा हिंदी के वास्तविकता को धरातल पर उतारने का सुंदर प्रयास किया है।

श्री वीरेन्द्र कुमार यादव का 'डिजिटलीकरण और हिंदी', श्री राहुल रंजन का 'प्रशासनिक हिंदी के प्रमुख अभिलक्षण' और पत्रिका के अन्य लेख भी अच्छे व जानकारीप्रकार लगे। काव्य मंजूषा में भी एक से एक उत्कृष्ट कविताएं पढ़ने को मिली। पत्रिका में प्रकाशित लेखन सामग्री के चयन तथा मनमोहक साज-सज्जा के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। आपके सार्थक प्रयासों की सराहना के साथ पत्रिका के आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

-सुधीश वाजपेयी
आंचलिक प्रबंधक, जयपुर

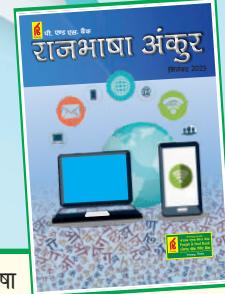
अंकुर का सितंबर, 2023 अंक प्राप्त हुआ। हिंदी को राजभाषा के रूप में चुने जाने के 73 वर्ष पूरे हो चुके हैं और इन वर्षों में तकनीक में आमूल-चूल परिवर्तन हुए हैं और इन्हीं परिवर्तन के अनुरूप राजभाषा ने भी समय-समय पर अपने को ढालने का भरपूर प्रयास किया है। पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने भी सभी दौरों में तकनीक का अच्छी तरह से प्रयोग किया है। अंकुर के नियमित प्रकाशन से जहाँ बैंक की राजभाषा संबंधी गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है वहीं तत्संबंधी महत्वपूर्ण आलेख राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रशिक्षण भी प्रदान करते हैं।

पत्रिका का संपादकीय पृष्ठ कार्मिकों को प्रेरित करता है। यतीन्द्रनाथ चतुर्वेदी का आलेख 'लिपि विमर्श' संग्रहणीय है। राहुल रंजन का लेख 'प्रशासनिक हिंदी के प्रमुख अभिलक्षण', वीरेन्द्र कुमार यादव का लेख 'डिजिटलीकरण और हिंदी' नई जानकारियां देते हैं। वी. एस. मिश्रा के लेख 'कपोल भाति' में शब्दों का सटीक प्रयोग, व्यंग्य को सार्थक दिशा प्रदान करता है। उनके लेख की गति से पाठक अपने आपको अलग नहीं रख पाता। पत्रिका के सभी लेख, कविताएं और चित्र, पाठक को बांधे रख पाने में सक्षम हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि मुद्रण और उत्तम कागज के प्रयोग से पत्रिका का स्तर काफी अच्छा बन पड़ा है। पत्रिका के संपादन से जुड़ी पूरी टीम को बधाई।

-पवन कुमार जैन
सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

राजभाषा अंकुर का सितंबर-2023 का अंक हमें प्राप्त हुआ। अंक में संकलित विषय-वस्तु काफी रुचिकर है। कहते हैं कि सभी योग्य पत्रिका का संपादकीय उस पुस्तक या पत्रिका का प्रतीक्षित होता है जो एक सारगमित एवं उत्तम सदेश देता है। इस अंक का संपादकीय लेख हमें राजभाषा हिंदी संबंधी जानकारी देता है। इस अंक में प्रकाशित लेख राजभाषा 'हिंदी और अमृत महोत्सव', 'डिजिटलीकरण और हिंदी' काफी ज्ञानवर्धक लगे। आशा एवं विश्वास है कि भविष्य में आने वाले सभी अंक उत्तम से उत्कृष्ट की ओर उत्तरोत्तर प्रगति करेगा।

संपादक मंडल को देहरादून अंचल की ओर से असीम शुभकामनाएं!



आप द्वारा प्रेषित बैंक की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का सितंबर 2023 अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका के सारगमित संकलन, कुशल संपादन, गुणवत्ता सम्पन्न प्रकाशन के लिए संपादक मंडल अभिनन्दनीय है। पत्रिका में बैंक की विभिन्न योजनाएं, गतिविधियां, वित्तीय- बैंकिंग आखेयों के साथ यह अंक रुचिकर, ज्ञानवर्धक और लोकोपयोगी है।

राजभाषा यज्ञ के अनुष्ठान में अपने नियमित हवाय्य में क्रमबद्ध राजभाषा अंकुर, पंजाब एण्ड सिंध बैंक की हिंदी सेवा का एक गाड़ा हस्ताक्षर है। स्थायी की हर बूद से पनपे अक्षर जीवन की जटिलता की ड्यूडी डांक कर जनसेवा के विश्वार्गांव में आकार ले रहे हैं। सभी सारगमित आलेख अपनी अपनी शैली में भारत की सम्प्रभुता का रोचक प्रसंग बन गये हैं। भारत जब चप्पे - चप्पे पर अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है ऐसे इतिहास के मौलिक क्षणों में पंजाब एण्ड सिंध बैंक अपनी इतिहासगाथा की एक श्रृंखला यदि तैयार कर सके तो वर्तमान द्वारा भविष्य को एक सुदृढ़ विरासत का निवेश होगा। जनमानस अपने अपने शुभ-लाभ पा कर खुशहाल होगा।

आप सभी का प्रयास अद्भुत है। परस्पर सामंजस्य इस पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ पर अंकित है। संपादक मंडल को साधुवाद काशी के गढ़ना तट से।

-यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी
कबीर नगर, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी, उत्तर प्रदेश -221005,
सदस्य : संयुक्त हिन्दी सलाहकार समिति, केंद्रीय वित्त मंत्रालय (राजस्व),
भारत सरकार

आपके बैंक की हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का सितंबर-2023 का अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद! सर्वप्रथम राजभाषा अंकुर के जून-2023 अंक का संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति के माननीय सदस्यों के कर कमलों से विमोचन हेतु हार्दिक बधाई एवं अभिनन्दन। पत्रिका की विषय-वस्तु हिंदी के प्रागामी प्रयोग को बढ़ावा देने की दृष्टि से अत्यंत प्रभावी है। अंक में सभिल लेख 'भारत की राजभाषा में लिपि विमर्श', 'राजभाषा हिंदी और आजादी का अमृत महोत्सव', 'प्रशासनिक हिंदी के प्रमुख अभिलक्षण' जैसे लेख जहाँ एक और राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं वहीं दूसरी ओर 'डिजिटलीकरण और हिंदी', जैसे लेख सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में हिंदी की बहुआयामी भूमिका को दर्शात है। 'हिंदी गैरवशाली भाषा', 'संसार देखा है?' जैसी बोधगम्य और अर्थपूर्ण कविताएं भी सहज ही ध्यान आकर्षित करती हैं।

समग्रत: विषय-वस्तु के चयन की उत्कृष्टता और कलात्मक संपादन ने इस अंक को पठनीय के साथ ही साथ संग्रहणीय भी बना दिया है। इस संग्रहणीय अंक के लिए पूरी संपादकीय टीम बधाई की पात्र है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

- अब्दुल अज़ीज
प्रबंधक (राजभाषा)
आईडीबीआई बैंक लिमिटेड, पंजीकृत कार्यालय मुंबई

-हनुमान राम टाक
आंचलिक प्रबंधक, देहरादून



સંપાદકીય



સુધી પાઠકગણ,

વર્તમાન સમય મેં તકનીક કી બહુલતા કે કારણ હમારે ડૈનિક જીવન મેં અનેક બદલાવ દૃષ્ટિગોચર હુએ હૈને ઔર યહ બદલાવ જીવન કે સખી ચરણો મેં સ્પષ્ટતા સે દેખે જા સકતે હૈને। સાહિત્ય, સમાજ, સંસ્કૃતિ તથા ભૌતિકતાવાદ કે નાએ-નાએ સ્વરૂપ ઉભરકર સામને આ રહે હૈને। માનવ ઇતિહાસ મેં દો મહત્વપૂર્ણ પરિવર્તનોં કો વિશેષ રૂપ સે ચિહ્નિત કિયા જા સકતા હૈ, પ્રથમ વહ સમય જબ માનવ ને શિકાર છોડકર પશુપાલન એવં કૃષિ કા પેશા અપનાયા ઔર દૂસરા વહ જબ આધુનિક યુગ મેં મનુષ્ય ને કૃષિ છોડકર વ્યવસાય કો પ્રધાનતા દી। અદ્વારહવીં શતાબ્દી કે ઉત્તરાર્ધ ઔર ઉન્નીસવીં શતાબ્દી કે પૂર્વાર્ધ મેં ઔદ્યોગિક ક્રાંતિ કા પદાર્પણ હુઆ તથા ઉસકે પશ્ચાત ક્રમશઃ વિભિન્ન ક્રાંતિયોં કા ઉદ્ભબ હુઆ।

ઉન્નીસવીં શતાબ્દી કે અત્યિમ વર્ષો મેં સુચના યા દૂરસંચાર ક્રાંતિ કા આગમન હુઆ જિસે ડિજિટલ ક્રાંતિ કે રૂપ મેં ભી જાના જાતા હૈ, ઇસમેં ન કેવળ નવાચાર બલ્લિક ઉનકે અનુપ્રયોગ ઔર પ્રસાર ભી શામિલ થે। અભી હમ ઇસસે અનભિજ્ઞ હૈને કિ ડિજિટલ ક્રાંતિ અપને ચરમોત્કર્ષ પર પહુંચી હૈ અથવા નહીં। આદ્યોગિક ક્રાંતિ મેં માનવ શ્રમ કા સ્થાન મશીનોં ને લે લિયા થા જબકિ ડિજિટલ ક્રાંતિ મેં માનવ બુદ્ધિ કા સ્થાન કૃત્રિમ બુદ્ધિમત્તા ને લે લિયા હૈ। વિચાર-વિમર્શ, નિષ્કર્ષ, સોચને-સમજને, પરિકલ્પના કરને કી જિસ ક્ષમતા પર કેવળ માનવ-માસ્ટિષ્ક કા એકાધિકાર થા અબ ઉસે કૃત્રિમ બુદ્ધિમત્તા સે ચુનૌતી મિલ રહી હૈ।

અત્યાધુનિક પ્રોદ્યોગિકિયોં કે ઉપયોગ કે કારણ બૈંકિંગ ઉદ્યોગ મેં અભૂતપૂર્વ પ્રગતિ દેખી ગઈ હૈ। મોબાઇલ બૈંકિંગ, ઈ-બૈંકિંગ ઔર તત્કાલ રાશિ અંતરણ સેવાએ પ્રદાન કરને કે ઉદ્દેશ્ય સે બૈંકિંગ ઉદ્યોગ, સુચના પ્રોદ્યોગિકી ઔર દૂરસંચાર કો સમાવિષ્ટ કરને કે લિએ અપને ઔદ્યોગિક પરિદૃશ્ય કા વિસ્તાર કર રહે હૈને। ગ્રાહકોં કો અતિરિક્ત સેવાઓં ઔર ઉત્પાદોં કે વિષય મેં જાગરૂક કરને કે લિએ બૈંક, ચૈટબોંટ્સ કા ઉપયોગ કર રહે હૈને, ધોખાધડી કા પતા લગાને કે લિએ એઆઈ-એમએલ કા ક્રિયાન્વયન કિયા જા રહા હૈ। કુલ મિલાકર વ્યવસાય ક્ષેત્ર મેં કૃત્રિમ બુદ્ધિમત્તા કા સમન્વય, વ્યવસાયિક લક્ષ્ય કી પ્રાપ્તિ ઔર ગ્રાહક-સેવા કો સુગમ બના રહા હૈ।

પત્રિકા કે ઇસ અંક મેં કૃત્રિમ બુદ્ધિમત્તા કે સાથ-સાથ વિભિન્ન વિષયોં કે લેખ, કવિતાઓં તથા બૈંકિંગ ગતિવિધિયોં સે સંબંધિત છાયાચિત્રોં કો પ્રકાશિત કિયા ગયા હૈ। હમારે લિએ અત્યંત ગર્વ કા વિષય હૈકિ બૈંક કે પૂર્વ અધ્યક્ષ એવં પ્રબંધ નિદેશક ઔર બહુમુખી પ્રતિભા કે ધની સરદાર આર. પી. સિંહ (આઈ. એ.એસ.) જી કી ચાર ગ્રાન્લ પત્રિકા કે ઇસ અંક મેં પ્રકાશિત હૈને। સેવાનિવૃત્ત વરિષ્ઠ અધિકારીયોં કા સાનિધ્ય નિશ્ચિત તૌર પર બૈંક કે મૂલ કો સુદૃઢ કરતા હૈ। પત્રિકા કે ઇસ અંક કે લિએ આપકે સ્નેહિલ પ્રતિક્રિયાઓં કી અપેક્ષા રહેગી।

શુભકામનાઓં સહિત!

(ગજરાજ દેવી સિંહ ઠાકુર)
મહાપ્રબંધક સહ મુખ્ય રાજભાષા અધિકારી



नितिल शर्मा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता - परिवय एवं संभावनाएं

मानव और अन्य जंतुओं द्वारा प्रदर्शित प्राकृतिक बुद्धि के विपरीत मशीनों द्वारा प्रदर्शित बुद्धि को कृत्रिम बुद्धिमत्ता कहा जा सकता है। जब कोई मशीन इंसानों की “संज्ञानात्मक” कार्यों की नकल करती है तो उसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता कहा जाता है। एंड्रियास कपलान और माइकल हेनलेन कृत्रिम बुद्धिमत्ता को “किसी प्रणाली के बाद्य डेटा को सही ढंग से व्याख्या करने, ऐसे डेटा से सीखने और सुविधाजनक रूपांतरण के माध्यम से विशिष्ट लक्ष्यों और कार्यों को पूरा करने में उन सीखों का उपयोग करने की क्षमता” के रूप में परिभाषित करते हैं। यह कार्य “सीखने” और “समस्या निवारण” के साथ जोड़ती है। मानव सोचने-विश्लेषण करने व याद रखने का काम भी अपने दिमाग के स्थान पर यंत्र कंप्यूटर से कराना चाहता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विशिष्ट अनुप्रयोगों में विशेषज्ञ प्रणाली, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, वाक् पहचान और मशीन विजन शामिल हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इतिहास

बुद्धि संपन्न निर्जीव वस्तुओं की अवधारणा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। सदियों से, अरस्तू से लेकर 13 वीं सदी के स्पेनिश धर्मशास्त्री रेमन लुल्ल, रेने डेसकार्टेस और थॉमस बेयस विचारकों ने मानव विचार प्रक्रियाओं को प्रतीकों के रूप में वर्णित करने के लिए अपने समय के उपकरणों और तर्कों का उपयोग किया तथा सामान्य ज्ञान प्रतिनिधित्व जैसी कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अवधारणाओं की नींव रखी।

19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के पूर्वार्ध में मूलभूत आविष्कार सामने आया जिसने आधुनिक कंप्यूटर को जन्म दिया। वर्ष 1836 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के गणितज्ञ चार्ल्स बैबेज और ऑगस्टा एडा किंग, काउटेस ऑफ लवलेस ने प्रोग्राम करने के लिए पहली डिजाइन का आविष्कार किया।

1940 का दशक – प्रिंसटन के गणितज्ञ जॉन वॉन न्यूमैन ने संग्रहीत-प्रोग्राम कंप्यूटर की कल्पना की कि कंप्यूटर का प्रोग्राम और उसके द्वारा संसाधित डेटा को कंप्यूटर की मेमोरी में रखा जा सकता है तथा वॉरेन मैकुलोच और वाल्टर पिट्स ने न्यूरल नेटवर्क की नींव रखी।

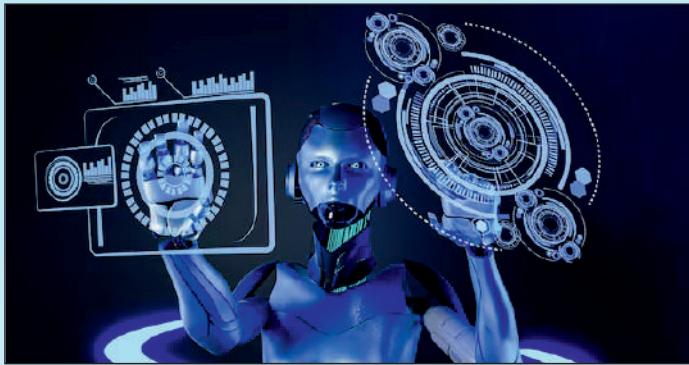
1950 का दशक – आधुनिक कंप्यूटर के आगमन के साथ, वैज्ञानिक मशीन इंटेलिजेंस के बारे में अपने विचारों का परीक्षण कर सकते हैं। ब्रिटिश गणितज्ञ और द्वितीय विश्व युद्ध के कोड-ब्रेकर एलन ट्यूरिंग द्वारा यह निर्धारित करने की विधि कि कंप्यूटर में बुद्धिमत्ता है या नहीं तैयार की गई थी। ट्यूरिंग परीक्षण ने पूछताछकर्ताओं को यह विश्वास दिलाने में कंप्यूटर की क्षमता पर ध्यान केंद्रित किया कि उनके सवालों के जवाब एक इंसान द्वारा दिए गए थे।



वर्ष 1956 – कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आधुनिक क्षेत्र का व्यापक रूप से उल्लेख इस वर्ष डार्टमाउथ कॉलेज में एक ग्रीष्मकालीन सम्मेलन के दौरान शुरू होने के रूप में किया गया है। डिफेंस एडवांस रिसर्च प्रोजेक्ट्स एजेंसी (डीआरपीए) द्वारा प्रायोजित इस सम्मेलन में संबंधित क्षेत्रों के 10 दिग्गजों ने भाग लिया, जिनमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता अग्रणी मार्विन मिंस्की, ओलिवर सेल्फिज और जॉन मैक्कार्थी शामिल थे, जिन्हें कृत्रिम बुद्धिमत्ता शब्द को गढ़ने का श्रेय दिया जाता है। इसके अलावा एलन नेवेल (कंप्यूटर वैज्ञानिक) और हर्बर्ट ए. साइमन (अर्थशास्त्री, राजनीतिक वैज्ञानिक और संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक) भी उपस्थित थे। दोनों ने अपनी अभूतपूर्व अर्थपूर्ण परिकल्पना प्रस्तुत की, कंप्यूटर प्रोग्राम जो कुछ गणितीय सवालों को सिद्ध करने में सक्षम है और इसे पहला कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रोग्राम कहा जाता है।

1950 और 1960 का दशक – 1950 के दशक के अंत में, नेवेल और साइमन ने जनरल प्रॉब्लम सॉल्वर (जीपीएस) एल्गोरिदम प्रकाशित की, जो जटिल समस्याओं को हल करने में विफल रहा परंतु इसके लिए उसने नींव का काम किया। मैक्कार्थी ने Lisp का विकास किया, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रोग्रामिंग के लिए एक भाषा है जिसका उपयोग आज भी किया जाता है। 1960 के दशक के मध्य में, MIT के प्रोफेसर जोसेफ वेइजेनबाम ने ELIZA का विकास किया किया, जो एक प्रारंभिक एनएलपी कार्यक्रम था जिसने आज के चैबॉट्स की नींव रखी।

1970 और 1980 का दशक – कंप्यूटर प्रसंस्करण और मेमोरी में सीमाओं और समस्या की जटिलता के कारण कई बाधाएं उत्पन्न हुईं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता समर्थकों द्वारा अनुसंधान में सहयोग न करने के कारण वर्ष 1974 से 1980 तक की अवधि को पहली “कृत्रिम बुद्धिमत्ता विंटर” के रूप में जाना जाता है। 1980 के दशक में, गहन शिक्षण तकनीकों पर शोध और उद्योग द्वारा एडवर्ड फेनेनबाम की विशेषज्ञ प्रणालियों को अपनाने से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनुसंधानकर्ताओं में उत्साह की एक नई लहर को जन्म दिया।



1990 का दशक – कंप्यूटर शक्ति में वृद्धि और डेटा के विस्तार ने 1990 के दशक के अंत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता पुनर्जागरण को जन्म दिया जिसने कृत्रिम बुद्धिमत्ता में उल्लेखनीय प्रगति के लिए एक मंच तैयार किया जिसे हम आज देखते हैं। बड़े डेटा और बढ़ी हुई कंप्यूटर शक्ति के संयोजन ने एनएलपी, कंप्यूटर विजन, रोबोटिक्स, मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग में प्रगति को प्रेरित किया। वर्ष 1997 में जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रगति तेज हुई, आईबीएम के डीप ब्यू ने रूसी शतरंज ग्रैंडमास्टर गैरी कास्परोव को हराया, जो विश्व शतरंज चौपियन को हराने वाला पहला कंप्यूटर प्रोग्राम बन गया।

2000 का दशक – मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, एनएलपी, स्पीच रिकॉर्डिंग और कंप्यूटर विजन में आगे की प्रगति ने ऐसे उत्पादों और सेवाओं को जन्म दिया, जिन्होंने आज हमारे जीने के तरीके को आकार दिया है। इनमें 2000 में गूगल सर्च इंजन के लॉन्च और 2001 में अमेज़ॅन के अनुशंसा इंजन की शुरुआत शामिल है। नेटफिल्म्स ने फ़िल्मों के लिए अपनी अनुशंसा प्रणाली विकसित की, फेसबुक ने अपनी चेहरे की पहचान प्रणाली पेश की और माइक्रोसॉफ्ट ने भाषण को पाठ में लिखने के लिए अपनी वाक् पहचान प्रणाली की शुरुआत की। आईबीएम ने वॉटसन लॉन्च किया और गूगल ने अपनी सेल्फ-ड्राइविंग पहल, वेमो शुरू की।

2010 का दशक – 2010 और 2020 के बीच के दशक में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास को एक स्थिर धारा के रूप में देखा गया। इनमें ऐप्पल के सिरी और अमेज़ॅन के एलेक्सा वॉयस असिस्टेंट का प्रारंभ शामिल है; स्व-चालित कारें, प्रथम जनरेटिव प्रतिकूल नेटवर्क का विकास, गूगल के ओपन सोर्स डीप लर्निंग फ्रेमवर्क, अनुसंधान प्रयोगशाला ओपन कृत्रिम बुद्धिमत्ता की स्थापना, जीपीटी-3 भाषा मॉडल, डैल-ई इमेज जनरेटर, गूगल डीप माइंड के एल्फागो द्वारा विश्व चौपियन ली सेडोल की हार और कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित प्रणालियों का कार्यान्वयन हुआ।

2020 – वर्तमान दशक में जेनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता का आगमन देखा गया है, जो एक प्रकार की कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक है जो नई सामग्री तैयार कर सकती है। जेनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक संकेत से शुरू होता है जो टेक्स्ट, चित्र, वीडियो, डिजाइन, संगीत नोट्स या किसी भी इनपुट के रूप में हो सकता है जिसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणाली संसाधित कर सकता है। विभिन्न कृत्रिम बुद्धिमत्ता एल्गोरिदम फिर संकेत के आधार पर परिणाम प्रदर्शित करती हैं। परिणाम में निबंध, समस्याओं का समाधान, या किसी व्यक्ति के चित्रों या ऑडियो से बनाई गई यथार्थवादी नकली सामग्री शामिल हो सकती है।

चेट जीपीटी-3, गूगल के बार्ड और माइक्रोसॉफ्ट के मेगेट्रॉन-ट्यूरिंग एनएलजी जैसे भाषा मॉडल की क्षमताओं ने दुनिया को आश्चर्यचित कर दिया है, लेकिन तकनीक अभी भी शुरूआती चरण में है।

- 2020 में Baidu ने सार्स कोविड महामारी के शुरुआती चरणों के दौरान वैक्सीन विकसित करने के लिए काम कर रही वैज्ञानिक और विकित्सा टीमों के लिए अपना लीनियरफोल्ड AI एल्गोरिदम जारी किया। एल्गोरिदम केवल 27 सेकंड में वायरस के आरएनए अनुक्रम की भविष्यवाणी करने में सक्षम है, जो अन्य तरीकों की तुलना में 120 गुना तेज है।
- ओपन एआई ने प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण मॉडल जीपीटी-3 जारी किया, जो लोगों के बोलने और लिखने के तरीके के आधार पर पाठ तैयार करने में सक्षम है।



- 2021–यूरोपीय संघ संसद एक नियामक ढांचे का प्रस्ताव करती है जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि यूरोपीय संघ के भीतर तैनात एआई सिस्टम “सुरक्षित, पारदर्शी, पता लगाने योग्य, गैर-भेदभावपूर्ण और पर्यावरण के अनुकूल” हैं।
- 2021 – OpenAI DALL-E विकसित करने के लिए GPT-3 पर आधारित है, जो टेक्स्ट प्रॉप्ट से छवियां बनाने में सक्षम है।
- 2022 – नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्टैंडर्ड्स एंड टेक्नोलॉजी ने अपने एआई जोखिम प्रबंधन ढांचे, स्वैच्छिक अमेरिकी मार्गदर्शन का पहला मसौदा “कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़े व्यक्तियों, संगठनों और समाज के लिए जोखिमों को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने के लिए” जारी किया है।
- 2022 – डीपमाइंड ने गेटो का अनावरण किया, जो एक एआई प्रणाली है जो सैकड़ों कार्यों को करने के लिए प्रशिक्षित है, जिसमें छवियों को कैषण देना और ब्लॉकों को एकत्रित करने के लिए रोबोटिक बांह का उपयोग
- 2022 – व्हाइट हाउस ने एआई के जिम्मेदार विकास और उपयोग के सिद्धांतों को रेखांकित करते हुए एक एआई बिल ऑफ राइट्स पेश किया।
- 2022 – ओपनएआई ने चौटजीपीटी लॉन्च किया जो एक बड़े भाषा मॉडल द्वारा संचालित एक चैटबॉट है जो कुछ ही महीनों में 100 मिलियन से अधिक उपयोगकर्ता प्राप्त करता है।



➤ 2023 - ਮਾਇਕ੍ਰੋਸੋਫਟ ਨੇ ਅਪਨੇ ਖੋਜ ਇੰਜਨ ਬਿੰਗ ਕਾ ਏਆਈ-ਸੰਚਾਲਿਤ ਸੰਕਰਣ ਲੱਚ ਕਿਯਾ, ਜੋ ਉਸੀ ਤਕਨੀਕ ਪਰ ਬਨਾਯਾ ਗਿਆ ਹੈ ਜੋ ਵੈਟ ਜੀਪੀਟੀ ਕੋ ਸ਼ਕਤਿ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਤਾ ਹੈ।

- ਗੂਗਲ ਨੇ ਏਕ ਪ੍ਰਤਿਸ਼ਥਾਈ ਸੰਵਾਦੀ ਏਆਈ ਬਾਰਡ ਕੀ ਧੋ਷ਣਾ ਕੀ।
- ਓਪਨ ਏਆਈ ਨੇ ਅਪਨਾ ਅਥ ਤਕ ਕਾ ਸ਼ਬਦ ਪਰਿ਷ਕ੍ਰਮਤ ਭਾਸ਼ਾ ਮ੉ਡਲ ਜੀਪੀਟੀ-4 ਲੱਚ ਕਿਯਾ।
- ਬਿਡੇਨ-ਹੈਰਿਸ ਪ੍ਰਸ਼ਾਸਨ ਸੁਰਕਿਤ ਔਰ ਭਰੋਸੇਮਦ ਏਆਈ ਪਰ ਕਾਰ੍ਯਕਾਰੀ ਆਦੇਸ਼ ਜਾਰੀ ਕਰਤਾ ਹੈ, ਜਿਸਮੇ ਸੁਰਕਾ ਪਰੀਕਸ਼ਣ, ਏਆਈ-ਜਨਿਤ ਸਾਮਗ੍ਰੀ ਕੀ ਲੇਬਲਿੰਗ ਔਰ ਏਆਈ ਕੇ ਵਿਕਾਸ ਔਰ ਉਪਯੋਗ ਕੇ ਲਿਏ ਅਨਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਮਾਨਕ ਬਨਾਨੇ ਕੇ ਪ੍ਰਯਾਸਾਂ ਕੋ ਬਢਾਨੇ ਕਾ ਆਵਹਾਨ ਕਿਯਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਆਦੇਸ਼ ਯਹ ਸੁਨਿਸ਼ਚਿਤ ਕਰਨੇ ਕੇ ਮਹਤਵ ਪਰ ਭੀ ਜੋਕ ਦੇਤਾ ਹੈ ਕਿ ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਕਾ ਉਪਯੋਗ ਗੋਪਨੀਯਤਾ ਸੁਰਕਾ ਕੋ ਦਰਕਿਨਾਰ ਕਰਨੇ, ਬੇਦਭਾਵ ਕੋ ਬਢਾਨੇ ਯਾ ਨਾਗਰਿਕ ਅਧਿਕਾਰੀਂ ਯਾ ਉਪਭੋਕਾਂ ਕੋ ਅਧਿਕਾਰੀਂ ਕਾ ਉਲਲੰਘਨ ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਨਹੀਂ ਕਿਯਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਕੇ ਪ੍ਰਕਾਰ :

ਮਿਸ਼ਨ ਸਟੇਟ ਯੂਨਿਵਰਸਿਟੀ ਮੇਂ ਇੰਡੀਗ੍ਰੇਟਿਵ ਬਾਯੋਲੋਜੀ ਔਰ ਕਾਂਘੂਟਰ ਸਾਈੰਸ ਏਂਡ ਇੰਜੀਨੀਅਰਿੰਗ ਕੇ ਸਹਾਯਕ ਪ੍ਰੋਫੇਸਰ ਅਰੋੰਡ ਹਿੰਟ੍ਜ ਨੇ ਬਤਾਯਾ ਕਿ ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਕੋ ਚਾਰ ਪ੍ਰਕਾਰਾਂ ਮੇਂ ਵਰਗੀਕ੃ਤ ਕਿਯਾ ਜਾ ਸਕਤਾ ਹੈ ਜੋ ਆਜ ਵਾਧਕ ਰੂਪ ਸੇ ਉਪਯੋਗ ਮੇਂ ਆਨੇ ਵਾਲੇ ਕਾਰ੍ਯ-ਵਿਸ਼ਿ਷ਟ ਬੁਦ਼ਿਮਾਨ ਪ੍ਰਣਾਲੀਂ ਸੇ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਤੇ ਹਨ ਔਰ ਸੱਵੇਦਨਸ਼ੀਲ ਪ੍ਰਣਾਲੀਂ ਕੀ ਓਰ ਬਢਾਤੇ ਹਨ, ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਕੇ ਪ੍ਰਕਾਰ ਨਿਨ ਹਨ -

(i) ਪ੍ਰਤਿਕਿਯਾਸੀਲ ਮਸੀਨੈਂ - ਇਨ ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਮੇਂ ਕੋਈ ਮੇਮੋਰੀ ਨਹੀਂ ਹੋਤੀ ਔਰ ਯੇ ਕਾਰ੍ਯ- ਵਿਸ਼ਿ਷ਟ ਹੋਤੇ ਹਨ। ਉਦਾਹਰਣ ਕੇ ਲਿਏ ਆਈਬੀਐਮ ਸ਼ਤਰੰਜ ਪ੍ਰੋਗ੍ਰਾਮ ਡੀਪ ਬ੍ਲੂ ਹੈ ਜਿਸਨੇ 1990 ਕੇ ਦਸ਼ਕ ਮੇਂ ਗੈਰੀ ਕਾਸਪਰੋਵ ਕੋ ਹਰਾਯਾ ਥਾ। ਡੀਪ ਬ੍ਲੂ ਸ਼ਤਰੰਜ ਕੀ ਬਿਸਾਤ ਪਰ ਮੋਹਰੋਂ ਕੀ ਪਹਚਾਨ ਕਰ ਸਕਤਾ ਹੈ ਔਰ ਭਵਿ਷ਵਾਣੀ ਕਰ ਸਕਤਾ ਹੈ, ਲੇਕਿਨ ਕਿਥੋਕਿ ਉਸਕੇ ਪਾਸ ਕੋਈ ਸ੍ਮ੃ਤਿ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਇਸਲਿਏ ਵਹ ਭਵਿ਷ਾਂ ਕੇ ਮੋਹਰੋਂ ਕੋ ਚਲਾਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਪਿਛਲੇ ਅਨੁਭਵਾਂ ਕਾ ਉਪਯੋਗ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਤਾ ਹੈ।

(ii) ਸੀਮਿਤ ਮੇਮੋਰੀ - ਇਨ ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਮੇਂ ਮੇਮੋਰੀ ਹੋਤੀ ਹੈ, ਇਸਲਿਏ ਵੇ ਭਵਿ਷ਾਂ ਕੇ ਨਿਰਧਾਰਤ ਲੇਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਪਿਛਲੇ ਅਨੁਭਵਾਂ ਕਾ ਉਪਯੋਗ ਕਰ ਸਕਤੇ ਹਨ। ਸੇਲਫ-ਡ੍ਰਾਇਵਿੰਗ ਕਾਰਾਂ ਮੇਂ ਨਿਰਧਾਰਤ ਲੇਨੇ ਕੇ ਕੁਝ ਕਾਰ੍ਯ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਡਿਜਾਇਨ ਕਿਏ ਗਏ ਹਨ।

(iii) ਮਨ ਕਾ ਸਿੰਘਾਂਤ - ਯਹ ਏਕ ਮਨੋਵਿਜਾਨ ਸ਼ਬਦ ਹੈ। ਜਵ ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਪਰ ਲਾਗੂ ਕਿਯਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਇਸਕਾ ਮਤਲਬ ਹੈ ਕਿ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਮੇਂ ਭਾਵਨਾਓਂ ਕੇ ਸਮਝਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਸਾਮਾਜਿਕ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਹੋਣੀ। ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਮਾਨਵ ਇਰਾਦਾਂ ਕਾ ਅਨੁਮਾਨ ਲਗਾਨੇ ਔਰ ਵਾਹਾਰ ਕੀ ਭਵਿ਷ਵਾਣੀ ਕਰਨੇ ਮੇਂ ਸਕਲ ਹੋਣਾ, ਮਾਨਵ ਟੀਮਾਂ ਕੇ ਅਭਿਨਵ ਸਦਸ਼ ਬਨਾਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਕੇ ਲਿਏ ਏਕ ਆਵਥਕ ਕੌਸ਼ਲ ਹੈ।

(iv) ਆਤਮ-ਜਾਗਰੂਕਤਾ - ਇਸ ਥ੍ਰੋਣੀ ਮੇਂ ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਮੇਂ ਸ਼ਵਾਂ ਕੀ ਭਾਵਨਾ ਹੋਣੀ ਹੈ ਜੋ ਉਨ੍ਹਾਂ ਚੇਤਨਾ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਤੀ ਹੈ। ਆਤਮ-ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਵਾਲੀ ਮਸੀਨੈਂ ਅਪਨੀ ਵਰਤਮਾਨ ਸਥਿਤੀ ਕੋ ਸਮਝਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ

ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਕੈਂਸੇ ਕਾਮ ਕਰਤਾ ਹੈ?

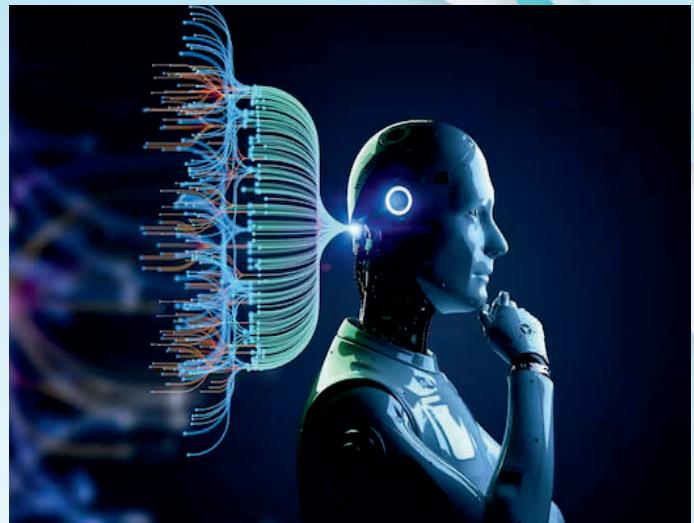
ਅਕਸਰ, ਜਿਸੇ ਹਮ ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਕੇ ਰੂਪ ਮੇਂ ਸ਼ਵਾਂ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਵਹ ਕੇਵਲ ਪ੍ਰੋਗ੍ਰਾਮਿਕੀ ਕਾ ਏਕ ਘਟਕ ਹੈ, ਜੈਂਦੇ ਮਸੀਨ ਲਰਨਿੰਗ। ਮਸੀਨ ਲਰਨਿੰਗ ਏਲਪੋਰਿਦਮ ਕੋ ਲਿਖਨੇ ਔਰ ਪ੍ਰਸ਼ਕਿਤ ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਕੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਹਾਰਡਵੈਰ ਔਰ ਸੋਫਟਵੈਰ ਕੀ ਆਵਥਕਤਾ ਹੋਣੀ ਹੈ। ਕੋਈ ਭੀ ਪ੍ਰੋਗ੍ਰਾਮਿੰਗ ਭਾਸ਼ਾ ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਕਾ ਪਾਰਥ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਲੇਕਿਨ Python, R, Java, C++, Lisp, Prolog ਔਰ Julia ਮੇਂ ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਵਿਕਾਸਕਤਾਓਂ ਕੇ ਬੀਚ ਲੋਕਪ੍ਰਿਯ ਭਾਸ਼ਾਏਂ ਹਨ।

ਸਾਮਾਨ੍ਯ ਤੌਰ ਪਰ, ਕ੃ਤਿਮ ਬੁਦ਼ਿਮਤਾ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਬਡੀ ਮਾਤ੍ਰਾ ਮੇਂ ਪ੍ਰਸ਼ਕਿਤ ਡੇਟਾ ਕੋ ਗ੍ਰਹਣ ਕਰਕੇ, ਸਹਸੰਬਂਧੋਂ ਔਰ ਢਾਂਚਾ ਕੀ ਆਧਾਰ ਪਰ ਡੇਟਾ ਕੋ ਵਿਸ਼ਲੇ਷ਣ ਕਰਕੇ ਔਰ ਭਵਿ਷ਾਂ ਕੇ ਸਥਿਤੀਓਂ ਕੇ ਬਾਰੇ ਮੇਂ ਭਵਿ਷ਵਾਣੀਆਂ ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਇਨ ਢਾਂਚਾ ਕਾ ਉਪਯੋਗ ਕਰਕੇ ਕਾਮ ਕਰਤੇ ਹਨ। ਇਸ ਤਰਫ, ਏਕ ਚੈਟਬੋਟ ਜਿਸਮੇ ਉਦਾਹਰਣ ਦਿਏ ਗਏ ਹਨ, ਵਹ ਲੋਗਾਂ ਕੇ ਸਾਥ ਜੀਵਕਾਂ ਆਦਾਨ-ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਨਾ ਸੀਖ ਸਕਤਾ ਹੈ ਯਾ ਏਕ ਛਾਡੀ ਪਹਚਾਨ ਉਪਕਰਣ ਲਾਖਾਂ ਉਦਾਹਰਣਾਂ ਕੀ ਸਮੀਕਾ ਕਰਕੇ ਛਾਵਿਆਂ ਮੇਂ ਵਸਤੂਆਂ ਕੀ ਪਹਚਾਨ ਕਰਨਾ ਔਰ ਉਨਕਾ ਵਰਣ ਕਰਨਾ ਸੀਖ ਸਕਤਾ ਹੈ।



कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रोग्रामिंग संज्ञानात्मक कौशल पर केंद्रित है जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- सीखना** - कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रोग्रामिंग का यह पहलू डेटा प्राप्त करने और इसे कार्रवाई योग्य जानकारी में बदलने के लिए नियम बनाने पर केंद्रित है। नियम, जिन्हें एल्गोरिदम कहा जाता है, कंप्यूटर उपकरणों को किसी विशिष्ट कार्य को पूरा करने के लिए चरण-दर-चरण निर्देश प्रदान करते हैं।
- तर्क** - कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रोग्रामिंग का यह पहलू वांछित परिणाम तक पहुंचने के लिए सही एल्गोरिदम चुनने पर केंद्रित है। अन्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकों का उपयोग करता है।
- स्वयं सुधार** - कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रोग्रामिंग का यह पहलू एल्गोरिदम को लगातार बेहतर बनाने और यह सुनिश्चित करने के लिए डिजाइन किया गया है कि वे यथा संभव सटीक परिणाम प्रदान करें।
- रचनात्मकता** - कृत्रिम बुद्धिमत्ता का यह पहलू नई इमेज, नया पाठ, नया संगीत और नए विचार उत्पन्न करने के लिए न्यूरल नेटवर्क, नियम-आधारित प्रणाली, सांख्यिकीय तरीकों और अन्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकों का उपयोग करता है।



मशीन लर्निंग सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों को स्पष्ट रूप से प्रोग्राम किए बिना परिणामों की भविष्यवाणी करने में अधिक सटीक बनाने में सक्षम बनाता है। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम नए आउटपुट मूल्यों की भविष्यवाणी करने के लिए इनपुट के रूप में ऐतिहासिक डेटा का उपयोग करते हैं। प्रशिक्षण के लिए बड़े डेटा सेटों के साथ यह दृष्टिकोण काफी अधिक प्रभावी हो गया है। डीप लर्निंग, मशीन लर्निंग का एक उपसमूह, मस्तिष्क की संरचना कैसे होती है, इसकी हमारी समझ पर आधारित है। कृत्रिम न्यूरल नेटवर्क संरचना का गहन शिक्षण का उपयोग कृत्रिम बुद्धिमत्ता में हाल की प्रगति का आधार है, जिसमें सेल्फ-ड्राइविंग कारें और चैट जीपीटी शामिल हैं।

निष्कर्षतः: कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रोग्राम एक ऐसा प्रोग्राम है जो सीखने और सोचने में सक्षम है। किसी भी चीज को कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानना संभव है यदि इसमें कई ऐसा कार्य करने वाला प्रोग्राम शामिल हो जिसे हम आम तौर पर मानते हैं कि कार्य केवल एक इंसान द्वारा ही किया जाएगा। जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कई फायदे हैं, वहीं कुछ कमियां भी हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभों में कार्य स्वचालन के माध्यम से दक्षता, सूचित निर्णयों के लिए डेटा विश्लेषण, चिकित्सा निदान में सहायता और स्वायत्त वाहनों की उन्नति शामिल हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की कमियों में नौकरी में विस्थापन, पूर्वाग्रह और गोपनीयता के बारे में नैतिक विचारण, हैंकिंग से सुरक्षा जोखिम, मानव जैसी रचनात्मकता और सहानुभूति की कमी शामिल है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधुनिक जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है, जो वैश्विक स्तर पर उद्योगों, अर्थव्यवस्थाओं और समाजों को प्रभावित कर रहा है। जैसे-जैसे हम भविष्य में आगे बढ़ रहे हैं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का जिम्मेदार विकास और तैनाती व्यापक भलाई के लिए इसकी क्षमता का दोहन करने के लिए महत्वपूर्ण होगी। हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता नवाचार और प्रगति के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बना रहे, जो मानवता के लिए एक उज्ज्वल और अधिक बुद्धिमान भविष्य को आकार दे।



कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग के बीच अंतर :

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग आईटी में सामान्य शब्द हैं और कभी-कभी इन्हें परस्पर उपयोग किया जाता है, खासकर कंपनियों द्वारा अपनी विपणन सामग्रियों में इनका उपयोग किया जाता है लेकिन इनमें बहुत अंतर हैं। 1950 के दशक में गढ़ा गया कृत्रिम बुद्धिमत्ता शब्द मशीनों द्वारा मानव बुद्धि के अनुकरण को संदर्भित करता है। इसमें नई तकनीकों के विकसित होने के साथ-साथ क्षमताओं के निरंतर बदलते सेट को शामिल किया गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अंतर्गत आने वाली तकनीकों में मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग शामिल हैं।

-मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग, नई दिल्ली



ਅਮਿਤ ਮੋਹਨ ਅਰੋਰਾ

ਬੈਂਕਿੰਗ ਕਾ ਡਿਜਿਟਲ ਰੂਪਾਂਤਰण

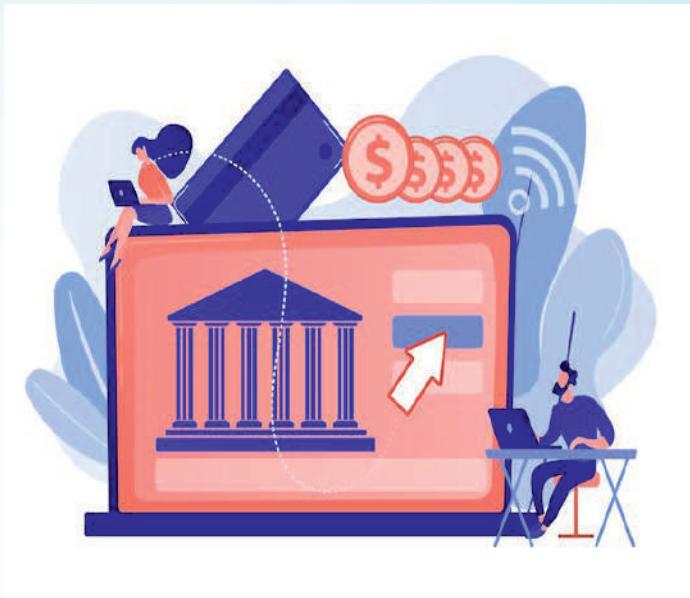
ਆਜ ਵਿਸ਼ਵ ਕਾ ਸ਼ਾਯਦ ਹੀ ਕੋਈ ਇੱਸਾਨ ਹੋਗਾ ਜਿਸਕੀ ਕੋਈ ਡਿਜਿਟਲ ਪਹਚਾਨ ਨਹੀਂ ਹੋਗੀ। ਕਿਸੀ ਨ ਕਿਸੀ ਤਰੀਕੇ ਸੇ ਆਜ ਹਮ ਸਭੀ ਇਸ ਡਿਜਿਟਲ ਵਰਲਡ ਕਾ ਹਿੱਸਾ ਬਨ ਚੁਕੇ ਹਨ। ਸੰਚਾਰ ਕ੍ਰਾਂਤਿ ਕੇ ਦੌਰ ਮੈਂ ਵਾਪਾਰ ਕੇ ਤਰੀਕੋਂ ਮੈਂ ਆਮੂਲਚੂਲ ਪਰਿਵਰਤਨ ਹੁਆ ਹੈ। ਬੈਂਕਿੰਗ ਕੇ ਢਾਰਾ ਭੀ ਇਸਕਾ ਉਪਯੋਗ ਵਾਪਾਰ ਬਢਾਨੇ ਔਰ ਨਾਲ ਉਤ्पਾਦ ਪ੍ਰਸ਼ੁਤ ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਕਿਧਾ ਜਾ ਰਹਾ ਹੈ। ਇਸਨੇ ਬੈਂਕਿੰਗ-ਕਾਰ੍ਯ ਕੋ ਹੀ ਆਸਾਨ ਨਹੀਂ ਬਨਾਯਾ ਅਧਿਤੁ ਗ੍ਰਾਹਕ-ਸੇਵਾ ਕੋ ਭੀ ਨਾਲ ਆਧਾ ਉਪਲਬਧ ਕਰਾਏ ਹੈਂ। ਬੈਂਕ, ਇਕ ਡਿਜਿਟਲ-ਫਰਾਂਸਟ ਦੁਨੀਆ ਮੈਂ ਅਪਨੇ ਸੰਚਾਲਨ ਪਰ ਪੂਰੀ ਗਤਿ ਸੇ ਕਾਰ੍ਯ ਕਰ ਰਹੇ ਹੈਂ। ਆਜ ਵੇਂਹੀ ਸੰਸਥਾਨ ਸਫਲ ਹੋਂਗੇ ਜੋ ਗ੍ਰਾਹਕਿਆਂ ਕੀ ਜ਼ਰੂਰਤਾਂ ਕੋ ਡਿਜਿਟਲ ਉਤਪਾਦਾਂ ਕੇ ਮਾਧਿਮ ਸੇ ਢਾਲੋਂਗੇ। ਹਾਲ ਕੇ ਵਰ਷ੋਂ ਮੈਂ ਬੈਂਕਿੰਗ-ਉਦਯੋਗ ਮੈਂ ਯਹ ਏਕ ਮਹਤਵਪੂਰ੍ਣ ਪਰਿਵਰਤਨ ਆਇਆ ਹੈ। ਡਿਜਿਟਲ ਤਕਨੀਕ ਕੇ ਆਗਮਨ ਕੇ ਸਾਥ, ਬੈਂਕ ਅਪਨੇ ਸੰਚਾਲਨ ਕੇ ਤਰੀਕੇ ਮੈਂ ਕ੍ਰਾਂਤਿ ਲਾਨੇ ਮੈਂ ਸਕਖਮ ਹੋ ਗਏ ਹਨ ਜਿਸਦੇ ਗ੍ਰਾਹਕਿਆਂ ਕੇ ਲਿਏ ਸੇਵਾਓਂ ਤਕ ਪਹੁੰਚ ਬਨਾਨਾ ਔਰ ਲੇਨਦੇਨ ਕਰਨਾ ਆਸਾਨ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਡਿਜਿਟਲ ਤਕਨੀਕ ਕੇ ਇਸਤੇਮਾਲ ਸੇ ਨ ਕੇਵਲ ਬੈਂਕਿੰਗ ਮੈਂ ਲਾਗਤ-ਬਚਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਬਲਕਿ ਗ੍ਰਾਹਕਿਆਂ ਕੇ ਅਨੁਭਵ ਮੈਂ ਭੀ ਸੁਧਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਬੈਂਕਿੰਗ ਮੈਂ ਡਿਜਿਟਲ ਰੂਪਾਂਤਰਣ ਕਾ ਅਭਿਨਾਵ ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਤ੍ਰਿਤ : ਡਿਜਿਟਲ ਰੂਪਾਂਤਰਣ, ਤਕਨੀਕ ਕੇ ਉਪਯੋਗ ਕਰਨੇ ਕੀ ਵੀ ਪ੍ਰਕਿਧਾ ਹੈ ਜੋ ਕਿਸੀ ਸੱਗਠਨ ਕੇ ਸੰਚਾਲਨ ਔਰ ਗ੍ਰਾਹਕਿਆਂ ਕੋ ਮੂਲ੍ਯ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਨੇ ਕੇ ਤਰੀਕੇ ਕੋ ਮੌਲਿਕ ਰੂਪ ਸੇ ਬਦਲ ਦੇਤਾ ਹੈ। ਇਸ ਪ੍ਰਕਿਧਾ ਮੈਂ ਵਾਪਾਰ ਮੌਡਲ, ਪ੍ਰਕਿਧਾਓਂ ਔਰ ਤਕਨੀਕਾਂ ਪਰ ਪੁਨਰਵਿਚਾਰ ਕਰਨਾ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੈ। ਬੈਂਕਿੰਗ ਕੇ ਸੰਦਰਭ ਮੈਂ, ਡਿਜਿਟਲ ਰੂਪਾਂਤਰਣ ਕੇ ਅਤੰਗੀਤ ਸੰਚਾਲਨ ਕੋ ਸੁਵਿਵਸਥਿਤ ਕਰਨਾ, ਗ੍ਰਾਹਕ ਅਨੁਭਵ ਮੈਂ ਸੁਧਾਰ ਔਰ ਲਾਗਤ ਕਮ ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਪ੍ਰੈਦੀਗਿਕੀ ਕਾ ਉਪਯੋਗ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੈ।

ਡਿਜਿਟਲ ਪਰਿਵਰਤਨ ਕਾ ਬੈਂਕਿੰਗ ਉਦਯੋਗ ਪਰ ਗਹਰਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪੜ ਰਹਾ ਹੈ। ਗ੍ਰਾਹਕਿਆਂ ਕੋ ਸੇਵਾਏਂ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਬੈਂਕਿੰਗ ਨੇ ਪਾਰਾਂਪਰਿਕ ਰੂਪ ਸੇ ਭੌਤਿਕ ਸ਼ਾਖਾਓਂ ਪਰ ਭਰੋਸਾ ਕਿਧਾ ਹੈ। ਅਥ ਡਿਜਿਟਲ ਪ੍ਰੈਦੀਗਿਕੀ ਕੇ ਉਦਦ ਨੇ ਗ੍ਰਾਹਕਿਆਂ ਕੀ ਭੌਤਿਕ ਸ਼ਾਖਾਓਂ ਮੈਂ ਜਾਨੇ ਕੀ ਆਵਥਕਤਾ ਕੋ ਕਮ ਕਰਕੇ ਬੈਂਕਿੰਗ ਕੋ ਅੱਨਲਾਇਨ ਸੇਵਾਓਂ ਕੀ ਏਕ ਸ਼੍ਰੁਖਲਾ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਨੇ ਮੈਂ ਸਕਖਮ ਬਨਾਯਾ ਹੈ। ਇਸਦੇ ਗ੍ਰਾਹਕਿਆਂ ਕੇ ਲਿਏ ਬੈਂਕਿੰਗ ਸੇਵਾਓਂ ਤਕ ਪਹੁੰਚ ਆਸਾਨ ਹੁੰਦੀ ਔਰ 365 X 24 ਬੈਂਕਿੰਗ ਸੇਵਾ ਉਪਲਬਧ ਹੋ ਸਕੀ ਹੈ, ਸਾਥ ਹੀ ਬੈਂਕਿੰਗ ਕੇ ਲਿਏ ਮਹਤਵਪੂਰ੍ਣ ਲਾਗਤ ਬਚਤ ਭੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਡਿਜਿਟਲ ਰੂਪਾਂਤਰਣ ਨੇ ਬੈਂਕਿੰਗ ਕੋ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ ਪ੍ਰਮੁਖ ਤਰੀਕੋਂ ਮੈਂ ਸੇ ਏਕ ਮੋਬਾਇਲ ਬੈਂਕਿੰਗ ਕੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਕੀ ਹੈ। ਵਰਤਮਾਨ ਮੈਂ ਲਾਗਭਗ ਹਰ ਹਾਥ ਮੈਂ ਮੋਬਾਇਲ ਫੋਨ ਹੈ, ਇਸਨੇ ਬੈਂਕਿੰਗ ਕੋ ਗ੍ਰਾਹਕਿਆਂ ਕੇ ਲਾਗਭਗ ਹਰ ਹਾਥ ਮੈਂ ਮੋਬਾਇਲ ਉਪਕਰਣਾਂ ਕੋ ਉਪਯੋਗ ਕਰਨਾ ਆਸਾਨ ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਮੋਬਾਇਲ ਬੈਂਕਿੰਗ ਸੇਵਾਓਂ ਕੋ ਉਪਯੋਗ ਕਰਨਾ ਆਸਾਨ ਬਨਾਯਾ ਹੈ ਅਤੇ ਗ੍ਰਾਹਕਿਆਂ ਕੋ ਸਟਾਫ ਕੀ ਆਵਥਕਤਾ ਕੋ ਭੀ ਕਮ ਕਰ ਦਿਯਾ ਹੈ ਜਿਸਦੇ ਬੈਂਕਿੰਗ ਕੋ ਲਿਏ ਮਹਤਵਪੂਰ੍ਣ ਸੰਚਾਲਨ ਲਾਗਤ ਮੈਂ ਬਚਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਬੈਂਕਿੰਗ ਕੋ ਡਿਜਿਟਲ ਰੂਪਾਂਤਰਣ ਨੇ ਨਈ ਭੁਗਤਾਨ ਤਕਨੀਕਾਂ ਕੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਕੀ ਹੈ, ਜੈਸੇ ਸੰਪਰਕ ਰਹਿਤ ਭੁਗਤਾਨ ਔਰ ਮੋਬਾਇਲ ਭੁਗਤਾਨ। ਇਨ ਤਕਨੀਕਾਂ ਨੇ ਧੋਖਾਧਿੱਤੀ ਕੇ ਜੋਖਿਮ ਕੋ ਕਮ ਕਰਤੇ ਹੋਏ ਗ੍ਰਾਹਕਿਆਂ ਕੇ ਲਿਏ ਭੁਗਤਾਨ ਪ੍ਰਕਿਧਾ ਕੋ ਬਹੁਤ ਆਸਾਨ ਬਨਾ ਦਿਯਾ ਹੈ। ਸੰਪਰਕ ਰਹਿਤ ਭੁਗਤਾਨ, ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਰੂਪ ਸੇ ਹਾਲ ਕੇ ਵਰ਷ੋਂ ਮੈਂ ਤੇਜ਼ੀ ਸੇ ਲੋਕਪ੍ਰਿਯ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਕਈ ਬੈਂਕ ਅਥ ਅਪਨੇ ਗ੍ਰਾਹਕਿਆਂ ਕੋ ਸੰਪਰਕ ਰਹਿਤ ਭੁਗਤਾਨ ਕਾਰਡ ਕੀ ਪੇਸ਼ਕਾਸ਼ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ।



ਪਿਛਲੇ ਕੁਛ ਵਰ਷ੋਂ ਮੈਂ ਭਾਰਤ ਕੇ ਡਿਜਿਟਲ ਋ਣ ਬਾਜ਼ਾਰ ਮੈਂ ਮਹਤਵਪੂਰ੍ਣ ਵ੃ਦਧਿ ਦੇਖੀ ਗਈ ਹੈ। ਵਿਤ ਵਰ਷ 2015 ਮੈਂ ਜੋ ਡਿਜਿਟਲ ਋ਣ ਮੂਲ੍ਯ 33 ਅਰਬ ਅਮੇਰਿਕੀ ਡਾਲਰ ਥਾ, ਉਸਕਾ ਵਿਤ ਵਰ਷ 2030 ਤਕ 13 ਖਰਬ ਅਮੇਰਿਕੀ ਡਾਲਰ ਤਕ ਪਹੁੰਚਨੇ ਕੀ ਉਮੀਦ ਹੈ। ਇਸਦੇ ਪ੍ਰਮਾਣੀਕਰਣ ਔਰ ਕ੍ਰੇਡਿਟ ਮੂਲਾਂਕਨ ਕੇ ਲਿਏ ਪ੍ਰੈਦੀਗਿਕੀ ਕੋ ਲਾਭ ਉਠਾਕਰ ਵੇਖ ਪਲੇਟਫਾਰਮ ਯਾ ਮੋਬਾਇਲ ਏਪ ਕੇ ਮਾਧਿਮ ਸੇ ਉਧਾਰ ਦੇਨਾ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੈ। ਕ੍ਰੇਡਿਟ ਕਾਰਡ ਬਹੁਤ ਪਹਲੇ ਸੇ ਹੀ ਡਿਜਿਟਲ ਋ਣ ਕੀ ਅਵਧਾਰਣਾ ਕਾ ਝੰਡਾਬਰਦਾਰ ਰਹਾ ਹੈ, ਕ੍ਰਮਸ਼: ਸ਼ਿਕਸ਼ਾ ਋ਣ ਔਰ ਫਿਰ 59 ਮਿਨਿਟ ਋ਣ ਔਰ ਅਥ ਪੂਰ੍ਬ-ਸ਼ੀਕੂਤ ਋ਣਾਂ ਦੀਆਂ ਬੈਂਕਿੰਗ ਕੋ ਲਾਗਤਾਰ ਨਿਆ ਆਧਾ ਦਿਯਾ ਜਾ ਰਹਾ ਹੈ। ਇਨਕਾ ਕੇਂਦ੍ਰੀਕੂਤ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਕਰਣ ਵ ਸੀਵੀਕੂਤ ਹੋਨੇ ਸੇ ਸ਼ਾਖਾ ਸ਼ਤਰ ਪਰ ਕਾਰ੍ਯਦਰਵਾਵ ਭੀ ਕਮ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਵਰਤਮਾਨ ਮੈਂ ਸਭੀ ਬੈਂਕ ਨਿਤ ਨਾਲ ਡਿਜਿਟਲ ਋ਣ ਉਤਾਦ ਪ੍ਰਸ਼ੁਤ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ ਫਿਰ ਭੀ ਮਾਂਗ ਔਰ ਆਪੂਰਤੀ ਮੈਂ ਅਤੰਗ ਬਨਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਏਕ ਅਨ੍ਯ ਤਰੀਕਾ ਜਹਾਂ ਡਿਜਿਟਲ ਰੂਪਾਂਤਰਣ ਨੇ ਬੈਂਕਿੰਗ ਕੋ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਿਧਾ ਹੈ, ਡੇਟਾ ਏਨਾਲਿਟਿਕਸ ਹੈ। ਬੈਂਕ ਅਥ ਗ੍ਰਾਹਕ ਵਿਵਹਾਰ ਪਰ ਬਡੀ ਮਾਤਰਾ ਮੈਂ ਡੇਟਾ ਏਕਤ ਕਰਨੇ ਮੈਂ ਸਕਖਮ ਹਨ ਔਰ ਇਸ ਡੇਟਾ ਕੋ ਉਪਯੋਗ ਅਪਨੇ ਨਿਰਣ ਲੇਨੇ ਕੀ ਸੂਚਨਾ ਦੇਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਕਰਤੇ ਹਨ।

इससे ग्राहकों की जखरतों के अनुसूच व्यक्तिगत उत्पादों और सेवाओं का विकास हुआ है। धोखाधड़ी का पता लगाने और जोखिम प्रबंधन में सुधार के लिए भी डेटा एनालिटिक्स का उपयोग किया जा रहा है।

ग्राहक अनुभव पर डिजिटल रूपांतरण का प्रभाव : बैंकिंग में ग्राहक अनुभव पर डिजिटल रूपांतरण ने महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। ग्राहक अब मोबाइल उपकरणों और सोशल मीडिया चैनलों के माध्यम से ॲनलाइन बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करने में सक्षम हैं। इससे ग्राहकों के लिए सेवाओं का उपयोग करना आसान हो गया है व शाखाओं में जाने से जुड़े समय और लागत में कमी आई है।

डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग से व्यक्तिगत उत्पादों और सेवाओं का विकास भी हुआ है। बैंक अब ग्राहकों के व्यवहार और वरीयताओं में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर रहे हैं और इस जानकारी का उपयोग अनुसूच-उत्पादों और सेवाओं की पेशकश करने के लिए हो रहा है। ग्राहक-प्रोफाइल और ग्राहक-सेगमेंट द्वारा ग्राहकों को और अधिक व्यक्तिगत ग्राहक-अनुभव प्रदान किया जा रहा है। बेहतर सफलता-दर के लिए ग्राहक-प्रोफाइल के अनुसार मार्केटिंग-पहल करना संभव हुआ है और इस प्रकार ग्राहकों को उनके बैंकों द्वारा यह महसूस कराया जा सका है कि वो बैंक के लिए कितने अधिक मूल्यवान हैं।

कार्मिकों पर डिजिटल रूपांतरण का प्रभाव : बैंकिंग में कार्यबल पर डिजिटल रूपांतरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। जैसे-जैसे बैंक डिजिटल चैनलों में चले गए हैं, वैसे-वैसे भौतिक शाखाओं और कर्मचारियों की आवश्यकता में कमी आई है। डिजिटल कौशल पर बढ़ते जोर के कारण बैंकिंग कर्मचारियों की कौशल-आवश्यकता में भी बदलाव आया है।

ऑटोमेशन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की शुरूआत ने बैंकिंग में कार्मिकों को भी प्रभावित किया है। स्वचालन का उपयोग, प्रक्रियाओं को कारगर बनाने और मानवीय हस्तक्षेप की आवश्यकता को कम करने के लिए किया जा रहा है। धोखाधड़ी का पता लगाने और जोखिम प्रबंधन में सुधार करने के लिए एआई का उपयोग हो रहा है। साथ ही ग्राहकों को व्यक्तिगत उत्पाद अनुशंसा भी इसी के द्वारा प्रदान की जाने लगी हैं।

बैंकिंग में डिजिटल रूपांतरण के लाभ : बैंकिंग में डिजिटल रूपांतरण के महत्वपूर्ण लाभों में से कुछ निम्नलिखित हैं –

(1) **बेहतर ग्राहक अनुभव :** बैंकिंग में डिजिटल रूपांतरण के सबसे महत्वपूर्ण लाभों में से एक बेहतर ग्राहक अनुभव है जो ग्राहकों को किसी भी शाखा की

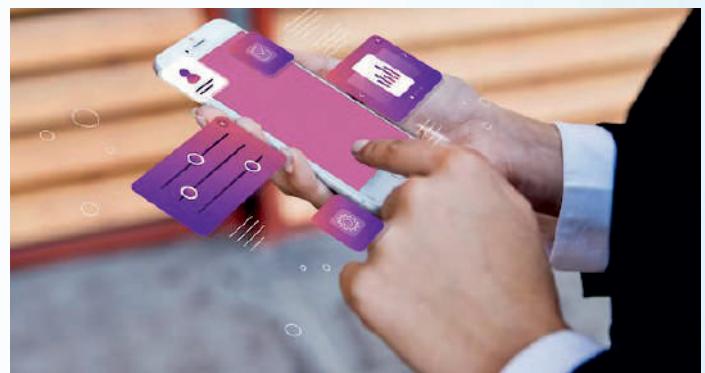
आवश्यकता के बिना कहीं से भी किसी भी समय बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करने की अनुमति देते हैं। इस सुविधा के कारण ग्राहकों की संतुष्टि और निष्ठा बढ़ी है।

(2) **दक्षता में वृद्धि :** डिजिटल रूपांतरण ने बैंकों को अपनी कई हस्तचालित प्रक्रियाओं को स्वचालित करने में सक्षम बनाया है जिसके परिणामस्वरूप दक्षता और लागत-बचत में वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए ॲनलाइन बैंकिंग ने ग्राहकों को अपने कई बैंकिंग लेन-देन स्वयं करने में सक्षम बनाया है जिससे बैंक कर्मचारियों पर कार्य-बोझ कम हो गया है।

(3) **डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि :** डिजिटल रूपांतरण ने बैंकों को अपने ग्राहकों के व्यवहार, प्राथमिकताओं और जखरतों के बारे में बड़ी मात्रा में डेटा एकत्र करने और उनका विश्लेषण करने में सक्षम बनाया है। इस डेटा का उपयोग ग्राहकों को वैयक्तिकृत सेवाएं और उत्पाद प्रदान करने तथा जोखिम प्रबंधन और धोखाधड़ी का पता लगाने व उनमें सुधार करने के लिए किया जा रहा है।

(4) **नई राजस्व धाराएं :** डिजिटल रूपांतरण ने बैंकों के लिए राजस्व के नए रास्ते खोल दिए हैं। बैंक अब अपने डिजिटल चैनलों के माध्यम से ग्राहकों को निवेश-सलाह, बीमा-उत्पाद और निष्ठा- कार्यक्रम जैसी मूल्यवर्धित सेवाओं की पेशकश कर रहे हैं।

(5) **बेहतर जोखिम प्रबंधन :** डिजिटल रूपांतरण ने बैंकों को ग्राहक व्यवहार और लेन-देन पर रीयल-टाइम डेटा प्रदान करके अपने जोखिम प्रबंधन प्रथाओं में सुधार करने में सक्षम बनाया है। इस डेटा का उपयोग कपटपूर्ण लेन-देन का पता लगाने और उसे रोकने और उनके गंभीर समस्या बनने से पहले संभावित जोखिमों की पहचान करने के लिए किया जा सकता है। इससे धनशोधन और लेन-देन की राउंड-ट्रिपिंग की निगरानी की जा सकती है, जैसा कि कई बैंकों के केंद्रीकृत ॲनलाइन लेनदेन निगरानी तंत्र (Centralized Online Transaction Monitoring System) द्वारा किया जा रहा है।



(6) **लागत में कमी :** डिजिटल रूपांतरण ने बैंकों को अपनी कई मैन्युअल प्रक्रियाओं को स्वचालित कर, भौतिक शाखाओं की आवश्यकता को कम किया है जिससे वे अपनी लागत को कम करने में सक्षम हुए हैं। इसके परिणामस्वरूप बैंकों की कार्यकृतालता और लाभ में वृद्धि हुई है, जिसे कम शुल्क और बेहतर दरों के रूप में ग्राहकों पर साझा किया जा सकता है।

बैंकिंग में डिजिटल रूपांतरण की चुनौतियाँ और जोखिम : जबकि डिजिटल रूपांतरण बैंकिंग उद्योग को कई लाभ प्रदान कर रहा है, यह अपनी चुनौतियों और जोखिमों के साथ आया है। बैंकिंग में डिजिटल परिवर्तन से जुड़ी कुछ प्रमुख चुनौतियाँ और जोखिम इस प्रकार हैं -

(1) **साइबर सुरक्षा जोखिम :** जैसे-जैसे बैंक डिजिटल तकनीक पर अधिक निर्भर होते जाएंगे, वे साइबर हमलों के प्रति और संवेदनशील हो जाएंगे। साइबर हमले के परिणामस्वरूप ग्राहक डेटा की चोरी, वित्तीय जोखिम और बैंक की प्रतिष्ठा को नुकसान हो सकता है। बैंकों को इन जोखिमों को कम करने के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों में निवेश करने की आवश्यकता है।

(2) **विनियामक अनुपालन :** बैंकिंग उद्योग अब अधिक डिजिटल हो रहा है। नियामक ग्राहकों के वित्तीय डेटा की संरक्षा और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए नए नियम और विनियम पेश कर रहे हैं। बैंकों को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि वे इन विनियमों का अनुपालन करें। बैंकों के लिए यह एक जटिल और समय लेने वाली प्रक्रिया हो सकती है।

(3) **डिजिटल कार्यकुशलता अंतर (स्किल गैप) :** जैसे-जैसे बैंक, डिजिटल चैनलों की ओर बदलते हैं उन्हें इन वैनलों को संचालित करने और बनाए रखने के लिए आवश्यक डिजिटल-कौशल वाले कर्मचारियों की आवश्यकता होती है। बैंकों को यह सुनिश्चित करने के लिए प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रमों में निवेश करने की आवश्यकता है कि उनके कर्मचारियों के पास डिजिटल युग में सफल होने के लिए आवश्यक डिजिटल कौशल हो।

(4) **डेटा गोपनीयता और प्रामाणिकता :** चूंकि बैंक ग्राहकों को व्यक्तिगत सेवाएं प्रदान करने के लिए अधिक डेटा समेकन व उपयोग करते हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि वे एक जिम्मेदार और नैतिक तरीके से ऐसा करें। उनके सर्वर को अपने डेटा संग्रह और उपयोग के बारे में सुनिश्चित करना होगा कि वो ग्राहक गोपनीयता की रक्षा के प्रति सजग हैं।

(5) **ग्राहक साक्षरता (वित्तीय व डिजिटल) :** अभी भी कई ग्राहक जालसाजों के चंगुल में फंस रहे हैं, औटीपी साझा कर रहे हैं और सदेहास्पद लिंक पर क्लिक कर रहे हैं जिससे उन्हें आर्थिक हानि का सामना करना पड़ता है। हालांकि आरबीआई कई बैंकों के साथ ग्राहक जागरूकता के लिए अभियान चलाता है लेकिन इसे मजबूत करने और व्यापक रूप से प्रचारित करने की आवश्यकता है।

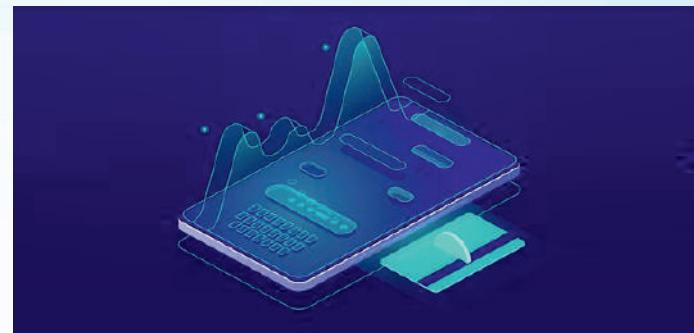
(6) **विरासत कार्य पद्धति :** विरासत प्रणाली, बैंकिंग में डिजिटल परिवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा है। कई बैंक अभी भी पुरानी प्रणालियों पर भरोसा करते हैं जो आधुनिक डिजिटल चैनलों के अनुकूल नहीं हैं। इन प्रणालियों का उन्नयन एक समय लेने वाली और महंगी प्रक्रिया है। डिजिटल परिवर्तन के भविष्य को आकार देने की संभावना रखते हैं।

(7) **परिवर्तन का प्रतिरोध :** डिजिटल रूपांतरण में परिवर्तन का प्रतिरोध एक महत्वपूर्ण चुनौती है। कर्मचारी नई डिजिटल तकनीकों के प्रतिरोधी हो सकते हैं, इससे डिजिटल रूपांतरण की गति धीमी होती है। बैंकिंग में डिजिटल रूपांतरण का भविष्य हमने अब तक जो देखा है उससे कहीं अधिक परिवर्तनकारी होने की उम्मीद है।

यहाँ कुछ रुझान हैं जो बैंकिंग में डिजिटल परिवर्तन के भविष्य को आकार देने की संभावना रखते हैं।

(i) **ब्लॉकचैन तकनीक :** ब्लॉकचैन प्रौद्योगिकी से बैंकिंग के भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। ब्लॉकचैन एक वितरित बही खाता तकनीक है जो विवैलियों की आवश्यकता के बिना सुरक्षित और पारदर्शी लेनदेन की अनुमति देती है। लेन-देन की लागत कम करने, सुधार और दक्षता बढ़ाने के लिए दुनिया में कई बैंक पहले से ही ब्लॉकचैन तकनीक का प्रयोग कर रहे हैं।

(ii) **कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन अधिगम:** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग से दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करके और ग्राहकों को व्यक्तिगत सेवाएं प्रदान कर बैंकिंग को बदलने की उम्मीद है। ग्राहक सेवा में सुधार और लागत कम करने के लिए बैंकों द्वारा एआई संचालित घेटबॉट्स का पहले से ही उपयोग किया जा रहा है। भविष्य में अधिक परिष्कृत धोखाधड़ी पहचान प्रणाली, जोखिम प्रबंधन के लिए एआई और मशीन लर्निंग का व्यापक उपयोग किए जाने की उम्मीद है।



(iii) **इंटरनेट ऑफ पिंग्स (IOT) :** इंटरनेट ऑफ पिंग्स, भौतिक उपकरणों को इंटरनेट से जोड़ने को संदर्भित करता है। भविष्य में आईओटी बैंकों को ग्राहकों के उपकरणों से डेटा एकत्र करने और व्यक्तिगत सेवाओं को प्रदान करने के लिए उस डेटा का उपयोग करने में सक्षम बनाकर बैंकिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। उदाहरण के लिए एक बैंक डेटा का उपयोग उन्हें उनके स्वास्थ्य और फिटनेस के स्तर के आधार पर वैयक्तिकृत बीमा उत्पादों की पेशकश करने के लिए कर सकता है।

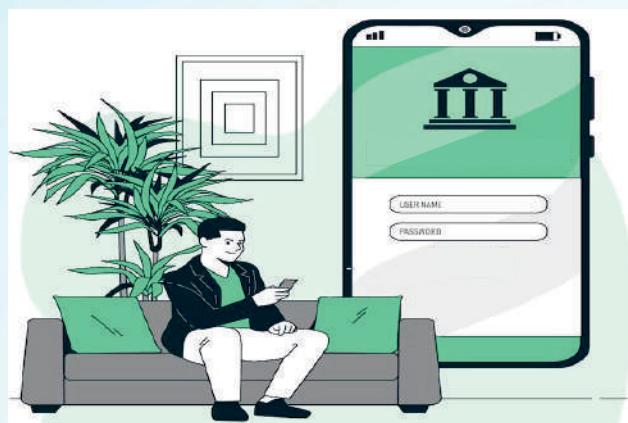
(iv) **ओपन बैंकिंग :** ओपन बैंकिंग एक नियामक पहल है जिसके लिए बैंकों को ओपन ए-पी-आई (API) के माध्यम से तीसरे पक्ष के प्रदाताओं के साथ ग्राहक डेटा साझा करने की आवश्यकता होती है। इस पहल से तीसरे पक्ष के प्रदाताओं को बैंक डेटा का लाभ उठाने वाली नई सेवाएं बनाने की अनुमति देकर बैंकिंग उद्योग में नवीनता लाने की उम्मीद है। उदाहरण के लिए, एक फिनेटेक कंपनी ग्राहक के लेनदेन डेटा का उपयोग उन्हें व्यक्तिगत निवेश सलाह देने के लिए कर सकती है।

(v) **क्लाउड कंप्यूटिंग :** यह भविष्य में बैंकों को प्रभावी तरीके से बड़ी मात्रा में डेटा को स्टोर और प्रोसेस करने की क्षमता प्रदान करके महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली है। क्लाउड-कंप्यूटिंग, हार्डवेयर और बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण अग्रिम निवेश की आवश्यकता के बिना बैंकों को अपने कार्यों को जल्दी और आसानी से बढ़ाने में सक्षम बनाता है।

(vi) **डिजिटल मुद्राएं** : ई-रुपए, एथेरियम, तिथर और लाइट-कॉइन जैसी डिजिटल मुद्राएं तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं। बैंक अपने प्रासाद में डिजिटल मुद्राओं को एकीकृत करने के तरीके तलाश रहे हैं, जैसे ग्राहकों को अपने बैंक खातों के माध्यम से डिजिटल मुद्राओं को खरीदने और बेचने की अनुमति देना।

(vii) **संवर्धित वास्तविकता** : संवर्धित वास्तविकता (AR-Augmented-reality) द्वारा ग्राहकों को एक व्यापक और इंटरैक्टिव बैंकिंग अनुभव प्रदान करके बैंकिंग के भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। उदाहरण के लिए एक ग्राहक अपने खर्च करने की आदतों और वित्तीय लक्ष्यों की कल्पना करने के लिए संवर्धित वास्तविकता का उपयोग कर सकता है।

(viii) **वॉयस-एक्टिवेटेड बैंकिंग** : वॉयस-एक्टिवेटेड बैंकिंग तेजी से लोकप्रिय हो रही है, अमेज़ॉन के एलेक्सा और गूगल-असिस्टेंट जैसे वर्चुअल असिस्टेंट को बैंकिंग एप में एकीकृत किया जा रहा है। ग्राहक अपने खाते की शेष राशि की जांच करने, निधि अंतरित करने और अन्य बैंकिंग कार्यों को करने के लिए अपनी आवाज का उपयोग कर सकते हैं।



कुल मिलाकर वर्तमान समय में बैंकों का डिजिटल रूपांतरण, बैंकिंग उद्योग को एक नया आकार दे रहा है और इसे अधिक कुशल, सुविधाजनक और वैयक्तिकृत बना रहा है। बैंकिंग में डिजिटल रूपांतरण और भी अधिक परिवर्तनकारी होने की उम्मीद है जिसमें ब्लॉकचेन, एआई और आईओटी जैसी नई प्रौद्योगिकियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। अगर संभावनाओं को देखें तो अभी तक भारत में 12 सरकारी क्षेत्र के बैंक, 46 विदेशी बैंक, 56 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, 1539 अर्बन कोपरेटिव बैंक, 96000 से अधिक ग्रामीण कोपरेटिव बैंक इत्यादि लगभग 2.55 लाख एटीएम के साथ कार्य कर रहे हैं और वर्तमान में डिजिटल ऋण लगभग 1.3 लाख करोड़ है जो कुल बैंकिंग ऋण का लगभग 1% है और इसमें शत-प्रतिशत खुदरा क्षेत्र में है। लगभग 50% जनसंख्या अभी भी बैंकिंग सेवाओं से नहीं जुड़ी है। हमारे पास मोबाइल अवसंरचना की पहुंच पहले से अधिक है। हमारे नियामक एवं सरकार मजबूत डिजिटल अर्थव्यवस्था के साथ खड़े हैं। हमारी स्टार्ट-अप, फिनटेक व एनबीएफसी सशक्त डिजिटल समाधान के साथ उपस्थित हैं जो बैंकों के डिजिटल रूपांतरण की सहायता के लिए अपार संभावनए रखते हैं। अत्यधिक सरलता, लागत-बचत और ऑनलाइन लेनदेन की गति के कारण भारतीय उपभोक्ता तेजी से ऑनलाइन सेवाओं को प्राथमिकता दे रहे हैं।

डिजिटल युग तेजी से बदल रहा है, बैंक अपने ग्राहकों के साथ भौतिक शाखाओं से परे जाकर बैंकिंग को ग्राहक-परक बना रहे हैं क्योंकि डिजिटल रूपांतरण बैंकों को प्रत्यक्ष-आय व व्यापार के लाभ का बड़ा हिस्सा प्रदान करने की क्षमता देता है, अतः इसको समयिक बनाना ही होगा। चूंकि सभी भारतीय बैंक अब एक डिजिटल क्रांति के कागर पर हैं इसलिए जबाबदेही के साथ डिजिटल रूपांतरण ही इस क्रांति की सफलता को सुनिश्चित कर सकता है। इस प्रकार, प्रत्येक बैंक को डिजिटल रूपांतरण की एक ऐसी आवार सहिता को सक्रिय रूप से विकसित और प्रतिबद्ध करना होगा जो प्रकटीकरण और शिकायत निवारण के स्पष्ट मानकों के साथ अखंडता, पारदर्शिता और उपभोक्ता संरक्षण के सिद्धांतों को रेखांकित करती हो। हालांकि कोई भी परिवर्तन अपने लाभ और हानि पक्ष के साथ उपस्थित होता है इसलिए बैंकों में डिजिटल रूपांतरण का उपयोग निष्ठापूर्ण सेवा और सुगम कार्य-पद्धति तक स्वीकार्य है।

—संकाय सदस्य
एसटीसी रोहिणी, नई दिल्ली

कार्टून कोना



प्रदीप रॉय
सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक

← ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਸਮਿਤੀ ਦੀ ਤੀਜੀ ਉਪ ਸਮਿਤੀ ਦੀ ਗੁਲਾਬੀ ਨਗਰੀ-ਯਾਹਿਰਾ ਵਿੱਚ ਮੁਹੱਲਾ ਕਾਨ੍ਤਾ ਕਾ ਫੇਰਾ →

ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਸਮਿਤੀ ਦੀ ਤੀਜੀ ਉਪ ਸਮਿਤੀ ਦੀ ਗੁਲਾਬੀ ਨਗਰੀ-ਯਾਹਿਰਾ ਵਿੱਚ ਮੁਹੱਲਾ ਕਾਨ੍ਤਾ ਕਾ ਫੇਰਾ ਵਿੱਚ ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਾਈਲਾਈ ਯਾਹਿਰਾ ਦੀ ਨਿਰੀਕ਷ਣ ਕਿਯਾ ਗਿਆ। ਨਿਰੀਕ਷ਣ ਬੈਠਕ ਮੌਜੂਦ ਸਾਡੀ ਕਾਰਾਈਲਾਈ ਯਾਹਿਰਾ ਦੀ ਨਿਰੀਕ਷ਣ ਪਰ ਵਿਸ਼ਾ ਦੇ ਚੰਗੇ ਗੱਲ ਕੀਤੇ ਗਏ। ਸਮਿਤੀ ਦੀ ਸਦਸ਼ੀ ਮੌਜੂਦ ਸਾਡੀ ਕਾਰਾਈਲਾਈ ਯਾਹਿਰਾ ਦੀ ਨਿਰੀਕ਷ਣ ਕਿਯਾ ਗਿਆ। ਸਮਿਤੀ ਦੀ ਸਦਸ਼ੀ ਮੌਜੂਦ ਸਾਡੀ ਕਾਰਾਈਲਾਈ ਯਾਹਿਰਾ ਦੀ ਨਿਰੀਕ਷ਣ ਕਿਯਾ ਗਿਆ।



ਨਿਰੀਕਣ ਕਾਰਘਕਮ ਮੌਕੇ ਵੱਡੇ ਕੀ ਓਰ ਸੇ ਮਹਾਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸਹ ਮੁਖ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਅਧਿਕਾਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਗਜਰਾਜ ਦੇਵੀ ਸਿੱਧ ਠਾਕੁਰ, ਆਂਚਲਿਕ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਜਧਪੁਰ ਸ਼੍ਰੀ ਸੁਧੀਸ਼ ਵਾਜਪੇਹੀ, ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਘਲਿਕ ਯਤਨ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਜਧਪੁਰ ਮੌਕੇ ਵੱਡੇ ਮੁਖ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਅਧਿਕਾਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਮਹੇਨਦ੍ਰ ਮੀਣਾ ਤਥਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਾਰਘਲਿਕ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ ਮੌਕੇ ਵੱਡੇ ਮੁਖ ਪ੍ਰਬੰਧਕ (ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ) ਸ਼੍ਰੀ ਨਿਖਿਲ ਸ਼ਰਮਾ ਉਪਸਥਿਤ ਰਹੇ।



ਨਿਰੀਕਣ ਬੈਠਕ ਪੱਛਮਾਂ ਸਹਿਯੋਗ ਕਰਕੇ ਕਮਲਾਂ ਦੇ ਮੁਖ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਅਧਿਕਾਰੀ ਪੰਜਾਬ ਏਂਡ ਸਿੱਧ ਬੈਂਕ ਦੀ ਹਿੱਤੀ ਪਤ੍ਰਿਕਾ "ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਅੰਕੁਰ" ਦੀ ਨਵੀਨਤਮ ਅੰਕ ਕਾ ਵਿਮੋਚਨ ਕਿਯਾ ਗਿਆ।



ਕ੍ਰੀ ਕੇ ਪੀ ਤਿਵਾਰੀ

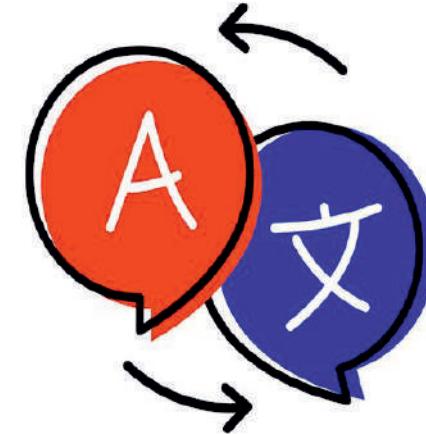
ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਮੌਂ ਆਨੇ ਵਾਲੀ ਸਮਸਥਾਏਂ - ਹਿੰਦੀ ਕੇ ਸੰਬੰਧ ਮੌਂ

ਬੈਂਕਿੰਗ ਵਿਵਸਾਯ ਮੌਂ ਅਨੁਵਾਦ ਆਰੰਭ ਸੋ ਹੀ ਹੋਤਾ ਰਹਾ ਹੈ। ਕਾਰ੍ਯ ਔਰ ਵਿਵਸਾਯ ਮੌਂ ਬਢ਼ੇਤਰੀ ਕੇ ਸਾਥ-ਸਾਥ ਬੈਂਕਿੰਗ ਸੋ ਸੰਬੰਧਿਤ ਪ੍ਰਲੇਖਾਂ ਮੌਂ ਭੀ ਬਢ਼ੇਤਰੀ ਹੋਤੀ ਗਿਆ ਹੈ। ਆਜ ਬੈਂਕਿੰਗ ਸਾਹਿਤ ਮੌਂ ਵਿਧਿ, ਕ੃ਤਿ, ਵਿਤ, ਚਿਕਿਤਸਾ, ਪ੍ਰਾਈਓਗਿਕੀ ਔਰ ਤਕਨੀਕੀ ਕ੍਷ੇਤਰਾਂ ਕੇ ਸ਼ਬਦ ਭੀ ਆ ਗਏ ਹਨ। ਬੈਂਕਿੰਗ ਮੌਂ ਆਨੇ ਵਾਲੇ ਇਸ ਸਾਹਿਤ ਕਾ ਸੁਜਨ ਮੂਲ ਰੂਪ ਸੋ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਮੌਂ ਹੁਆ ਤੋ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ ਭੀ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਕੀ ਹੀ ਆਈ। ਯਹਾਂ ਹਮ ਵਿਚਾਰ ਕਰੋਗੇ ਕਿ ਬੈਂਕਿੰਗ ਮੌਂ ਵਿਧਿ ਸੰਬੰਧੀ ਜੋ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰਨੇ ਹੋਤੇ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਆਨੇ ਵਾਲੀ ਸਮਸਥਾਓਂ ਕਾ ਕਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਸੇ ਨਿਵਾਰਣ ਕਿਯਾ ਜਾਏ।

ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਸਦਾ ਸੋ ਹੀ ਅਨੁਵਾਦਕਾਂ ਕੇ ਲਿਏ ਇਕ ਚੁਨੌਤੀਪੂਰ੍ਣ ਕਾਰ੍ਯ ਰਹਾ ਹੈ। ਯਹ ਅਨੁਵਾਦ ਚਾਹੇ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਸੋ ਹਿੰਦੀ ਮੌਂ ਕਰਨਾ ਹੋ ਯਾ ਫਿਰ ਹਿੰਦੀ ਸੋ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਮੌਂ। ਇਨ ਸਮਸਥਾਓਂ ਕੇ ਨਿਵਾਰਣ ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਸਥਾਨੀ ਅਨੁਵਾਦਕ ਕੁਛ ਨ ਕੁਛ ਰਣਨੀਤ ਬਨਾਤੇ ਹਨ। ਯਹ ਰਣਨੀਤ ਵਿਧਿਕ ਯਾ ਕਾਨੂੰਨੀ ਪ੍ਰਲੇਖ ਕੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੁਆ ਕਰਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੇ ਪ੍ਰਲੇਖਾਂ ਕੇ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰਨੇ ਮੌਂ ਕਹੀਂ ਪਰ ਗੂਗਲ, ਕਹੀਂ ਪਰ ਪਹਲੇ ਸੋ ਅਨੂਦਿਤ ਸਾਹਿਤ, ਕਹੀਂ ਅਪਨੇ ਸਾਥਿਯਾਂ ਤੋ ਕਹੀਂ ਮੂਲ ਲੇਖਕ ਸੋ ਸਹਾਯਤਾ ਲੇਕਰ ਕਾਰ੍ਯ ਕੋ ਪੂਰ੍ਣ ਕਰਨੇ ਕੀ ਰਣਨੀਤ ਅਨੁਵਾਦਕ ਬਨਾਤੇ ਹਨ। ਆਮਤੌਰ ਪਰ ਜੋ ਵਿਧਿਕ ਪ੍ਰਲੇਖ ਹੋਤੇ ਹਨ ਵੇ ਮੁਖਤਤਾ ਨਿਸ਼ਾਨੁਸਾਰ ਹਨ :

1. ਆਧਿਕਾਰਿਕ ਪ੍ਰਲੇਖ - ਜਨਮ ਪ੍ਰਮਾਣ-ਪੜ, ਮੁਤ੍ਤੁ ਪ੍ਰਮਾਣ-ਪੜ, ਵਿਵਾਹ ਪ੍ਰਮਾਣ-ਪੜ, ਪਹਚਾਨ ਪੜ, ਤਲਾਕ ਸੰਬੰਧ ਕਾਗਜਾਤ, ਇਤਿਆਦਿ।
2. ਸ਼ਿਕਸ਼ਾ, ਵਿਵਸਾਯ ਯਾ ਅਕਾਦਮੀ ਸੰਬੰਧੀ ਵਿਲੇਖ।
3. ਪ੍ਰਵਾਸ ਪ੍ਰਮਾਣ-ਪੜ।
4. ਸੰਪਤੀ ਸੰਬੰਧੀ ਵਿਲੇਖ।
5. ਵਸੀਧਤਾਨਾਮੇ।
6. ਸੰਵਿਦਾਏਂ।
7. ਸਾਕਥ ਯਾ ਗਵਾਹੀ ਕੇ ਬਧਾਨ।
8. ਮੁਕਦਮੇ ਕੇ ਪ੍ਰਲੇਖ।
9. ਸੰਧਿਆਂ ਔਰ ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟ੍ਰੀਕ ਕਰਾਰ ਔਰ ਸਮਯੋਤੇ।

ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਕੋ ਇਕ ਵਿਸ਼ਿ਷ਟ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕਾ ਅਨੁਵਾਦ ਮਾਨਾ ਜਾਤਾ ਹੈ ਔਰ ਇਸੇ ਤਕਨੀਕੀ ਅਨੁਵਾਦ ਭੀ ਕਹਾ ਜਾਤਾ ਹੈ। ਆਮਤੌਰ ਪਰ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੇ ਅਨੁਵਾਦ ਮੌਂ ਜੋ ਸਾਹਿਤ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੈ ਉਸਕਾ ਤੱਤੀਕ ਊਪਰ ਕਿਯਾ ਜਾ ਚੁਕਾ ਹੈ। ਇਨ ਪ੍ਰਲੇਖਾਂ ਮੌਂ ਸੋ ਬੈਂਕਿੰਗ ਕਾਰੋਬਾਰ ਮੌਂ ਸੰਵਿਦਾਓਂ, ਤ੍ਰਣ ਕਰਾਰਾਂ, ਵਸੀਧਤਾਨਾਮੇ, ਸੰਪਤੀ ਕੇ ਕ੍ਰਾਨ-ਵਿਕਿਕ੍ਰਾਨ ਸੰਬੰਧੀ ਕਾਗਜਾਤ, ਵਾਰਿਕ ਰਿਪੋਰਟ ਆਦਿ ਕੇ ਅਨੁਵਾਦ ਕਾਰ੍ਯ ਹੋਤੇ ਹਨ। ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੇ ਅਨੁਵਾਦਾਂ ਕੋ ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀ ਸ਼ੇਣੀ ਮੌਂ ਰਖਾ ਜਾਤਾ ਹੈ। ਐਸੇ ਅਨੁਵਾਦ ਮੌਂ ਵਿਸ਼ਿ਷ਟ ਵਾਕਿਆਵਾਂ, ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ ਔਰ ਵਿਵੇਚਨਾ ਕਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਿਯਾ ਜਾਤਾ ਹੈ ਜਿਸਮੌਂ ਕਿਸੀ ਭੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਸੇ ਅਨੇਕਾਰ੍ਥੀ ਵਾਕਿਆਵਾਂ ਕੇ ਨਹੀਂ ਰਖਾ ਜਾਤਾ ਹੈ।



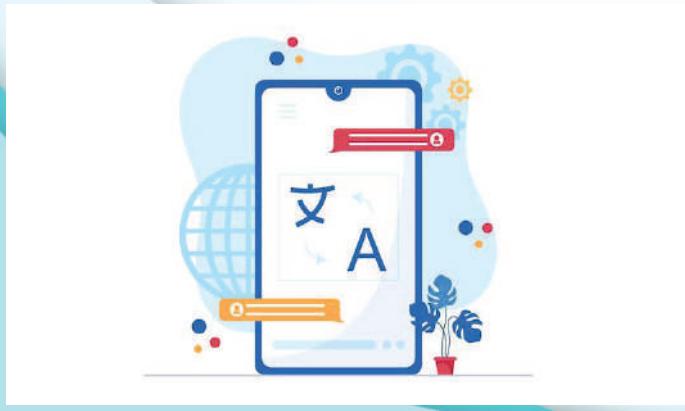
ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਮੌਂ ਅਤਿਧਿਕ ਪਰਿਸ਼ੁਦਧਤਾ, ਵਿ਷ਯ ਕੇ ਜਾਨ ਔਰ ਸਹੀ ਵਿਵੇਚਨਾ ਕੀ ਆਵਥਕਤਾ ਹੋਤੀ ਹੈ। ਸਾਹਿਤ ਇਸਲਿਏ ਭੀ ਕਿ ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਕੇ ਲਿਏ ਜਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੇ ਵਿਧਿਕ ਜਾਨ ਔਰ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਜ਼ਤਾ ਕੀ ਆਵਥਕਤਾ ਅਪੇਕ਼ਿਤ ਹੈ ਉਸ ਪਰ ਕੋਈ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧਾਰਨ ਨਹੀਂ ਦਿਯਾ ਜਾਤਾ ਹੈ। ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਮੌਂ ਐਸੀ ਸਥਿਤੀ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਵਹਾਂ ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ ਅਨੁਵਾਦਕ ਕੋ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀ ਪਰਿਸ਼ੁਦਧਤਾ ਔਰ ਸਟੀਕਤਾ ਕੇ ਬਾਰੇ ਮੌਂ ਏਕ ਪ੍ਰਮਾਣ-ਪੜ ਭੀ ਦੇਨਾ ਹੋਤਾ ਹੈ। ਇਸਕਾ ਕਾਰਣ ਯਹ ਹੈ ਕਿ ਸ਼ਬਦ ਸੰਚਨਾ, ਅਰਥ, ਵਾਕਿਆਵਾਂ, ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ, ਸ਼ੈਲੀ, ਵਾਕਿਆਵਾਂ, ਸੰਖੇਪਾਕਾਰ ਔਰ ਕਥਨ ਸ਼ੈਲੀ ਅਨੁਵਾਦਕ ਕੇ ਲਿਏ ਚੁਨੌਤੀ ਪੈਦਾ ਕਰਤੇ ਹਨ। ਭਾਰਤ ਮੌਂ ਵਿਧਿਕ ਪ੍ਰਲੇਖਾਂ ਕੇ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਸੋ ਹਿੰਦੀ ਅਨੁਵਾਦ ਮੌਂ ਅਨੁਵਾਦਕ ਕੋ ਇਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਸੇ ਰਕਾਤ-ਕਵਚ ਮਿਲਾ ਹੁਆ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੇ ਸੰਵਿਦਾਏਂ ਕੀ ਸਥਿਤੀ ਮੌਂ ਮੂਲ ਅਰਥਾਤ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਸੰਸਕਰਣ ਹੀ ਮਾਨ੍ਯ ਹੋਂਗੇ।

ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਅਨ੍ਯ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੇ ਅਨੁਵਾਦਾਂ ਸੋ ਭਿੰਨ ਹੋਤਾ ਹੈ, ਯਹ ਭਿੰਨਤਾ ਮੁਖਤ ਰੂਪ ਸੋ ਦੋ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੀ ਹੋਤੀ ਹੈ - ਪਹਲੀ ਤੋ ਵਿਧਿਕ ਵਿਵਸਥਾ ਔਰ ਇਸਸੇ ਜੁੜੀ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ। ਉਦਾਹਰਣ ਕੇ ਲਿਏ ਹਿੰਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਮੌਂ ਕੁਛ ਐਸੇ ਸ਼ਬਦ ਹੈਂ ਜੋ ਸ਼ਬਦ ਰਚਨਾ ਔਰ ਕੋਥਗਤ ਅਰਥ ਕੀ ਵ੍ਰਾਈ ਸੋ ਤੋ ਏਕ ਜੈਸੇ ਲੇਗਤੇ ਹੈਂ ਲੇਕਿਨ ਵਿਧਿਕ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਮੌਂ ਵਿਭੇਦ ਹੋਨੇ ਕੇ ਕਾਰਣ ਇਨਕੇ ਅਰਥ ਅਲਗ-ਅਲਗ ਹੋਤੇ ਹਨ। ਯਹ ਤੋ ਸਵੱਚਿਤ ਹੈ ਕਿ ਵਿਧਿ ਮੌਂ ਵਿਭਿੰਨਤਾ ਔਰ ਜਟਿਲਤਾ ਕੇ ਲਕਣ ਹੋਤੇ ਹੈਂ ਕਿਥੋਕਿ ਵਿਧਿ ਕੇ ਯਾ ਕਾਨੂੰਨ ਕੇ ਅਨੇਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਹੈ ਯਥਾ ਦੀਵਾਨੀ, ਫੌਜਿਦਾਰੀ, ਪਰਿਵਾਰਿਕ ਵਿਧਿ, ਵਾਣਿਜਿਕ ਵਿਧਿ ਔਰ ਪ੍ਰਸ਼ਾਸਨਿਕ ਵਿਧਿ; ਇਨ ਸਭੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੇ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਕੇ ਸੀਧਾ ਸੰਬੰਧ ਮਾਨਵ ਸੋ ਹੈ ਤੋ ਇਸਲਿਏ ਯਹ ਜਟਿਲਤਾ ਭੀ ਲਿਏ ਹੋਤੇ ਹਨ। ਇਸੀ ਕਾਰਣ ਸੋ ਵਿਧਿਕ ਪ੍ਰਲੇਖਾਂ ਮੌਂ ਭੀ ਵਿਵਿਧਤਾ ਆ ਜਾਤੀ ਹੈ ਇਸ ਵਿਵਿਧਤਾ ਕੇ ਕਾਰਣ ਹੀ ਅਨੁਵਾਦ ਮੌਂ ਭੀ ਵਿਵਿਧਤਾ ਆਤੀ ਹੈ। ਹਮਾਰੀ ਚੰਚਾ ਕਾ ਵਿ਷ਯ ਬੈਂਕਿੰਗ ਮੌਂ ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਹੈ ਤੋ ਹਮਾਰਾ ਵਿ਷ਯ ਕਿੰਚਿਤ ਸੀਮਿਤ ਹੋ ਜਾਤਾ ਹੈ।

यहां यह भी ध्यान रखने योग्य है कि विधिक अनुवाद में न केवल दो भाषाओं अपितु दो भिन्न विधिक प्रणालियों को भी ध्यान में रखना होता है। ऐसे में अनुवादक को थोड़ी सी तुलनात्मक दृष्टि भी रखनी होती है। इससे अनुवाद करने में आसानी भी रहती है। भारत में जिस विधिक व्यवस्था का विकास हुआ है वह अंग्रेजी विधिक व्यवस्था पर आधारित है। इंग्लैंड के माध्यम से भारत में आई इस विधिक व्यवस्था की भाषा अंग्रेजी है और अंग्रेजी में भी लैटिन, फ्रांसीसी और जर्मन शब्दों, पदबों और वाक्यांशों का समावेश है। ऐसे में अनुवादक को इन शब्दों को पहचान कर उनके सही अर्थ को ग्रಹण करना होता है। भाषा भेद, वाक्य रचना में भेद, अर्थों में भेद के कारण ही नहीं बल्कि संस्कृति और संदर्भ के कारण अनुवादक की चुनौतियां बढ़ती जाती हैं।



विधिक अनुवाद वह अंग्रेजी से हिंदी में या किसी भी अन्य भारतीय भाषा में करना हो अथवा हिंदी से या किसी अन्य भारतीय भाषा से अंग्रेजी में अनुवाद करना हो – अनुवादक से त्रुटियां होने की संभावना बनी रहती है। इसका मुख्य कारण अनुवादक के पास विधिक ज्ञान का नहीं होना है। भाषा का ज्ञान होने के बावजूद विषय का ज्ञान नहीं होने के कारण यह कमी बनी रहती है। इतना ही नहीं, अनुवाद के पाठक को विषय का कितना ज्ञान है यह भी समस्या पैदा हो सकती है। संविदाओं के अनुवाद में समानार्थी नहीं होने, शब्दावली की अज्ञानता, सांस्कृतिक विभेद भी समस्या पैदा करते हैं। इसे दूर करने के लिए आवश्यक है कि अनुवादक को समुचित प्रशिक्षण दिया जाए। यह प्रशिक्षण कोई बहुत गहन प्रकार का नहीं भी हो तो भी चलेगा क्योंकि बैंकिंग में जो विधिक प्रतीक्षा आते हैं उनके विषय और क्षेत्र सीमित हैं – जैसे संविदा विधि, साझेदारी विधि, कंपनी विधि, परक्राम्य लिखित विधि, बैंककारी विनियमन अधिनियम आदि।



इसके अलावा शब्द संयोग त्रुटियां, वर्तनी की त्रुटियां, शब्द और व्याकरण की त्रुटियां और शब्द चयन की त्रुटियां भी समस्या का कारण बन सकती हैं। भाषा और विषय के ज्ञान से इस समस्या का निवारण किया जा सकता है। शैलीगत समस्या भी आती है जिसमें अधिनियमों, कानूनों का उल्लेख करते हुए उनके पैराग्राफ की संख्या का उल्लेख किया जाता है। मान लीजिए कि किसी अधिनियम, नियमावली अथवा संविधान की धारा या अनुच्छेद का उल्लेख करते हुए उस अनुच्छेद की संख्या का भी उल्लेख इस प्रकार से कर दिया जाए –

Section 3 (A) (a) -

अब इसके हिंदी समानक क्या रखे जाएं क्योंकि हिंदी वर्णमाला में दोनों प्रकार के (A) और (a) के लिए क्रमशः (अ) और (क) का प्रयोग किया जाए या (क) और (क) का प्रयोग किया जाए। इसके अलावा यह भी समस्या रहेगी कि यदि मूल अधिनियम, नियमावली, विनियमावली अथवा संविधान का जो अनुवाद हुआ है उसमें इस संख्या-क्रम को किस प्रकार से रखा गया है। बेहतर यही रहता है कि मूल अधिनियम, नियमावली, विनियमावली आदि का संदर्भ लिया जाए और अनुवाद भी ज्यों का त्यों लिया जाए, उसमें अपनी तरफ से कुछ संशोधन करने की भी आवश्यकता नहीं, क्योंकि अंग्रेजी पाठ में संबंधित धारा, नियम, विनियम को ज्यों का त्यों उद्घृत किया गया होता है। इसी प्रकार मान्य विधिक शब्दावली, पाठ, वाक्य रचना, विराम विह, अंग्रेजी के कैपिटल लैटर्स, उदाहरणों का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाए।



संविदाओं को कारोबारी संव्यवहारों, वाणिज्यिक लेनदेन, सामाजिक और तकनीकी करारनामों का एक महत्वपूर्ण आधार माना जाता है इसलिए इनके अनुवाद में सावधानी रखनी होती है। सहायक क्रिया के रूप में आने वाले पदों यथा shall, will, must, may etc. आदि का अनुवाद भी समस्या पैदा करता है। इसमें shall और may के अनुवाद में सावधानी रखनी होती है, ये दोनों ही शब्द विवेचना सापेक्ष है। स्थानाभाव के कारण यहां इसकी विशद विवेचना नहीं की जा रही है।



ਇਸੀ ਪ्रਕਾਰ ਦਿਪਦੀਯ ਆਭਿਵਕਿਤਿਆਂ ਔਰ ਸਮਾਂਤਰ ਸੰਰਚਨਾ ਵਾਲੇ ਵਾਕਿਆਂ ਕੇ ਅਨੁਵਾਦ ਮੌਜੂਦੇ ਭੀ ਸਾਵਧਾਨੀ ਰਖਨੀ ਹੋਤੀ ਹੈ। ਵਿਸ਼ੇ਷ਕਰ ਉਨ ਵਾਕਿਆਂ ਮੌਜੂਦੇ ਜਹਾਂ ਦੋ ਬਾਰ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਕਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁਆ ਹੈ। ਜੋ ਵਾਕਿਆ hereinafter, hereto, hereby, aforesaid, whosoever, herein etc. ਦੇ ਆਰੰਭ ਹੋਤੇ ਹਨ ਉਨਕੇ ਅਨੁਵਾਦ ਮੌਜੂਦੇ ਭੀ ਕਠਿਨਾਈ ਆਤੀ ਹੈ। ਯਦਿ ਵਿਧਿ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਇਨਕੇ ਅਨੁਵਾਦ ਕਿਏ ਜਾਏ ਤਾਂ ਤੇ ਸਾਂਕੁਤਨਿ਷ਟ ਸ਼ਬਦ ਮਿਲਦੇ ਹਨ ਜੋ ਜਨਸਾਮਾਨਕ ਦੀ ਸਮਝ ਮੌਜੂਦੇ ਨਹੀਂ ਆਂਤਰੀ ਆਂਤਰੀ ਹਨ। ਐਸੇ ਮੌਜੂਦੇ ਇਨ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ ਦੀ ਵਿਵੇਚਨਾ ਕਰਨੀ ਹੋਤੀ ਹੈ। ਜੈਂਸੇ hereinafter ਦੇ ਲਿਏ - **ਅਥਵਾ** - ਪ੍ਰਬੰਧ ਦੀ ਪ੍ਰਯੋਗ ਸਹਜ ਅਤੇ ਸਰਲ ਰੱਖਣਾ। ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀ ਜਟਿਲਤਾ ਦੇ ਦੇਖਤੇ ਹੋਏ ਵਿਧਿਕ ਸ਼ਬਦ ਕੋਥੋਂ, ਸੰਦਰਭ ਗ੍ਰਿੰਥਾਂ, ਵਿਧਿਕ ਪ੍ਰਾਰੂਪ ਲੇਖਕਾਂ ਅਤੇ ਸਾਫਕਾਰਮਿਆਂ ਦੇ ਸਹਾਯਤਾ ਲੇਨਾ ਭੀ ਉਪਯੋਗੀ ਰੱਖਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕਿਏ ਗਏ ਅਨੁਵਾਦ ਦੀ ਅਵਸਥਾ ਹੀ ਪਢ़ ਲੇਨਾ ਚਾਹਿੰਦਾ ਹੈ।

ਇਸ ਲੇਖ ਦੇ ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਦੀ ਕਤਿਪਧ ਚੁਨੌਤਿਆਂ ਅਤੇ ਇਨ ਸਮਸ਼ਾਓਂ ਦੇ ਨਿਵਾਰਣ ਦੀ ਏਕ ਛੋਟਾ ਸਾ ਪ੍ਰਯਾਸ ਕਿਯਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਗਹਰਾਈ ਦੇ ਦੇਖਾ ਜਾਏ ਤਾਂ ਅਨੁਵਾਦ ਦਾ ਯਹ ਕ੍਷ੇਤਰ ਇਤਨਾ ਵਿਸ਼ਾਲ ਅਤੇ ਜਿਤਿਹਾਸ ਹੈ ਕਿ ਮਾਤਰ ਕੁਛ ਘੰਟੇਂ ਮੌਜੂਦੇ ਦੇ ਪ੍ਰਾਣੀਆਂ ਵਿਚ ਸਮਝਨਾ ਕਠਿਨ ਹੈ। ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਜਾਨ, ਯਹ ਸਮਝਨਾ ਕਿ ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਸ਼ਬਦ ਕਿਸ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਹੈ (ਫਾਂਸਿਸੀ, ਜਰਮਨ ਯਾ ਲੈਟਿਨ); ਅਨੁਵਾਦ ਗਲਤ ਹੋਣੇ ਦੀ ਪ੍ਰਣਾਲੀ, ਆਦਿ ਪਰ ਅਵਸਥਾ ਧਾਨ ਦੇਨਾ ਚਾਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਮੈਂ ਪ੍ਰਸ਼ਿੱਸ਼ਕਣ ਦੇ ਲਿਏ ਐਸੇ ਪ੍ਰਸ਼ਿੱਸ਼ਕਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਜੋ ਅਨੁਵਾਦ ਅਤੇ ਵਿਧਿ ਦੀਆਂ ਸਾਡੀਆਂ ਦੇ ਜਾਨਕਾਰੀ ਰੱਖਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਦੇ ਸਾਡੇ ਨਹੀਂ ਕਿ ਵਿਧਿਕ ਅਨੁਵਾਦ ਕਠਿਨ ਹੋਤਾ ਹੈ ਲੋਕਿਨ ਇਸ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਮੂਲਕਤਾ ਦੀ ਧਾਨ ਅਵਸਥਾ ਰੱਖਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਅਨੁਵਾਦ ਦੀ ਸਾਡੀਆਂ ਅਤੇ ਸਮਝੀਆਂ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਹੋ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ, ਅਨੁਵਾਦ ਉਪਯੋਗੀ ਭੀ ਬਣੇਗਾ।

- ਸੇਵਾਨਿਵ੃ਤ ਉਪ ਮਹਾਪ੍ਰਬੰਧਕ (ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ)
ਭਾਰਤੀਯ ਰਿੱਜਰਿਵ ਬੈਂਕ, ਮੁੰਬਈ

ਰਚਨਾਕਾਰੋਂ ਦੇ ਨਿਵੇਦਨ

ਰਚਨਾਕਾਰੋਂ ਦੇ ਨਿਵੇਦਨ ਹੈ ਕਿ ਬੈਂਕ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਾਰਾਲਿਅਤ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ ਦੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਤ ਕੀ ਜਾ ਰਹੀ ਤਿਮਾਹੀ ਹਿੰਦੀ ਗ੍ਰੇਡ-1 ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਤ "ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਅੰਕੁਰ" ਦੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਹੇਤੁ ਲੇਖ ਮੈਂ ਸਮਾਂ ਲੇਖ ਦੇ ਅੰਤ ਮੌਜੂਦਾ ਅਪਨਾ ਨਾਮ, ਸ਼ਾਖਾ/ਕਾਰਾਲਿਅਤ ਦਾ ਪਤਾ, ਮੋਬਾਈਲ ਨੰਬਰ ਤਥਾ ਅਪਨਾ ਬੈਂਕ ਦੀ ਸੱਭਾ ਸੰਖਾ (14 ਅੰਕਾਂ ਦੀ) ਵਿਚ ਆਈਏਏਸਸੀ ਕੋਡ ਅਵਸਥਾ ਲਿਖੋ। ਇਸ ਦੇ ਸਾਥ ਲੇਖ ਦੇ ਸੰਬੰਧ ਮੌਜੂਦਾ ਪ੍ਰਮਾਣ-ਪੱਤਰ ਅਤੇ ਅਪਨਾ ਫੋਟੋ ਭੀ ਉਪਲਬਧ ਕਰਾਏ। ਸੇਵਾਨਿਵ੃ਤ ਕਾਰਮਿਕ ਉਪਰੋਕਤ ਦੀ ਅਤਿਰਿਕਤ ਅਪਨੇ ਘਰ ਦੀ ਪਤਾ ਤਥਾ ਸਥਾਨੀ ਖਾਤਾ ਦੀ ਸੰਖਾ (ਪੈਨ ਨੰਬਰ) ਦੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

-ਮੁਖਾਂ ਸਂਪਾਦਕ



ਪ੍ਰਾਚਾ ਸ਼ਰਮਾ

ਜਿੰਦਗੀ - ਏਕ ਕਿਤਾਬ

ਕਾਸ਼ ਜਿੰਦਗੀ ਸਚਮੁਚ ਕਿਤਾਬ ਹੋਤੀ
ਪਢ਼ ਸਕਤੇ ਹਮ ਕਿ ਆਗੇ ਕਿਆ ਹੋਗਾ।

ਕਿਆ ਪਾਏਂਗੇ ਅਤੇ ਕਿਆ ਦਿਲ ਖੋਏਗਾ
ਕਿਵੇਂ ਮਿਲੇਗੀ ਖੁਸ਼ੀ, ਕਿਵੇਂ ਦਿਲ ਰੋਏਗਾ
ਕਾਸ਼ ਜਿੰਦਗੀ ਸਚਮੁਚ ਕਿਤਾਬ ਹੋਤੀ।

ਫਾਡ ਸਕਤੇ ਹਮ ਉਨ ਲਮਹੌਂ ਦੀ
ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਬਹੁਤ ਰੁਲਾਇਆ ਹੈ
ਜੋਡੇ ਕੁਛ ਪਨੀ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਹੁੰਸਾਇਆ ਹੈ
ਹਿਸਾਬ ਲੁਗਾ ਪਾਤੇ
ਕਿਤਨਾ ਖੋਯਾ ਅਤੇ ਕਿਤਨਾ ਪਾਯਾ ਹੈ
ਕਾਸ਼ ਜਿੰਦਗੀ ਸਚਮੁਚ ਕਿਤਾਬ ਹੋਤੀ।

ਵਰਤੋਂ ਦੀ ਆਂਖੇ ਚੁਰਾਕਰ ਪੀਂਠੇ ਚਲੇ ਜਾਤੇ
ਟੂਟੇ ਸਪਨੇ ਦੀ ਅਰਮਾਨਾਂ ਦੇ ਫਿਰ ਦੇ ਸਜਾਤੇ
ਕੁਛ ਪਲ ਦੀ ਲਿਏ ਫਿਰ ਦੇ ਮੁਸ਼ਕਲਾਤੇ
ਕਾਸ਼ ਜਿੰਦਗੀ ਸਚਮੁਚ ਕਿਤਾਬ ਹੋਤੀ

ਪ੍ਰਬੰਧਕ
ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਾਲਿਅਤ ਗੁਰੂਗ੍ਰਾਮ





सूनील अग्निहोत्री

ग्राहक के मुख से

मैं, पंजाब एण्ड सिंध बैंक से करीब 10 वर्ष से जुड़ा हुआ हूं और चंडीगढ़ रोड शाखा, होशियारपुर से बैंकिंग सेवाएं प्राप्त कर रहा हूं, जहां मेरा मीयादी ऋण और लिमिट चल रहा है। मैं पेशे से व्यवसायी हूं और बैंक के सहयोग से होशियारपुर में अपना रेस्टोरेंट चला रहा हूं। रेस्टोरेंट खोलने का सपना मैंने काफी पहले देखा था लेकिन व्यक्तिगत और आर्थिक समस्याओं की वजह से यह अधूरा ही रह गया था। मैं भली-भांति जानता था कि इस राह में काफी मुश्किलें आएंगी फिर भी मेरा जुनून कम न हुआ। मैं अपने सपने को पूरा करने के लिए काफी मेहनत और संघर्ष कर रहा था। तभी मेरी मुलाकात चंडीगढ़ रोड शाखा, होशियारपुर के प्रबंधक से हुई और मेरी काफी मुश्किलें आसान हो गई। बैंक की तरफ से मिली सकारात्मक प्रतिक्रिया ने मेरे आत्मविश्वास को मजबूत किया और मैं अपने सपने को पूरा करने में जी-जान से जुट गया। मेरी हर जरूरत में बैंक मेरे साथ खड़ा रहा और हर कदम पर मुझे सहयोग और मार्गदर्शन मिलता रहा, जिसके लिए मैं बैंक का आभारी हूं। पहली बार मुझे ऐसा महसूस हुआ कि किसी बैंक में परिवार जैसा सहयोग भी मिल सकता है और पंजाब एण्ड सिंध बैंक परिवार का सदस्य होने पर मुझे काफी गर्व है। इस दौरान कई शाखा प्रबंधक बदले लेकिन शाखा के सभी सदस्यों की तत्परता, सच्ची लगन और उत्कृष्ट सेवाभाव से मैं बहुत ज्यादा प्रभावित हुआ। मैंने अपने अन्य रिश्तेदारों को भी प्रेरित कर पंजाब एण्ड सिंध बैंक परिवार से जोड़ा।

मुझे याद है, जब अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर बैंक के आंचलिक कार्यालय द्वारा मेरी पत्नी को सम्मानित किया गया था। मेरी पत्नी जो मेरी अनुपस्थिति में पूरा व्यवसाय खुद ही संभालती है, के लिए यह पहला अनुभव था कि किसी बैंक से इतना प्यार मिला हो। उस दिन के बाद से हमेशा बैंकिंग से दूर रहने वाली मेरी पत्नी अब खुद ही लेन-देन के मामले संभालने लगी है और इसके लिए मैं पंजाब एण्ड सिध बैंक का शुक्रगुजार हूँ। इस तरह की ऐसी कई यादें हैं जब बैंक ने कई मुख्य अवसरों पर हमें अपने परिवार के एक अभिन्न सदस्य की तरह आमंत्रित किया और इतना सम्मान दिया।

बैंकिंग समसामयिकता में थोड़ी दिलचस्पी होने के कारण मैं समझ सकता हूं कि वर्तमान परिदृश्य में बैंकिंग और वित्तीय संस्थान बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं, जिसमें बैंकिंग सेवाओं का डिजिटलीकरण सबसे मुख्य है। आज का ग्राहक अधिक वैयक्तिकृत और सुलभ बैंकिंग सेवाएं चाहता है। मोबाइल बैंकिंग एप्स, विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और डिजिटल भुगतान की विधियों के उद्भव ने ग्राहकों को अपने बैंकों के साथ बातचीत करने के तरीके को बदल दिया है और यह बदलाव मैं खुद में भी महसूस कर सकता हूं।

डिजिटलीकरण की तरफ एक और कदम बढ़ाते हुए पीएसबी यूनिक एप लॉन्च करने के बैंक पहल की मैं सराहना करता हूं। यूनिक एप आने से मेरी डिजिटल लेनेदेन से जुड़ी समस्याएं समाप्त हो गई। अब मैं एक ही एप के माध्यम से विभिन्न बैंकिंग सेवाओं का लाभ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर ले पा रहा हूं।

मेरा ऐसा मानना है कि किसी भी बैंक के लिए यह जरूरी है कि वे अपनी दृष्टि में दूरदर्शिता लाएं और यह सटीक पता लगाएं कि ग्राहक वास्तव में क्या चाहते हैं। ग्राहकों को उनके अनुकूल उत्पाद और अनुभव प्रदान करना ही किसी बैंक को दूसरे बैंकों से अलग करता है। मैं खुद भी सेवा क्षेत्र से जुड़ा हुआ हूं और समझता हूं कि ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने का सबसे अच्छा तरीका है अपने ग्राहकों को समझना। जितना अधिक आप उनसे बात करेंगे, उनकी आदतें देखेंगे, उनके कार्यों का निरीक्षण करेंगे, आप उतनी ही बेहतर सेवाएं उन्हें प्रदान कर पाएंगे। इस संबंध में अपनी उत्कृष्ट सेवा के जरिए पंजाब एण्ड सिंध बैंक हमेशा से ही बेहतर ग्राहक संबंधों को विकसित करता हुआ ग्राहकों की अपेक्षाएं पूरी करता आया है। मैं निकट भविष्य में अपने व्यवसाय को विस्तारित करने की योजना पर काम कर रहा हूं जिसके लिए बैंक से मुझे पूरा सहयोग मिल रहा है।

मैं लगातार शाखा के संपर्क में रहता हूँ और भारत सरकार तथा बैंक द्वारा चलाई जा रही नई- नई योजनाओं की जानकारी लेता रहता हूँ। मैं बैंक द्वारा शुरू किए डोर स्टेप बैंकिंग और व्हाट्सएप बैंकिंग सुविधा की भी तारीफ करता हूँ। बैंक की एक अच्छी पहल है कि वे अपने ग्राहकों को मैसेज के माध्यम से तथा कैप्प लगाकर सतर्क और जागरुक करते रहते हैं। आजकल साइबर धोखाधड़ी की घटनाएं बहुत बढ़ गई हैं जो कि हम सभी के लिए चिंता का कारण है। ऐसे में बैंक द्वारा चलाया जा रहा ग्राहक जागरूकता अभियान बहुत कारगर है।

मैंने बैंक के सतर्कता जागरुकता अभियान में भी बतौर ग्राहक प्रतिभागिता की जो कि बैंक का एक सराहनीय कदम है। बैंक द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ जैसे-रक्तदान शिविर, पर्यावरण संरक्षण अभियान, स्वच्छता पखवाड़ा, छबील और लंगर आदि दर्शाती हैं कि बैंक सामाजिक उत्थान को लेकर प्रतिबद्ध है। बतौर ग्राहक मुझे पूरा विश्वास है कि पंजाब एण्ड सिंध बैंक नित- नित सफलता की नई उंचाइयों हासिल करता रहेगा।

- ਊਨਾ ਬਾਈਪਾਸ, ਸ਼ੇਰਗढ਼
ਹੋਣਿਆਪੁਰ, ਪੰਜਾਬ



सौरभ सिंहराहा

जनमनमयी सुभद्रा

“सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नई जवानी थी
गुम हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।”

‘खूब लड़ी मर्दानी वह तो ज्ञांसी वाली रानी थी’, जैसी अमर कविता की रचयिता सुभद्रा कुमारी चौहान कवयित्री के साथ-साथ कथाकार, सामाजिक सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी भी रहीं। कविता की इन चार पंक्तियों से समूचा देश आजादी की लड़ाई के लिए भावाविभोर हो गया। बहुत कम रचनाकार हुए हैं जिनकी एक ही रचना इतनी लोकप्रिय हुई हो कि उसके समक्ष उनकी अन्य रचनाएं गौण हो गई हो, इनमें सुभद्रा कुमारी चौहान भी मुख्य रूप से शामिल हैं। उनकी कविताएं और कहानियां हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। प्रयागराज के निकट निहालपुर गाँव में 16 अगस्त, 1904 को सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म हुआ। सुभद्रा की चार बहन और दो भाई थे। विद्यार्थी जीवन प्रयाग में ही बीता। पिता ठाकुर रामनाथ सिंह जर्मीदार थे लेकिन पढ़ाई को लेकर उनमें जागरूकता भी थी। काव्य-ग्रन्थों में विशेष रुचि रखने वाली सुभद्रा जी ने बचपन में ही कविता लेखन आरंभ कर दिया था। वर्ष 1913 में नौ वर्ष की आयु में ही उनकी पहली कविता प्रयाग से निकलने वाली पत्रिका ‘मर्यादा’ में प्रकाशित हुई, कविता ‘नीम’ के पेड़ पर लिखी गई जो ‘सुभद्राकुँवरि’ के नाम से छपी थी। बचपन में कविता लिखने का जो सिलसिला शुरू हुआ तो फिर ताउप्र रहा। छायावाद की प्रमुख स्तंभों में से एक महादेवी वर्मा जी से इनकी गहरी मित्रता रही।

वर्ष 1919 में मध्यप्रदेश राज्य के खंडवा निवासी ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ इनका विवाह हुआ। लक्ष्मण सिंह एक नाटककार थे और उन्होंने अपनी पत्नी की प्रतिभा को आगे बढ़ने में सदैव उनका सहयोग किया। जबलपुर से पंडित माखनलाल चतुर्वेदी ‘कर्मवीर’ पत्रिका निकालते थे जिसमें लक्ष्मण जी को नौकरी मिल गई, इस तरह सुभद्रा जी भी उनके साथ जबलपुर आ गई और उसे अपनी कर्मभूमि बनाया। श्री लक्ष्मण सिंह देश की स्वतंत्रता आंदोलन में भी सक्रिय थे इसलिए पति के साथ सुभद्रा जी भी स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गई और राष्ट्र-प्रेम पर कविताएं लिखने लगीं। सुभद्रा, महिलाओं के बीच जाकर उन्हें स्वदेशी अपनाने व तमाम संकीर्णताएं छोड़ने के लिए प्रेरित करती रहती थीं। वर्ष 1921 में सुभद्रा कुमारी चौहान और उनके पति लक्ष्मण सिंह चौहान, भारतीय स्वतंत्रता के लिए चलाए गए असहयोग आंदोलन में शामिल रहे। वर्ष 1922 का जबलपुर झंडा सत्याग्रह देश का पहला सत्याग्रह था और सुभद्रा जी पहली महिला सत्याग्रही थीं। झंडा सत्याग्रह के दौरान मार्च 1923 में जबलपुर में तिरंगा झंडा फहराने को लेकर स्थानीय लोगों और अधिकारियों में झड़प हो गई



जिसका नेतृत्व करने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ अन्य लोग गिरफ्तार हुए। स्वतंत्रता आंदोलन और साहित्य लेखन इनके जीवन पर्यंत सामानांतर चलते रहे और परस्पर सहयोगी रहे। सुभद्रा कुमारी चौहान स्वतंत्रता आंदोलनों के दौरान वर्ष 1923 और 1942 में जेल गईं।

अपने जीवन-काल में सुभद्रा जी ने लगभग 88 कविताओं और 46 कहानियों की रचना की। सुभद्रा जी वीर रस की कविताएं लिखने के लिए जानी जाती थीं। सुभद्रा जी का पहला काव्य-संग्रह ‘मुकुल’ 1930 में प्रकाशित हुआ। इनकी चुनी हुई कविताएं ‘त्रिधारा’ में प्रकाशित हुई हैं लेकिन सबसे बुहचर्चित रचना ‘ज्ञांसी की रानी’ है। काव्य-संग्रह ‘मुकुल’ के छह संस्करण उनके जीवन काल में ही होना कोई सामान्य बात नहीं थी। बालमन को छूने वाली मनुहारी कविता से लेकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन तक जीवन के विभिन्न विषयों पर सुभद्रा जी ने कविताएं लिखीं और इनकी सभी कविताओं में भारतीय संस्कृति की झलक विद्यमान रही। ‘खिलौने वाला’ शीर्षक कविता में जहाँ बालहठ, माता-पुत्र स्नेह का उल्लेख है वहीं भाई-बहन के प्रेम-प्रतीक त्यौहार ‘राखी’ शीर्षक से लिखी गई कविता, राष्ट्र-कर्तव्य और नैतिकता का बोध करती है।

अम्मा तुमने तो लाकर के, मुझे दे दिए पैसे चार
कौन खिलौने लेता हूँ मैं, तुम भी मन में करो विचार।
तुम सोचोगी मैं ले लूंगा, तोता, बिल्ली, मोटर, रेल
पर माँ, मैं यह कभी न लूंगा, ये तो हैं बच्चों के खेल।
मैं तो तलवार खरीदूंगा माँ, या मैं लूंगा तीर-कमान
जंगल में जा किसी ताढ़का को मारूंगा राम समान।
तपसी यज्ञ करेंगे, असुरों को मैं मार भगाऊंगा
यूं ही कुछ दिन करते-करते, रामचंद्र मैं बन जाऊंगा।

- खिलौनेवाला

भैया कृष्ण! भेजती हूँ मैं राखी अपनी, यह लो आज।
कई बार जिसको भेजा है, सजा-सजाकर नूतन साज।।
लो आओ, भुजदण्ड उठाओ, इस राखी में बंध जाओ।
भरत-भूमि की रजभूमि को, एक बार फिर दिखलाओ॥

-राखी

कवि शमशेर बहादुर सिंह ने सुभद्रा जी को ‘जनमनमयी सुभद्रा’ कहा था। उन्होंने सुभद्रा जी के बसंत जैसे स्वभाव की प्रशंसा की है – “कुछ यादगारें किस कदर ताजगी अपने अंदर लिए हुए होती हैं। उनकी झाँकियाँ जैसे बसंत का पहला दिन हों – वैसी ही नरमी और मुस्कुराहटें लिए हुए, जो एक हलचल और मस्ती-सी, हमारी आत्मा को दान कर जाती हैं।” सुभद्रा जी की समकालीन स्त्री-कथाकारों की संख्या अधिक नहीं थीं। स्वतंत्रोत्तर पूर्व स्त्री-सरोकार से जुड़ी कहानियाँ लिखने वाली पहली लेखिका सुभद्रा जी ही थीं। समाजिक अनीतियों से उत्पन्न जिस पीड़ि को सुभद्रा जी व्यक्त करना चाहती थीं, उसकी अभिव्यक्ति गद्य के माध्यम से ही हो सकती थी इसलिए सुभद्रा जी ने कहानियाँ लिखीं। इनकी कहानियों में देश-प्रेम के साथ-साथ व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने के लिए संघर्षरत नारी की झलक मिलती है। राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी और जेल यात्रा के पश्चात उनकी निम्न तीन कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुए :

- बिखरे मोती (1932)
- उन्मादिनी (1934)
- सीधे-सादे चित्र (1947)

इन कथा संग्रहों में कुल 38 कहानियाँ (क्रमशः पंद्रह, नौ और चौदह) संग्रहित हैं। काव्य-संग्रह ‘मुकुल’ के लिए इनको वर्ष 1931 में सेक्सरिया पारितोषिक अवार्ड दिया गया। इनको सेक्सरिया पारितोषिक दूसरी बार भी मिला, इस बार इनको 1932 में कहानी संग्रह ‘बिखरे मोती’ के लिए दिया गया। 15 फरवरी, 1948 को 43 वर्ष की अल्पायु में ही सुभद्रा कुमारी चौहान का देहांत सिवनी, मध्यप्रदेश में हो गया। नागपुर में शिक्षा विभाग की बैठक में शामिल होने के बाद 15 फरवरी, 1948 को दोपहर के समय जब सुभद्रा जी कार से जबलपुर के लिए वापस लौट रही थीं तो रस्ते में कार के दुर्घटनाग्रस्त होने से एक संभावनापूर्ण जीवन का अंत हो गया। वह अपनी मृत्यु के बारे में कहती थीं कि “मेरे मन में तो मरने के बाद भी धरती छोड़ने की कल्पना नहीं है। मैं चाहती हूँ, मेरी एक समाधि हो, जिसके चारों ओर नित्य मेला लगता रहे, बच्चे खेलते रहें, स्त्रियां गाती रहें और कोलाहल होता रहे।” नियति ने यदि कुछ और समय दिया होता तो निश्चित तौर पर हिंदी साहित्य में सुभद्रा जी को कुछ और अमित रचनाएं कोलाहल करती होती।

सुभद्रा जी की मृत्यु पर माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा कि सुभद्रा जी का आज चल बसना प्रकृति के पृष्ठ पर ऐसा लगता है मानो नर्मदा की धारा के बिना तट के पुण्य तीर्थों के सारे धाट अपना अर्थ और उपयोग खो बैठे हों। सुभद्रा जी का जाना ऐसा मालूम होता है मानो ‘झाँसी वाली रानी’ की गायिका, झाँसी की रानी से कहने गई हो कि लो, फिरंगी खदेड़ दिया गया और मातृभूमि आजाद हो गई। सुभद्रा जी का जाना ऐसा लगता है मानो अपने मातृत्व के दुर्घ, स्वर और आँसुओं से उन्होंने अपने नन्हे पुत्र को कठोर उत्तरदायित्व सौंपा हो। प्रभु करे, सुभद्रा जी को अपनी प्रेरणा से हमारे बीच अमर करके रखने का बल इस पीढ़ी में हो।



जबलपुर में सुभद्रा जी की प्रतिमा का अनावरण करते हुए उनकी बचपन की सहेली और छायावदी कवयित्री महादेवी वर्मा ने कहा था नदियों का कोई स्मारक नहीं होता। दीपक की लौ को सोने से मढ़ दीजिए पर इससे क्या होगा? “हम सुभद्रा के संदेश को दूर-दूर तक फैलाएं और आचरण में उसके महत्व को मानें-यही असल स्मारक है।” सुभद्रा जी की बेटी सुधा चौहान का विवाह प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचंद के पुत्र अमृतराय से हुआ था। सुभद्रा कुमारी चौहान और ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान दोनों की संयुक्त रूप से जीवनी ‘मिला तेज से तेज’ नामक शीर्षक से सुधा चौहान ने लिखी है। सुभद्रा जी की कविता ‘झाँसी की रानी’ में लिखीं इस पक्षियों के साथ हिंदी साहित्य के इस अमूल्य धरोहर के परिचयात्मक लेख को विराम देते हैं :

तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी
बुदेले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।

-वरिष्ठ प्रबंधक
शाखा महाराजपुर, मध्यप्रदेश

ਆਲੋਖ ਏਂਵਾ ਸਾਕਧ ਉਪ ਸਮਿਤੀ ਕਾ ਕੋਲਕਾਤਾ ਫੈਰੈ



08 ਨਵੰਬਰ, 2023 ਕੀ ਸੰਸਦੀਅ ਰਾਜਭਾਸਾ ਸਮਿਤੀ ਕੀ ਆਲੋਖ ਏਂਵਾ ਸਾਕਧ ਉਪ ਸਮਿਤੀ ਦ੍ਰਾਦਾ ਨਗਰ ਰਾਜਭਾਸਾ ਕਾਰਾਨਚਨਯਨ ਸਮਿਤੀ (ਬੈਂਕ) ਕੋਲਕਾਤਾ ਕੇ ਸਦਸਥ ਕਾਰਾਲਿਅਨਾਂ ਕੇ ਸਾਥ ਵਿਚਾਰ-ਵਿਮਰਸ਼ ਬੈਠਕ ਕਾ ਆਯੋਜਨ ਕਿਯਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਬੈਠਕ ਮੌਹਾਰੇ ਬੈਂਕ ਕੇ ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਾਲਿਅਨ ਕੋਲਕਾਤਾ ਮੌਹਾਰੇ ਪਦਸਥ ਸਹਾਇਕ ਮਹਾਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸ਼੍ਰੀ ਅਮਿਤਾਬ ਤਾਲੁਕਦਾਰ ਤਥਾ ਵਰਿ਷਼ ਪ੍ਰਬੰਧਕ (ਰਾਜਭਾਸਾ) ਸੁਸ਼੍ਰੀ ਮਨੀ਷ਾ ਖਟੀਕ ਉਪਸਥਿਤ ਰਹੀ।

ਦਿੱਲੀ ਬੈਂਕ ਨਗਰ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਕਾਰਧਨਵਿਧਨ ਸਮਿਤੀ ਮੋਹਾਰਾ ਬੈਂਕ

ਦਿੱਲੀ ਬੈਂਕ ਨਗਰ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਕਾਰਧਨਵਿਧਨ ਸਮਿਤੀ ਦੇਖਾ ਆਯੋਜਿਤ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਸ਼ੀਲਡ ਪ੍ਰਤਿਯੋਗਿਤਾ- 2023 ਦੇ ਅਨੰਤਰਗਤ ਬੈਂਕ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਾਰਧਾਲਿਆਂ ਦੀ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਕਾਰਧਨਵਿਧਨ ਵੇਤ੍ਨ ਬੈਂਕਾਂ ਦੀ ਸ਼੍ਰੇਣੀ ਵਿੱਚ 'ਪ੍ਰਥਮ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ' ਤਥਾ ਬੈਂਕ ਦੀ ਹਿੱਦੀ ਤਿਮਾਹੀ ਪਤ੍ਰਿਕਾ "ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਅੰਕੁਰ" ਕੋ ਗੁਰੂ-ਪਤ੍ਰਿਕਾ ਸ਼੍ਰੇਣੀ ਵਿੱਚ 'ਦ੍ਰਿੰਤੀਅ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ' ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁਆ। ਸਾਥ ਹੀ ਨਰਾਕਾਸ ਦੇ ਤਤਵਾਵਧਾਨ ਵਿੱਚ ਸਦਸ਼ਯ ਕਾਰਧਾਲਿਆਂ ਦੀ ਵਿਭਿੰਨ ਪ੍ਰਤਿਯੋਗਿਤਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਕਾਰਮਿਕਾਵਾਂ ਨੇ ਕੁਝ 06 ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਿਏ। ਪੁਰਸ਼ਕਾਰਾਂ ਦੀ ਵਿਤਰਣ 22 ਵਿੱਤੀ, 2023 ਦੇ ਆਯੋਜਿਤ ਨਰਾਕਾਸ ਵਿੱਚ 59 ਵੀਂ ਛਮਾਹੀ ਬੈਠਕ ਵਿੱਚ ਕੀਤਾ ਗਿਆ।



ਦਿੱਲੀ ਬੈਂਕ ਨਰਾਕਾਸ ਅਧਿਕਾਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਸਮੀਰ ਬਾਜਪੇਹੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਕੁਮਾਰ ਪਾਲ ਸ਼ਰਮਾ (ਉਪ ਨਿਦੇਸ਼ਕ-ਕਾਰਧਨਵਿਧਨ, ਉਤਰੀ ਕ੍਷ੇਤਰੀ ਕਾਰਧਨਵਿਧਨ ਕਾਰਧਾਲਿਆਂ-1, ਗੁਰੂ ਮੰਤਰਾਲਾਵ, ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ) ਤਥਾ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਜੇਸ਼ ਸ਼੍ਰੀਵਾਸਤਵ (ਉਪ ਨਿਦੇਸ਼ਕ- ਨੀਤੀ, ਗੁਰੂ ਮੰਤਰਾਲਾਵ, ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ) ਦੇ ਕਰ ਕਮਲਾਂ ਦੀ ਵੇਖਾਂ ਵਿੱਚ ਬੈਂਕ ਦੇ ਮਹਾਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸਹ ਮੁਖਾਂ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਅਧਿਕਾਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਗਜਰਾਜ ਦੇਵੀ ਸਿੰਘ ਠਾਕੁਰ ਤਥਾ ਮੁਖ ਪ੍ਰਬੰਧਕ (ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ) ਸ਼੍ਰੀ ਨਿਖਿਲ ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ ਉਤਸ਼ਾਹ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਿਏ।



ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ

ਬੈਂਕ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਾਰਜਿਲਿਆਂ ਵਿੱਚ ਹਿੱਤੀ ਪੜਵਾਡ ।-2023 ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਆਯੋਜਿਤ ਵਿਭਿੰਨ ਪ੍ਰਤਿਯੋਗਿਤਾ ਦੇ ਵਿਜੇਤਾਵਾਂ ਕੇ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ ਵਿਤਵਣ ਮਹੋਦਾਯ ਡਾਕਾਂ ਮਹੋਦਾਯ ਤਥਾ ਕਾਰਜਕਾਰੀ ਨਿਵੇਦਕ ਮਹੋਦਾਯ ਸ਼੍ਰੀ ਬਵਿ ਮੇਹਨਾ ਕੇ ਕਾਰਜ ਕਮਲਾਂ ਕੇ ਪੁਰਸ਼ਕ੃ਤ ਕਿਯਾ ਗਿਆ। ਇਹ ਅਕਸਰ ਪੰਜਾਬ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਮਾਂਨੰਦੀ ਗਤਿਵਿਧੀਆਂ ਵਿੱਚ ਭਾਗ ਲੇਨੇ ਦੇ ਲਿਏ ਪ੍ਰੇਮਿਤ ਕਿਯਾ ਗਿਆ। ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ ਵਿਤਵਣ ਮਾਸਾਵਾਂ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਸੁਖਵਿੰਦੀ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਦੀ ਸਹਿਯੋਗ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਏ।



ਵਿਤਰਣ ਸਮਾਰੋਹ -2023

ਸਮਾਰੋਹ ਦੇ ਅਵਸਥਾ ਪਾਰ ਮਾਨਸੀਯ ਪ੍ਰਬੰਧ ਨਿਦੇਵਾਕ ਏਂ ਸੁਖਵਿੰਦੀ ਕਾਰਗਕਾਰੀ ਅਧਿਕਾਰੀ ਸਹੋਦਾਂ ਸ਼੍ਰੀ ਬਲਕੱਧ ਕੁਮਾਰ ਆਹਾ, ਕਾਰਗਕਾਰੀ ਨਿਦੇਵਾਕ ਸਹਾਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸ਼੍ਰੀ ਵਿਕੋ਷ ਕੱਪ ਅਤੇ ਉਪਕਾਰੀ ਕਾਰਗਕਾਰੀ ਅਧਿਕਾਰੀ ਸਹੋਦਾਂ ਸ਼੍ਰੀ ਪੁਕਕੁਤ ਪ੍ਰਤਿਆਗਿਧਿਆਂ ਕੇ ਬਧਾਈ ਦੀ ਔਰਾਂ ਤਨ੍ਹੇ ਇਸੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਬੈਂਕ ਦੀ ਸ਼੍ਰੀ ਗਜ਼ਾਜ ਦੇਵੀ ਮਿਂਹ ਗਕੁਰ ਨੇ ਪੜਵਾਡ 1-2023 ਕੇ ਝਾਫਲ ਬਨਾਨੇ ਦੇ ਲਿਏ ਮਸ਼ਨ ਵਿਆਹੀ ਪ੍ਰਤਿਨਿਧਿਆਂ ਕਾ ਆਸਾਨ ਵਾਤ ਕਿਯਾ।



साख सूचना कंपनियां (Credit Information Companies)

साख सूचना कंपनी (सीआईसी) एक ऐसा संगठन है जो किसी वैयक्तिक, फर्म या कंपनी द्वारा उपभोग किए गए ऋण सुविधा के संबंध में किसी आधार (Repository) के रूप में कार्य करता है; वैयक्तिक और कंपनियों के विषय में ऋण और उधार संबंधी डेटा एकत्र कर उनका विश्लेषण करता है और उन्हीं डेटा के आधार पर अपने उत्पादों और सेवाओं को तैयार करता है। सीआईसी को इस प्रकार के आंकड़े उनके सदस्य बैंकों और अन्य ऋणदाता संस्थानों द्वारा प्रदान किया जाता है। वैयक्तिक डेटा के आधार पर साख सूचना कंपनी, साख सूचना रिपोर्ट और क्रेडिट स्कोर तथा कंपनियों के डेटा के आधार पर कंपनी साख रिपोर्ट (सीसीआर) तैयार करती है।

जब कोई व्यक्ति किसी ऋणदाता यथा बैंक अथवा गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी इत्यादि के पास उधार/ऋण के लिए आवेदन करता है तो ऋणदाता, आवेदक या उधारकर्ता का क्रेडिट स्कोर और साख सूचना रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए इन साख सूचना कंपनी का अभियान करते हैं। उधारकर्ता के विषय में क्रेडिट स्कोर और क्रेडिट सूचना रिपोर्ट, ऋणदाता को आवेदक की क्रेडिट-योग्यता और पुनर्भुगतान व्यवहार समझने में मदद करती है। चूंकि ये रिपोर्टें, उधारदाता को आवेदक-उधारकर्ता के ऋण चुकाने की क्षमता और उनके चूक की संभावना के आंकलन में सक्षम करती हैं इसलिए ऋणदाता के लिए ऋण प्रसंस्करण करने या न करने के निर्णय में सहायक होती है। साख सूचना कंपनियों को भारत में क्रेडिट ब्यूरो के रूप में भी जाना जाता है। उर्वे प्रत्यय विषयक जानकारी कंपनी (विनियमन) अधिनियम, 2005 के अंतर्गत भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा देश में कार्य करने हेतु अनुज्ञापित किया गया है।



चूंकि क्रेडिट रिपोर्ट में उधारकर्ताओं की संवेदनशील, वित्तीय और व्यक्तिगत जानकारी निर्दिष्ट होती है इसलिए निम्नलिखित के अतिरिक्त इन ब्यूरो को संबंधित व्यक्ति की सहमति के बिना अनधिकृत व्यक्तियों या संगठनों के लिए उधारकर्ता की वित्तीय और व्यक्तिगत जानकारी प्रदान करने की अनुमति नहीं है:

- उधारकर्ता के नियोक्ता
- उधारकर्ता के भू-स्वामी
- जनोपयोगी सेवा प्रदाता
- भारत सरकार
- ऋणदाता, बैंक, वित्तीय संस्थान

क्रेडिट डेटा क्या है? इसे साख सूचना कंपनी (सीआईसी) के पास अनुरक्षित क्यों किया जाता है?

क्रेडिट डेटा, किसी व्यक्ति या कंपनी के ऋण भुगतान करने के व्यवहार के विषय में जानकारी है, जिसे विशेष रूप से बैंकों / उधारदाताओं द्वारा किसी को उधार देने के निर्णयन से पूर्व संदर्भित किया जाता है। यह डेटा, सदस्य बैंकों या अन्य वित्तीय संस्थानों द्वारा सीआईसी को नियमित आधार पर प्रदान किया जाता है ताकि नए उधारकर्ता के मामले में या तो क्रेडिट इतिहास बनाया जा सके या विद्यमान उधारकर्ता के मामले में इसे संशोधित, उन्नत अथवा न्यून किया जा सके।

प्रत्यय विषयक जानकारी कंपनी अधिनियम :

प्रत्यय विषयक जानकारी कंपनी (विनियमन) अधिनियम, 2005 (सीआईसी अधिनियम), भारत में साख सूचना कंपनियों (सीआईसी) के कार्यों को विनियमित करने और ऋण के कुशल और समीचीन प्रसार की सुविधा के लिए भारत सरकार द्वारा अधिनियमित एक कानून है। सीआईसी अधिनियम के अनुसारण में भारतीय रिजर्व बैंक और भारत सरकार द्वारा अधिनियम के अंतर्गत क्रमशः प्रत्यय विषयक जानकारी कंपनी विनियमन, 2006 (विनियमन) और प्रत्यय विषयक जानकारी कंपनी नियम, 2006 (नियम) अधिनियमित किए गए हैं। सीआईसी अधिनियम, विनियमनों और नियमों को सामूहिक रूप से सीआईसी कानून के रूप में संदर्भित किया जाता है।

सीआईसी के सदस्य : सीआईसी अधिनियम के अनुसार केवल निम्नलिखित संगठन ही सीआईसी के सदस्य बन सकते हैं :

- ऋण संस्थान
- साख सूचना
- कंपनियां
- निर्दिष्ट उपयोगकर्ता



1. ट्रांसयूनियन सिबिल (भारतीय साख सूचना ब्यूरो लिमिटेड):

सिबिल, अगस्त- 2000 में भारत की वित्तीय राजधानी मुंबई में अस्तित्व में आया। भारत के प्रथम क्रेडिट ब्यूरो के रूप में प्रवर्तित सिबिल, वर्ष 2004 में उपभोक्ता परिचालन में आया और वर्ष 2006 में वाणिज्यिक क्रेडिट परिचालन में आया। इसके बाद उन्होंने वर्ष 2007 में सिबिल स्कोर नाम से अपना क्रेडिट स्कोर प्रवर्तित किया। सिबिल का विस्तार लगभग 2400 सदस्यों तक हो गया है जिसमें विभिन्न बैंक और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां शामिल हैं। वर्ष 2011 में ट्रांसयूनियन सिबिल ने अपने सिबिल स्कोर को व्यक्तिगत उपभोक्ताओं के लिए भी उपलब्ध करा दिया है। ट्रांसयूनियन सिबिल द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न सुविधाएं/रिपोर्ट निम्नानुसार हैं :

- उपभोक्ता ब्यूरो (Consumer Bureau) :** अत्यधिक व्यापक सिबिल उपभोक्ता रिपोर्ट, संभावित और विद्यमान उधारकर्ताओं के क्रेडिट इतिहास पर व्यापक डेटा प्रदान करती है जो जोखिम न्यून करते हुए बैंकों/ वित्तीय संस्थानों को अधिक आत्मविश्वास के साथ ऋण देने के लिए सशक्त करती है। यह ऋणदाता संस्थानों को उपभोक्ता के उधार के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जोखिम क्षेत्रों की पहचान करने तथा त्वरित और अधिक दक्षता के साथ ऋण वितरण में सहायक होता है। सिबिल उपभोक्ता क्रेडिट स्कोर **300 से 900** के मध्य होता है जिसमें अधिक स्कोर उपभोक्ता की बेहतर स्थिति की ओर संकेत करता है।
- वाणिज्यिक ब्यूरो (Commercial Bureau) :** सिबिल वाणिज्यिक रिपोर्ट हमें संभावित वाणिज्यिक उधारकर्ताओं पर व्यापक और बहु-आयामी क्रेडिट फाइल जानकारी प्रदान करती है ताकि ऋण देने वाले संस्थान, उधारकर्ताओं के वित्तीय दायित्वों का मूल्यांकन कर सकें तथा समर्ती और क्रमिक चूक के दृष्टांतों को न्यून कर सके। इन उधारकर्ताओं में अन्य लोगों के अतिरिक्त सार्वजनिक लिमिटेड कंपनियां, निजी लिमिटेड कंपनियां, साझेदारी फर्म और स्वामित्व शामिल हैं। सिबिल वाणिज्यिक श्रेणी सामान्यतः **सीएमआर 1 से सीएमआर 10** तक होती है जिसमें सीएमआर 1 सर्वोच्च संभावित श्रेणी है।
- आईस्कैन (IScan) :** सिबिल आईस्कैन का उद्देश्य वित्तीय संस्थानों को अच्य वित्तीय संस्थानों के साथ इकाई के समस्त क्रेडिट संबंधों का संक्षिप्त दृश्य प्रदान करके चालू खाते खोलने में संभावित जोखिम और समय को न्यून करने में सहायता प्रदान करना है। इससे बैंकों को उधार लेने वाली संस्थाओं के बीच क्रेडिट अनुशासन निर्मित व पोषित करने के अतिरिक्त अन्य वित्तीय संस्थानों में चालू खाता आवेदकों के क्रेडिट इतिहास/ संबंधों की निगरानी में सहायता मिलेगी।
- बंधक ब्यूरो (Mortgage Bureau) :** यह ऋण देने वाले संस्थानों में संपत्तियों के विरुद्ध ऋण के विषय में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, धोखाधड़ी वाले लेनदेन को कम करने, समुचित सावधानी आयोजित करने तथा प्रक्रिया में बैंक हितों की रक्षा करने में सहायक होता है।
- ई-सत्यापन ब्यूरो (E-verify Bureau) :** ई-सत्यापन या बायोमेट्रिक सत्यापन, ग्राहकों या संभावित ग्राहकों की पहचान सत्यापित करने के लिए एक उन्नत और कॉन्फिगर योग्य समाधान है। यह ऋणदाता संगठन को तृतीय पक्ष के डेटाबेस से जोड़ता है और उन्हें ग्राहकों की आईडी क्रेडेंशियल सत्यापित करने में सहायता करता है।

2. इक्विफैक्स (EQUIFAX) :

इक्विफैक्स की स्थापना वर्ष 1899 में अटलांटा (संयुक्त राज्य अमेरिका) में रिटेल क्रेडिट कंपनी के रूप में की गई थी। यह विश्व की सर्वाधिक पुरानी साख सूचना कंपनियों में से एक है। इक्विफैक्स ने वर्ष 2010 में इक्विफैक्स क्रेडिट इंफॉर्मेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड (ईसीआईएस) के नाम से भारत में अपनी सेवाएं सुचीबद्ध की। इक्विफैक्स इंडिया का उद्देश्य लाखों अंतर्देशीय उपभोक्ताओं की जनसांख्यिकीय और क्रेडिट पुनर्भुगतान जानकारी को व्यवस्थित करना, समेकित करना, परीक्षण करना और उनका निष्कर्ष निकालना है। इक्विफैक्स ने वैयक्तिक उपभोक्ताओं और व्यवसायों के लाखों वित्तीय डेटा रिकॉर्ड को आत्मसात करके भारत में अविश्वसनीय वृद्धि दर्ज की है। इक्विफैक्स उपभोक्ता क्रेडिट स्कोर **300 से 900** के मध्य होता है जिसमें उच्च अंक को अपेक्षाकृत बेहतर माना जाता है।



3. एक्सपीरियन (EXPERIAN)

फोर्ब्स की सूची के अनुसार सबसे नवोन्मेष कंपनियों में से एक, एक्सपीरियन क्रेडिट इंफॉर्मेशन कंपनी ने वर्ष 2006 में भारत में अपना परिचालन शुरू किया है तथा व्यक्तियों और अन्य संस्थाओं के लिए विभिन्न क्रेडिट रिपोर्ट प्रदान करके यह कंपनी वित्तीय क्षेत्र को समर्थ व विस्तारित कर रहा है। एक्सपीरियन अपने ग्राहकों को निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करता है : उपभोक्ता के क्रेडिट जोखिम का मूल्यांकन, ग्राहक अधिग्रहण, ऋण और उधार धोखाधड़ी की रोकथाम, व्यवसाय सूचना रिपोर्ट, क्रेडिट मार्केटिंग का विश्लेषण, भुगतान प्रसंस्करण और सत्यापन, ऋण संग्रहण और वसूली, क्रेडिट जोखिम प्रबंधन और अन्य ऋण तथा क्रेडिट संबंधित सेवाएं।

एक्सपीरियन सीआईआर (Experian CIR), एक्सेसर को उपभोक्ता के ऋण/ उधार की व्यापक जानकारी देता है। एक्सपीरियन द्वारा निर्मित क्रेडिट स्कोर एक संख्यात्मक आंकड़ा है जो उपभोक्ता की वित्तीय प्रोफाइल का प्रतिनिधित्व करता है। एक्सपीरियन क्रेडिट स्कोर, उपभोक्ता द्वारा उनके उधार और/या ऋण के भुगतान करने की संभाव्यता को प्रदर्शित करता है। एक्सपीरियन क्रेडिट इंफॉर्मेशन रिपोर्ट (सीआईआर) में क्रेडिट खातों और क्रेडिट पूछताछ से संबंधित डेटा होता है। इसमें पहचान, व्यय, उधार/ऋण खाते या कार्ड, वर्तमान पूछताछ इत्यादि सहित ऋण/उधार इतिहास का संपूर्ण विवरण शामिल है। एक्सपीरियन सीआईआर संपूर्ण क्रेडिट इतिहास का संचयन है। एक्सपीरियन क्रेडिट स्कोर सामान्यतः **300 से 850** के मध्य होता है।

4. सीआरआईएफ हाई मार्क क्रेडिट इंफोर्मेशन सर्विसेज :

सीआरआईएफ हाई मार्क (CRIF HighMark) को पूर्व में हाई मार्क के नाम से जाना जाता था। इसकी स्थापना वर्ष 2007 में भारत में हुई थी। इसे वर्ष 2010 में क्रेडिट ब्यूरो के रूप में कार्य करने के लिए पंजीकरण प्रमाण-पत्र प्राप्त हुआ। तत्पश्चात वर्ष 2014 में, इटली स्थित फर्म सीआरआईएफ (CRIF) ने हाई मार्क का अधिग्रहण कर लिया। सीआरआईएफ, विश्व में एक प्रसिद्ध वित्तीय सेवा ब्रांड है जो बैंकों और वित्तीय संस्थानों को अपनी सेवाओं के लिए जाना जाता है।

सीआरआईएफ हाई मार्क (CRIF High Mark) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों, वाणिज्यिक और खुदरा उपभोक्ताओं, देनदारों और गारंटरों तथा माइक्रोफाइंस लाभार्थियों को सेवा प्रदान करने वाली कंपनियों की एक विस्तृत शृंखला को अपनी सेवाएं प्रदान करने के लिए जाना जाता है। यह अपनी वेबसाइट के माध्यम से भी सेवाएं प्रदान करता है जहां कोई भी सूक्ष्म वित्त ब्यूरो, उपभोक्ता ब्यूरो, वाणिज्यिक ब्यूरो, व्यावसायिक सूचना रिपोर्ट और अन्य सेवाओं जैसे समाधान और सेवाओं को प्राप्त कर सकता है और उन तक अभिगम कर सकता है।

क्रेडिट स्कोर को उन्नत करने के उपाय :

- (i) उपभोग किए गए कुल ऋण में प्रतिश्वृति अग्रिम का उच्च प्रतिशत, क्रेडिट स्कोर पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।
- (ii) स्वीकृत लिमिट का उच्च औसत उपयोग, क्रेडिट स्कोर पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।
- (iii) औसत उपयोग, क्रेडिट कार्ड सीमा के लिए स्वीकृत सीमा का लगभग 30% अनुरक्षित किया जाना चाहिए।
- (iv) लिए गए ऋण की उच्च औसत अवधि का क्रेडिट स्कोर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- (v) मोबाइल नंबर, पता आदि में नियमित संशोधन और बार-बार पूछताछ, क्रेडिट स्कोर पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

साथ सूचना कंपनियों (सीआईसी) को डेटा प्रस्तुतिकरण :

समस्त बकाया अग्रिमों (निधिक + गैर-निधिक) की जानकारी से संबंधित डेटा, फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल (एफटीपी) के माध्यम से मासिक उधार पर सभी क्रेडिट सूचना कंपनियों (सीआईसी) को प्रस्तुत किया जाता है। माह समाप्ति पर एक सत्राह के भीतर सीआईसी के साथ डेटा साझा किया जाता है और क्रेडिट सूचना कंपनियों की ओर से इसे अद्यतित होने में लगभग 7 से 10 दिन का समय लगता है। इसके पश्चात खातों की अद्यतन स्थिति उधारकर्ताओं की क्रेडिट रिपोर्ट में प्रदर्शित होने लगती है।

स्वीकृति दर (Acceptance Rate) : क्रेडिट सूचना कंपनियों को प्रस्तुत किए गए डेटा के लिए स्वीकृति दर को बैंक द्वारा सीआईसी को प्रस्तुत किए गए कुल रिकॉर्ड में से क्रेडिट सूचना कंपनियों द्वारा सफलतापूर्वक अपलोड किए गए रिकॉर्ड के प्रतिशत के रूप में परिभाषित किया गया है। क्रेडिट सूचना कंपनियों को प्रस्तुत आंकड़ों में लगभग 7 लाख ऋण खाते शामिल हैं, जहां कुल रिकॉर्ड लगभग 11 लाख हैं, इसमें उधारकर्ता, गारंटर और संयुक्त धारक शामिल हैं। उपभोक्ता डेटा के लिए बैंक की डेटा स्वीकृति दर वर्तमान में 97.50% है, शेष 2.50% (लगभग 27500 खाते) को विभिन्न डेटा गुणवत्ता विषयों के कारण अस्वीकार कर दिया जाता है। वाणिज्यिक डेटा के लिए स्वीकृति दर 99.92% है।

डेटा अस्वीकृति के कारण अल्प स्वीकृति दर के प्रमुख कारक इस प्रकार हैं:

1. त्रुटि - उपभोक्ता नाम अमान्य (ERROR –Consumer_Name_Invalid) : इस प्रकार की त्रुटि तब होती है जब उधारकर्ता के नाम में कुछ विशेष अक्षर होते हैं। चूंकि उपभोक्ता रिपोर्ट के लिए उधारकर्ता (वैयक्तिक) के नाम के भाग के रूप में विशेष वर्ण स्वीकार्य नहीं हैं इसलिए सीआईसी द्वारा रिकॉर्ड को अस्वीकार कर दिया जाता है। यदि वैयक्तिक उधारकर्ताओं के लिए नाम फील्ड में “and” प्रविष्ट है तो भी रिकॉर्ड अस्वीकार कर दिए जाते हैं।

समाधान : ऋण खाते से जुड़े समस्त उधारकर्ताओं और गारंटरों की ग्राहक आईडी की जांच करें तथा विशेष वर्ण या असंबंधित शब्द यथा “AND”, “S/O”, “D/O”, “W/O” इत्यादि हटा दें।

2. त्रुटि - स्वामित्व_सूचक_अमान्य ,ERROR – Ownership_Indicator_Invalid) : इस प्रकार की त्रुटि तब सामने आती है जब उधारकर्ता का संघटन कोड, उधारकर्ता की इकाई प्रकार से असंबद्ध होता है।

समाधान : उधारकर्ता का सही “संघटन कोड” भरें। उदाहरण के लिए यदि उधारकर्ता कोई व्यक्ति है तो उस स्थिति में संघटन कोड “वैयक्तिक” होना चाहिए। जहां उधारकर्ता कोई फर्म है, संघटन कोड “वैयक्तिक” के स्थान पर प्रोपराइटर, पार्टनरशिप, एचयूएफ, प्राइवेट लिमिटेड इत्यादि होना चाहिए।

3. त्रुटि-राज्य कोड/ पिन कोड संयोजन अमान्य (ERROR – State Code/ PIN Code Combination Invalid) : इस प्रकार की त्रुटि तब दृष्टिगत होती है जब ग्राहक आईडी में राज्य कोड और पिन कोड ठीक से प्रविष्ट नहीं की जाती है।



समस्यान : समस्त उधारकर्ताओं और गारंटरों की ऋण खाते से जुड़े ग्राहक आईडी की जांच करें और जहां भी पिन कोड गलत है या प्रविष्ट नहीं है, वहां सही पिन कोड डालें। “शहर”, “राज्य” और “पिन” की जांच करें। सुनिश्चित करें कि इन मापदंडों का संयोजन वैध है। वैध पता संयोजन बनाने के लिए शहर, पिन और राज्य को उचित प्रकार से प्रविष्ट किया जाना चाहिए।

किसी बैंक के विद्यमान उधारकर्ताओं जिन्होंने स्वामित्व, साझेदारी फर्मों आदि के लिए ऋण सुविधाओं का लाभ उठाया है, की रिपोर्ट तैयार करते समय एक बड़ी विसंगति देखी गई है, वह यह है कि उपभोग की गई ऋण सुविधाएं, वैयक्तिक उपभोक्ता क्रेडिट रिपोर्ट में प्रतिबिंबित नहीं होती हैं। इस विसंगति का प्राथमिक कारण ऋण/लिमिट खातों में फर्म के स्वामी/हितधारकों के गलत चिह्नकन को माना जा सकता है। यह ध्यातव्य है कि फर्म मालिकों को उचित संबंध प्रकार के साथ चिह्नित किया जाना चाहिए। यह पाया गया है कि अधिकांश प्रकरणों में या तो हितधारकों को खातों से संबद्ध नहीं किया जाता है अथवा उन्हें “प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता” के रूप में चिह्नित किया जाता है, परिणामस्वरूप ऋण सुविधा से संबद्ध उधारकर्ता के रूप में वैयक्तिक की जानकारी, साख सूचना कंपनीयों को प्रेषित नहीं की जाती है।

बैंक शाखाओं/वित्तीय संस्थानों को प्रत्येक प्रकार के उधारकर्ता के लिए रिलेशन टाइप फील्ड में उचित प्रविष्ट करना चाहिए जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी संबद्ध व्यक्तियों/ संस्थाओं के संबंध में साख सूचना कंपनीयों को सूचित किया जाता है और उनके द्वारा उपभोग की गई ऋण सुविधाएं उधारकर्ताओं की क्रेडिट रिपोर्ट में परिलक्षित हो रही है।

साख सूचना कंपनी (सीआईसी) से संबंधित विवाद और तत्संबंधी समाधान:

ऋण प्रस्तावों पर कार्रवाई के समय उधारकर्ताओं द्वारा अनेक समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है। ये विवाद मुख्यतः केराइसी और ऋण खातों की गलत मैपिंग, डेटा रिपोर्टिंग समस्या तथा उधारकर्ता की क्रेडिट रिपोर्ट में प्रतिबिंबित नहीं होने वाले खातों से संबंधित होते हैं। समस्याओं के लिए हमें सर्वप्रथम समस्या के प्रकार की जांच और उनकी पहचान करनी होगी और नीचे दिए गए निर्देशानुसार आवश्यक प्रक्रिया करनी होगी :

(1) **केराइसी और ऋण खातों की गलत मैपिंग :** यदि सीआईसी रिपोर्ट त्रुटिपूर्ण केराइसी (पैन, यूआईडी, वोटर आईडी, डीएल) अथवा त्रुटिपूर्ण व्यक्तिगत विवरण (नाम, मोबाइल, पता इत्यादि) तथा गलत तरीके से मैप किए गए ऋण खाते जिनका उपभोग उधारकर्ता/ शिकायतकर्ता द्वारा नहीं किया गया है, जैसे विषयों को प्रतिबिंबित कर रही है।

समाधान : ट्रांसयूनियन ने एक स्वयं सेवा लिंक (<https://www.cibil.com/self-service-portal/fetch-report-details.action>) उपलब्ध कराया है जो उपभोक्ता रिपोर्ट में प्रतिबिंबित ऋण खातों के विवरण की जांच करने में सहायक है। यह उपभोक्ता को उसके ऋण खाते की जानकारी प्राप्त करने में सक्षम करेगा। यदि दर्शाया गया खाता आपकी संस्था से संबंधित नहीं है तो समस्या के समाधान के लिए ग्राहक को डेटा रिपोर्टिंग संस्था/बैंक से संपर्क करने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए।

(2) **डेटा रिपोर्टिंग समस्याएं और क्रेडिट रिपोर्ट में खाता का प्रतिबिंबित नहीं होना** कभी-कभी किसी उधारकर्ता/व्यक्ति के लिए क्रेडिट रिपोर्ट तैयार करने पर यह पाया जाता है कि कुछ ऋण खाते, क्रेडिट रिपोर्ट में प्रतिबिंबित नहीं होते हैं और उधार खाता इतिहास से संबंधित कुछ अन्य समस्याएं दृष्टिगत होती है।

यदि किसी त्रुटि या तकनीकी समस्या के कारण क्रेडिट सूचना कंपनियों को गलत डेटा की सूचना दी जाती है तो रिपोर्ट किए गए डेटा में सुधार के लिए फॉर्म, संबंधित सीआईसी को नोडल कार्यालय के माध्यम से भेजा जाता है।

साख सूचना कंपनियों से मांगी गई किसी भी जानकारी/ प्रश्न के लिए निर्धारित टर्न अराउंड टाइम (टीएटी) 5 दिन और किसी भी विवाद के समाधान/रिपोर्ट किए गए डेटा में बदलाव के लिए टर्न अराउंड टाइम (टीएटी), ओएलएम/सीआईसी को सूचित किए जाने की तिथि से 30 दिन निर्धारित है।

साख सूचना कंपनी प्रभार : सीआईसी से विभिन्न प्रकार की सेवाओं का लाभ उठाने के लिए उधारकर्ताओं/ आवेदकों से शुल्क प्रभारित किए जाते हैं जो संबंधित सीआईसी के साथ विभिन्न संस्थानों द्वारा किए गए यथासंशोधित करार के अधीन उधारकर्ताओं/आवेदकों से वसूल किया जाता है।



ध्यान रखने योग्य बातें:

- **वैयक्तिक उपभोक्ताओं के लिए सिबिल क्रेडिट स्कोर और सिबिल क्रेडिट रिपोर्ट, सिबिल की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। सिबिल क्रेडिट रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए कोई व्यक्ति, सिबिल की वेबसाइट पर लॉग - इन कर सकता है और लेनदेन को प्रमाणित करने के लिए ऑनलाइन फॉर्म में आवश्यक विवरण भर सकता है। इसके बाद व्यक्ति को अपने पंजीकृत ईमेल आईडी पर अपने क्रेडिट स्कोर और रिपोर्ट प्राप्त होगी।**
- **क्रेडिट रिपोर्ट में न्यू टू क्रेडिट (एनटीसी)/-1 स्कोर :** नए क्रेडिट उपभोक्ताओं या संस्थाओं को उन संस्थाओं/व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया गया है जिनका सीआईसी डेटाबेस में कोई क्रेडिट इतिहास नहीं है। ऐसे व्यक्तियों या संस्थाओं के लिए क्रेडिट रिपोर्ट में क्रेडिट स्कोर ‘-1 /नो हिस्ट्री’ के रूप में परिलक्षित होता है।

प्रधान कार्यालय ऋण निगरानी विभाग द्वारा संकलित।

ਰਾਜਮਾਲਾ ਉਪਲਵਿਧਿਆਂ



ਰਾਜਮਾਲਾ ਹਿੰਦੀ ਕੇ ਤਕ੍ਰਿਤ ਕਾਰਾਨਵਚਨ ਹੇਤੁ ਨਗਰ ਰਾਜਮਾਲਾ ਕਾਰਾਨਵਚਨ ਸਾਮਿਤੀ, ਹੋਸ਼ਿਆਰਪੁਰ ਦੀਆਰਾ ਆਯੋਜਿਤ ਰਾਜਮਾਲਾ ਸ਼ੀਲਡ ਪ੍ਰਤਿਯੋਗਿਤਾ 2022-23 ਮੋਂ ਬੈਂਕ ਦੇ ਆਂਖਲਿਕ ਕਾਰਾਲਿਅਤ ਹੋਸ਼ਿਆਰਪੁਰ ਕੋ ਦ੍ਰਿੰਤੀਅਕ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁਆ। ਗ੍ਰਹ ਮੰਤਰਾਲਾਯ ਕੇ ਪ੍ਰਤਿਨਿਧਿ ਸ਼੍ਰੀ ਨਰੰਦਰ ਸਿੰਹ ਮੇਹਰਾ ਤਥਾ ਨਰਾਕਾਸ ਅਧਿਕਾਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਸੰਜੀਵ ਕੁਮਾਰ ਦੀਆਰਾ ਯਹ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ ਬੈਂਕ ਦੇ ਮੁਖਾਂ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸ਼੍ਰੀ ਨਰੇਸ਼ ਚੰਦਰ ਸਹਦੇਵ ਅਤੇ ਰਾਜਮਾਲਾ ਅਧਿਕਾਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਹਲ ਰੰਜਨ ਕੋ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਿਯਾ ਗਿਆ।



ਬੈਂਕ ਦੀਆਰਾ ਵੀਮਾ ਕਾਰਾਲਿਅਤ ਦੀ ਸ਼੍ਰੇਣੀ ਮੋਂ ਵਰ्ष 2022-23 ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਭਾਰਤ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਰਾਜਮਾਲਾ ਨੀਤੀ ਦੇ ਸਫਲ ਕਾਰਾਨਵਚਨ ਕੇ ਲਿਏ ਬੈਂਕ ਦੀ ਦੀਆਰਾ ਹਿੰਦੀ ਮੰਡੀ, ਆਗਰਾ ਦੀ ਰਾਜਮਾਲਾ ਸ਼ੀਲਡ-ਦ੍ਰਿੰਤੀਅਕ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਿਯਾ ਗਿਆ। ਨਰਾਕਾਸ ਦੀ ਛਮਾਹੀ ਬੈਠਕ ਮੋਂ ਦੀਆਰਾ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸ਼੍ਰੀ ਬਜ਼ਦੁੱਗ ਲਾਲ ਜਾਟ ਨੇ ਯਹ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ ਨਰਾਕਾਸ ਅਧਿਕਾਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਜੋਗਿੰਦਰ ਸਿੰਹ ਘਨਘਸ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਿਯਾ।



ਬੈਂਕ ਦੀਆਰਾ ਮਨਾਲੀ ਦੀ ਵਰ਷ 2022-23 ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਰਾਜਮਾਲਾ ਕੇ ਕੇਤੇ ਮੋਂ ਤਕ੍ਰਿਤ ਕਾਰਾਂ ਕਰਨੇ ਦੇ ਲਿਏ ਨਗਰ ਰਾਜਮਾਲਾ ਕਾਰਾਨਵਚਨ ਸਾਮਿਤੀ ਕੁਲ੍ਹੂ-ਮਨਾਲੀ ਦੀਆਰਾ ਪ੍ਰੋਤਸਾਹਨ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਿਯਾ ਗਿਆ। 15 ਦਿੱਤੰਬਰ, 2023 ਦੀ ਆਯੋਜਿਤ ਨਰਾਕਾਸ ਕੁਲ੍ਹੂ-ਮਨਾਲੀ ਦੀ ਛਮਾਹੀ ਬੈਠਕ ਮੋਂ ਨਰਾਕਾਸ ਅਧਿਕਾਰੀ ਕੇ ਕਰ ਕਮਲਾਂ ਦੀ ਦੀਆਰਾ ਪ੍ਰਮਾਦੀ ਸ਼੍ਰੀ ਅਰੁਣ ਕੁਮਾਰ ਨੇ ਤੱਤ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ ਗ੍ਰਹਣ ਕਿਯਾ।

ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਸੰਗੋ਷਼ੀ



ਅੰਚਲ ਮੌਜੂਦਾ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਕਾਰਾਨਵਿਧਨ ਕੋ ਗਤਿ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਨੇ ਦੀ ਲਿਏ ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਾਲਿਯ ਲੁਧਿਆਣਾ ਮੌਜੂਦਾ 20 ਅਕਤੂਬਰ, 2023 ਕੋ ਆਂਚਲਿਕ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਸ਼੍ਰੀ ਵਿਨਿਯ ਖੰਡੇਲਵਾਲ ਕੀ ਅਧਿਕਤਾ ਮੌਜੂਦਾ ਮੌਜੂਦਾ "ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਹਿੰਦੀ : ਪਟਿਚਾਇ ਔਰ ਮਹੱਤਵ" ਵਿਥਿ ਪਰ ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ ਸੰਗੋ਷਼ੀ ਕਾ ਆਯੋਜਨ ਕਿਯਾ ਗਿਆ। ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਾਲਿਯ ਲੁਧਿਆਣਾ ਮੌਜੂਦਾ ਪਦਦਸ਼ਟ ਸਟਾਫ ਸਦਸ਼ਿਆਂ ਤਥਾ ਲੁਧਿਆਣਾ ਨਗਰ ਮੌਜੂਦਾ ਸੰਚਾਲਿਤ ਬੈਂਕ ਸ਼ਾਖਾ ਕੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖਿਆਂ ਨੇ ਇਸ ਸੰਗੋ਷਼ੀ ਮੌਜੂਦਾ ਸਹਮਾਂਗਿਤ ਕੀ ਗਿਆ। ਇੰਡੀਅਨ ਓਵਰਸੀਜ ਬੈਂਕ ਕੇ ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਾਲਿਯ ਲੁਧਿਆਣਾ ਮੌਜੂਦਾ ਮੁਖ ਪ੍ਰਬੰਧਕ (ਰਾਜਭਾਸ਼ਾ) ਸ਼੍ਰੀ ਆਦਰਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਗੁਪਤਾ ਕੋ ਸੰਗੋ਷਼ੀ ਮੌਜੂਦਾ ਵਰਤੋਂ ਦੀ ਰੂਪ ਮੌਜੂਦਾ ਆਮਾਂਤਰਿਤ ਕਿਯਾ ਗਿਆ ਥਾ।



ਕਾਵਯ-ਮੁੰਤ੍ਰਧਾ

ਗਜ਼ਲ



ਆਰ. ਪੀ. ਸਿੰਹ
ਪੂਰਵ ਅਧਿਕਾਰੀ ਅਤੇ ਪ੍ਰਬੰਧ ਨਿਵੇਸ਼ਕ
ਪੰਜਾਬ ਏਂਡ ਸਿੱਖ ਬੈਂਕ

ਆਦਮੀ ਪਹਲੇ ਤੋ ਲਾਜਿਮ ਹੈ ਕਿ ਇੱਨਸਾਨ ਬਨੇ
ਫਿਰ ਭਲੇ ਹਿੰਦੂ, ਇਸਾਈ ਯਾ ਮੁਸਲਮਾਨ ਬਨੇ

ਸੀਖ ਪਾਧਾ ਨਹੀਂ ਜੋ ਧਾਰ ਕੇ ਅਕਥਰ ਢਾਈ
ਕਾਂਧੂ ਰਟੇ ਵੇਦ ਵੋ, ਕਾਂਧੂ ਛਾਫ਼ਿਜ਼ੇ— ਕੁਰਾਨ¹ ਬਨੇ

ਦਿਲ ਕੀ ਦੌਲਤ ਹੈ ਮਿਲੀ ਜਿਸਕੋ, ਹੈ ਵੋ ਸਾਬਦੇ ਅਮੀਰ
ਸੋਨੇ-ਚਾੱਦੀ ਸੇ ਨ ਹਰਗਿੜ ਕੋਈ ਧਨਵਾਨ ਬਨੇ

ਅਰਥ ਪੇ ਹੋਗੀ ਹੁਕੂਮਤ ਤੇਰੀ ਸ਼ਾਯਦ ਮੈਲਾ
ਇਸ ਜੰਮੀ ਪਰ ਤੋ ਕੋਈ ਔਰ ਹੈਂ ਭਗਵਾਨ ਬਨੇ

ਏ ‘ਸਦਾ’ ਉਨਕੀ ਨ ਤਕਲੀਦ² ਤੂ ਹਰਗਿੜ ਕਰਨਾ
ਕਰਕੇ ਤਕਲੀਦ ਜੋ ਹੈਂ ਸਾਹਿਬੇ-ਦੀਵਾਨ³ ਬਨੇ

1. ਕੁਰਾਨ ਕਠਨ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ, 2. ਨਕਲ 3. ਦੀਵਾਨ ਕਾ ਰਚਿਤਾ



ਨਿਗਾਹੋਂ-ਨਾਜ਼ ਕਾ ਖਾਲੀ ਗਿਆ ਨ ਤੀਰ ਕੋਈ
ਕਿਸੀ ਕੀ ਜਾਨ ਗੰਡੀ ਔਰ ਹੁਆ ਅਸੀਂਦੀ¹ ਕੋਈ

ਵਿਸਾਲੇ-ਧਾਰ² ਕਾ ਰਸਤਾ ਦਿਖਾ ਰਹੀ ਹੋ ਜੋ
ਹਮਾਰੇ ਹਾਥ ਮੈਂ ਦਿਖਤੀ ਨਹੀਂ ਲਕੀਰ ਕੋਈ

ਨ ਭੂਲਕਰ ਭੀ ਭਰੋਸਾ ਕਰੋ ਹਸੀਨੋਂ ਕਾ
ਨ ਇਨ ਬੁਤੋਂ ਕਾ ਖੁਦਾ ਹੈ, ਨ ਇਨਕਾ ਪੀਰ ਕੋਈ

ਕਭੀ-ਕਭੀ ਮੁੜੇ ਸਾਬਦੇ ਅਮੀਰ ਲਗਤਾ ਹੈ
ਗਲੀ ਕੇ ਮੋੜੇ ਪੇ ਬੈਠਾ ਹੁਆ ਫਕੀਰ ਕੋਈ

ਕਹਾਂ ਤਲਕ ਧੂੰ ਅਕੇਲੇ ਸਫਰ ਕਰੋਗੇ ‘ਸਦਾ’
ਤੁਝਾਰੇ ਸਾਥ ਨ ਰਹਿਰ ਨ ਰਾਹਗੀਰ ਕੋਈ

1. ਕੈਦੀ, 2. ਮਹਬੂਬ ਸੇ ਮਿਲਨ



ਕਹਾਂ ਪੇ ਤੀਰ ਨਜ਼ਰ ਕਾ ਲਗਾ ਵੋ ਕਿਆ ਜਾਨੇ
ਕੋਈ ਮਰਾ ਹੈ ਕਿ ਬਿਸ਼ਿਲ¹ ਹੁਆ ਵੋ ਕਿਆ ਜਾਨੇ

ਜਿਨ੍ਹਾਂਨੇ ਮਾਂਗ ਕੇ ਸਾਕੀ ਸੇ ਪੀ ਸ਼ਰਾਬ ਸਦਾ
ਗੁਰੂਰੇ-ਤਿਸ਼ਨਾਲਬੀ² ਕਾ ਨਸ਼ਾ ਵੋ ਕਿਆ ਜਾਨੇ

ਜਿਨ੍ਹੇ ਕਿਸੀ ਸੇ ਮੁਹਬਤ ਨਹੀਂ ਹੁੰਈ ਹੈ ਕਭੀ
ਸ਼ਬੇ-ਫਿਰਾਕ³ ਹੈ ਕੈਂਸੀ ਬਲਾ ਵੋ ਕਿਆ ਜਾਨੇ

ਕਿਸੀ ਕੇ ਨਕਸ਼ੇ-ਕਦਮ ਪਰ ਸਦਾ ਜੋ ਚਲਤੇ ਰਹੇ
ਤਲਾਸੇ-ਰਾਹ ਮੈਂ ਕਿਆ ਹੈ ਮਜ਼ਾ ਵੋ ਕਿਆ ਜਾਨੇ

ਤਨਹੋਂ ਤੋ ਸਜਨੇ-ਸੱਵਰਨੇ ਸੇ ਹੀ ਨਹੀਂ ਫੁਰਸਤ
ਗੁਜ਼ਰ ਰਹੀ ਹੈ ਜੋ ਤੁਮ ਪੇ ‘ਸਦਾ’ ਵੋ ਕਿਆ ਜਾਨੇ

1. ਧਾਯਤ 2. ਧਾਸੇ ਛੋਟੋਂ ਕਾ ਆਤਮ ਸਮਾਨ 3. ਵਿਰਹ ਕੀ ਰਾਤ



ਬੰਵਰ ਮੈਂ ਉਸਕੇ ਸਿਵਾ ਔਰ ਆਸਰਾ ਕਿਆ ਥਾ
ਕਰੀਬ ਆ ਗਿਆ ਸਾਹਿਲ ਤੋ ਫਿਰ ਖੁਦਾ ਕਿਆ ਥਾ

ਥਾ ਦੋਸਤ ਤੋ ਮੇਰੀ ਲਾਗਿਸ਼¹ ਪੇ ਟੋਕਤਾ ਮੁੜਾ ਕੋ
ਕਿ ਜਿਸ ਨੇ ਏਥੇ ਛੁਪਾਏ ਵੋ ਆਇਨਾ ਕਿਆ ਥਾ

ਮਿਸਾਲ ਕੇ ਲਿਏ ਕਹਤੇ ਹੈਂ ਗੁਨਚਲਬ² ਵਰਨਾ
ਲਬੇ ਸਨਮ ਸੇ ਕਲੀ ਕਾ ਸੁਕਾਬਿਲਾ ਕਿਆ ਥਾ

ਛੁਟੀ ਸ਼ਰਾਬ ਤੁੜੇ ਦੇਖ ਕਰ ਹਜ਼ਾਰੋਂ ਕੀ
ਤੇਰੀ ਨਜ਼ਰ ਮੈਂ ਤੁੜੇ ਕਿਆ ਪਤਾ ਨਸ਼ਾ ਕਿਆ ਥਾ

ਕਿਸੀ ਕੇ ਨਾਮ ਸੇ ਜੁੜ ਕਰ, ਹੁਆ ਹੈ ਨਾਮ ਤੇਰਾ
ਵਗਰਨ: ਸ਼ਹਰ ਮੈਂ ਰੁਤਬਾ ਤੇਰਾ ‘ਸਦਾ’ ਕਿਆ ਥਾ

1. ਭੂਲ, 2. ਕਲੀ ਜੈਂਸੇ ਛੋਟੋਂ ਵਾਲੀ



ਮੀਨਕਸ਼ੀ ਅਰੋਡਾ

ਬੈਂਕ ਹਮਾਰਾ

ਆਪਕੋ ਕੁਛ ਬਤਾਤੇ ਹੈਂ

ਪੰਜਾਬ ਏਂਡ ਸਿੰਘ ਬੈਂਕ ਕੇ ਬਾਰੇ ਮੇਂ ਸੁਨਾਤੇ ਹੈਂ

ਚਲੋ ਫਿਰ ਆਜ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਬਾਤ

ਕੈਂਸੇ ਹੁੰਡ ਥੀ ਅਪਨੇ ਬੈਂਕ ਕੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ?

ਤਾਰੀਖ ਥੀ ਚੌਬੀਸ਼, ਮਹੀਨਾ ਥਾ ਜੂਨ ਕਾ, ਵਰ਷ ਥਾ 1908
ਜਵ ਮਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਹ, ਸੁੰਦਰ ਸਿੰਹ ਔਰ ਤਰਲੋਚਨ ਸਿੰਹ ਜੀ ਨੇ

ਰਖੀ ਥੀ ਇਸਕੀ ਬੁਨਿਯਾਦ

ਪਹਲੀ ਸ਼ਾਖਾ ਖੋਲੀ ਗਿਆ ਅਮ੃ਤਸਰ ਹੌਲ ਬਾਜਾਰ

ਅਪ੍ਰੈਲ, 2023 ਮੈਂ ਕਿਯਾ 1500 ਕਾ ਆਕੜਾ ਪਾਰ

1553 ਹੈ ਬ੍ਰਾਂਚ, ਜੋਨ ਹੈ ਇਸਕੇ ਟ੍ਰੈਵੇਟੀ ਫਾਇਵ

ਇਸਕੀ ਟੈਂਗ ਲਾਇਨ ਹੈ ਵੇਧਰ ਸਰਵਿਸ ਇਜ ਏ ਵੇ ਑ਫ ਲਾਇਫ।

ਬੈਂਕ ਕੋ ਬਢਾਨੇ ਕਾ ਦੇਖਤੇ ਹੈਂ ਖਾਬ

635 ਬ੍ਰਾਂਚ ਹੈ ਓਨਲੈਨ ਇਨ ਪੰਜਾਬ

ਜਿਸ ਬੈਂਕ ਸੇ ਹਮ ਸਥਕਾਂ ਪਹਚਾਨ ਮਿਲੀ

ਉਸਕਾ ਹੇਡ ਑ਫਿਸ ਹੈ ਨ੍ਯੂ ਦਿੱਲੀ

ਕਸਟਮਰ ਕੋ ਸਰਵਿਸ ਦੇਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਕਿਵਕ

ਬੈਂਕ ਨੇ ਲੋਨਚ ਕਿਯਾ ਪੀਏਸਬੀ ਯੂਨਿਕ

ਬਹੁਤ ਸਾਰੀ ਮੁਸ਼ਕਲ ਆਈ, ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਮੋਡ

ਪਿਛਲੇ ਵਿੱਤ ਵਰ਷ ਮੈਂ ਪ੍ਰੋਫਿਟ ਥਾ 1313 ਕਰੋੜ

ਡਿਪੋਜਿਟ ਕੀ ਨਈ ਨਈ ਸ਼ਕੀਮ ਬੈਂਕ ਲਾਤਾ ਹੈ

ਸਪੇਸ਼ਲ ਸ਼ਕੀਮ ਮੈਂ ਕਸਟਮਰ ਸਪੇਸ਼ਲ ਬਾਜ਼ ਪਾਤਾ ਹੈ।

ਲੋਨ ਸ਼ਕੀਮ ਹੈ ਅਪਨੇ ਬੈਂਕ ਕੀ ਸ਼ਾਨ

ਜੈਸੇ ਅਪਨਾ ਘਰ ਵਾਪਰ ਔਰ ਅਪਨਾ ਵਾਹਨ

ਛੋਟਾ ਹੈ ਬੈਂਕ, ਇਸਕੋ ਬਡਾ ਹਮ ਬਨਾਯੋਗੇ

ਮਿਲਕੇ ਸਾਰੇ ਇਸਕੋ ਬਹੁਤ ਆਗੇ ਲੇਕਰ ਜਾਏਗੇ

ਏਕ ਟੀਮ ਕੀ ਤਰਹ ਆਗੇ ਹਮਕੋ ਬਢਨਾ ਹੈ

ਪੰਜਾਬ ਏਂਡ ਸਿੰਘ ਬੈਂਕ ਕਾ ਨਾਮ ਰੋਸ਼ਨ ਕਰਨਾ ਹੈ

ਏਨਪੀਏ ਬਣਾਨਾ ਹੈਂ ਕਾਸਾ ਬਢਾਨਾ ਹੈ

ਮਿਲਕਰ ਇਸਕੋ ਏਕ ਨੰਬਰ ਪਰ ਲਾਨਾ ਹੈ

ਹਮ ਸਥਕ ਕਾ ਏਕ ਹੀ ਨਾਰਾ

ਆਗੇ ਬਢੇ ਬੈਂਕ ਹਮਾਰਾ

-ਅਧਿਕਾਰੀ

ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਾਈਲਿਕ ਪਟਿਆਲਾ

ਕਾਵਿ-ਮੰਜੂਸ਼ਾ



ਰੀਨਾ ਆਰਾ

ਏਕ ਗੀਤ ਮਾਨਵਤਾ ਕੇ ਨਾਮ

ਫਿਰ ਏਕ ਗੀਤ ਮਾਨਵਤਾ ਕੇ ਨਾਮ ਗਾਯਾ ਜਾਏ,
ਆਓ ਫਿਰ ਇੰਸਾਨ ਹੋਨੇ ਕਾ ਉਤਸਵ ਮਨਾਯਾ ਜਾਏ।

ਸਿਖੂ ਕੀ ਕਿਲਕਾਰਿਯਾਂ ਸੇ ਹਰਿਂਤ ਹੋ ਜਬ ਮਨ,
ਖੁਦ ਭੀ ਫੂਲਾਂ ਕੀ ਤਰਹ ਖਿਲਕਰ ਮੁਸ਼ਕੁਰਾਯਾ ਜਾਏ।

ਦੋਸਤ ਕਈ ਉਦਾਸ ਹੋ ਤੋ ਗਲੇ ਲਗਾਕਰ ਕਹ ਦੋ,
ਕਿ ਆਓ ਮਿਲਕਰ ਮੁਝਿਕਲਾਂ ਕੋ ਹਰਾਯਾ ਜਾਏ।

ਪ੍ਰਿਯਜਨ ਗਲਤਿਆਂ ਕਰੋ ਤੋ ਕਸ਼ਮਾ ਕਰ ਕੇ ਦੇਖੋ,
ਕਿਂਧੋ ਨ ਅਚਾਈ ਲੇਕਰ ਬੁਰਾਈ ਕੋ ਠੁਕਰਾਯਾ ਜਾਏ।

ਪ੍ਰਕੂਤਿ ਸੇ ਸੀਖੋ ਦਾਨ ਮੈਂ ਹੀ ਹੈ ਸ੍ਰ਷ਟਿ ਕੀ ਸੁੰਦਰਤਾ,
ਨਿਸ਼ਵਾਰਥ ਪ੍ਰੇਮ ਦੇਕਰ ਸਥਕਾਂ ਅਪਨਾ ਬਨਾਯਾ ਜਾਏ।

ਆਦਰ ਦੋ ਵਿਨ੍ਹੇ ਯੇ ਬੁਜੁਰਗ ਆਸ਼ੀਓਂ ਸੇ ਭਰ ਦੇਂਗੇ ਝੋਲੀ,
ਦੋ ਪਲ ਇਨ ਛਾਧਾਦਾਰ ਵੁਕਾਂ ਕੀ ਛਾਂਵ ਮੈਂ ਬੈਠ ਜਾਯਾ ਜਾਏ।

ਮੁਤ੍ਯ ਭੀ ਨਜ਼ਰ ਉਤਾਰੇਗੀ ਸੁੱਕਕਾ ਕਰ ਫਿਰ ਇਸਕੀ,
ਆਓ ਇਸ ਜਿੰਦਗੀ ਕੀ ਫਿਰ ਸੇ ਜਿੰਦਗੀ ਬਨਾਯਾ ਜਾਏ।

ਪਰੋਪਕਾਰ ਔਰ ਸਦ੍ਬਾਵਨਾ ਹੀ ਇੰਸਾਨਿਤ ਕਾ ਮੂਲ ਹੈ,
ਆਓ ਯੇ ਜੀਵਨ ਕਾ ਸਾਰ ਫਿਰ ਸੇ ਅਪਨਾਯਾ ਜਾਏ।

-ਪ੍ਰਬੰਧਕ (ਸੂਚਨਾ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮਿਕੀ)
ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਾਰਾਈਲਿਕ ਆਰਟੀਜੀਏਸ ਕਥ
ਨਈ ਦਿੱਲੀ



ਹਿੰਦੀ ਕਾਰਜਸ਼ਾਲਾ



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਗਲਾਦ ਦਿੱਲੀ-1



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਗਲਾਦ ਦੇਹਰਾਦੂਨ



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਗਲਾਦ ਲਖਨਤੁ



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਗਲਾਦ ਗੁਰੂਗ੍ਰਾਮ



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਗਲਾਦ ਜਾਲਦੁਰ



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਗਲਾਦ ਨੋਏਡਾ

ਹਿੰਦੀ ਕਾਰ੍ਯਸ਼ਾਲਾ



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰ੍ਯਾਲਯ ਹੋਈਂਧਿਆਰਪੁਰ



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰ੍ਯਾਲਯ ਪਟਿਆਲਾ



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰ੍ਯਾਲਯ ਫਰੀਦਕੋਟ



ਏਸਟੀਸੀ ਰੋਹਿਣੀ, ਦਿੱਲੀ



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰ੍ਯਾਲਯ ਗੁਰਦਾਸਪੁਰ



ਸਹਮਾਗੀ



अल्का मुदीन सिद्धीकी

भविष्य की बैंकिंग

भविष्य की बैंकिंग, हमारी वर्तमान बैंकिंग व्यवस्था से पूर्णतः पृथक होगी। ग्राहकों के लिए विशिष्ट बैंकिंग अनुभव, जेखिमों और नियमों दोनों का बेहतर प्रबंधन, अत्याधुनिक तकनीक की मदद से गैर-बैंकिंग असंगठित संस्थाओं से प्रतिस्पर्धा इत्यादि भविष्य की बैंकिंग व्यवस्था के मूल अवयव होंगे और भविष्य में राष्ट्रीयकृत बैंकों के परिचालन व लाभार्जन के लिए आवश्यक भी। आगामी पीढ़ी शायद किसी अलग तरह की बैंकिंग का अनुभव लेंगे। एक बात तो पवकी है कि बैंक शाखाओं का महत्व निकट भविष्य तक ही सीमित रहेगा। उसके बाद उनका महत्व बहुत हद तक कम हो जाएगा। दो दशक पहले आधुनिक प्रौद्योगिकी ने बैंकिंग को जड़ से हिला दिया। कोर बैंकिंग प्रणाली से बैंकिंग में क्रांति आ गई। कोर बैंकिंग सिस्टम, पहले बही-खाता आधारित था, फिर वह उत्पाद आधारित हुआ और अब पूरी तरह से ग्राहक आधारित है। सीबीएस इन दो दशकों में कई बार बदला। आज बैंकिंग प्रौद्योगिकी के लिए फिनटेक एक प्रमुख औजार बन चुका है। बैंकिंग उद्योग नई-नई तकनीकों जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बिग डेटा, बैंकिंग ऑफ थिंग्स, ब्लॉक चेन को अपनाने के लिए तैयार ही नहीं उत्सुक भी है। सभी बैंकों को फिलहाल निम्न बिंदुओं पर गंभीरता से विचार करना होगा :

(1) **डिजिटल ब्रैंड :** भारत में राष्ट्रीयकृत बैंक बेहतर व्यापार कर सके क्योंकि उनकी शाखाओं की पहुंच बहुत व्यापक थी और उन्हें सरकार का संबल प्राप्त था। इनमें सामाजिक बैंकिंग और जमाकर्ताओं का हित प्रमुख था इसलिए खराब ग्राहक-सेवा और कई खामियों के बावजूद ये बैंक अपनी भूमिका को जीवंत रखने में सफल रहे। जैसे-जैसे उद्योगों में डिजिटलीकरण बढ़ रहा है, ग्राहकों भी आवश्यकता अनुरूप बैंकिंग उत्पाद की ओर अग्रसर हो रहे हैं। उन्हें अपनी जरूरतों के अनुसार विशिष्ट बैंकिंग चाहिए। ग्राहक को बिना बैंक शाखा आए, उत्कृष्ट सेवा देना बैंकों के लिए अपनी ब्रैंड शक्ति को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हो जाएगा। डेटा के आधार पर ग्राहक के व्यक्तिगत अनुभवों को बेहतर बनाना, बैंकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण होगा। बैंकिंग उद्योग में भी ब्रैंड शक्ति इस बात पर निर्भर होगी कि उनकी साझेदारियां किन कंपनियों के साथ हैं। पारदर्शिता, निवेश के एकीकृत आर्थिक अवसर, तात्कालिक जानकारियां और सुझाव, बेहतर ग्राहक अनुभव, ये सारी बातें बैंकिंग के लिए निर्णायक होंगी। डिजिटलीकरण के कारण कई बैंकिंग पद्धतियां आसान और बेहतर होंगी लेकिन उसमें जेखिम भी कम नहीं होगा। ग्राहकों की मांगें और अपेक्षाएं बढ़ रही हैं और आधुनिक तकनीक से नए-नए प्रतियोगी भी आते जा रहे हैं। डिजिटल ब्रैंड शक्ति बनाने के लिए बिलकुल स्पष्ट और तेज अंतर्विभागीय समन्वय होना आवश्यक है।

(2) **आर्थिक सलाहकार के रूप में बैंक शाखाएं :** भारत में सदा से ही बैंकों में लॉबी कल्वर (यानि ग्राहक, बैंक शाखाओं में आना पसंद करते थे। इसे सामजिक बैंकिंग भी कहा जाता है) रहा है।

अधिक से अधिक शाखाएं होना, बैंकों के लिए गर्व का विषय होता था या यूं कहें कि ग्राहकों के पास बैंकिंग के लिए एक मात्र उपलब्ध मार्ग, बैंक शाखा ही था। यह स्थिति लगभग 25 वर्ष पहले थी। उसके बाद सूचना प्रौद्योगिकी का युग आया। बैंकों और वित्तीय संस्थाओं की कार्य-पद्धति में क्रांति आ गई। इसकी शुरुआत हुई एटीएम से। उसके बाद भी कई बैंक ऐसे थे जो एटीएम भी शाखा में ही लगा कर रखते थे और बैंकिंग समय के पश्चात एटीएम का इस्तेमाल वर्जित था लेकिन धीरे-धीरे ये सब बदलता गया। अब इंटरनेट बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग की सुविधा देना बैंकों का मूलभूत कार्य है। अब बैंक शाखाओं के लिए आर्थिक सलाहकार केंद्र के रूप में कार्य करना ज्यादा श्रेयस्कर है क्योंकि अपने बैंकिंग कार्यों के लिए कोई भी ग्राहक अब शाखा में नहीं आएगा। बैंक शाखाओं का इस्तेमाल भी केवल बैंक में आने वाले हर ग्राहक को कोई न कोई वित्तीय उत्पाद बेचने के लिए ही किया जाएगा। आने वाले समय में बैंकों को ज्यादा शाखाओं की आवश्यकता नहीं रह जाएगी बल्कि किराए और बाकी खर्च बचाने के लिए बैंक, कई शाखाओं को बंद करना चाहेंगे। नई पीढ़ी के अधिकतर ग्राहक इंटरनेट बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग का इस्तेमाल करना पसंद कर रहे हैं। दुनिया भर के बैंकिंग ग्राहक इन नए मार्गों का अनुभव ले रहे हैं।



(3) **नवीन प्रतिस्पर्धा :** सरकार और रिज़र्व बैंक की खुली नीतियों के कारण अब ऐसे-ऐसे स्थानों से प्रतिस्पर्धा पैदा होगी जिसके बारे में सोचा भी नहीं गया होगा। रिज़र्व बैंक ने हाल में नए बैंकिंग लाइसेंस जारी किए हैं। नए-नए बैंक, नई टेक्नोलॉजी और प्रभावी पद्धतियों के साथ बाजार में उतर रहे हैं। वे भी पारंपरिकता का कोई बोझ लिए बिना। पिछले दो दशकों में कोटक और एचडीएफसी बैंक जिस तेजी से उभर कर आगे आए हैं, वे कई दशकों पुराने बैंकों की आंखें खोल देने के लिए काफी हैं। नए युग में, अब विशेषज्ञ बैंकों का चलन बढ़ता जा रहा है, जैसे कि छोटी बचत का बैंक, माइक्रो फाइनेंस संस्थाएं, पेमेंट बैंक आदि। बड़े बैंकों को अपने स्तर की बैंकों के साथ-साथ इन विशेषज्ञ बैंकों से भी प्रतिस्पर्धा करना है। ये नए बैंक प्रति लेनदेन कम फीस लेंगे और स्थापित बड़ी बैंकों के साथ कीमतों की प्रतिस्पर्धा शुरू हो जाएगी।

प्रतिस्पर्धा का परिणाम यही है कि बेहतर, प्रभावी व्यवस्थाएं, बेहतर ग्राहक अनुभव अब सामान्य बात होगी। पारंपरिक संस्थाएं, बढ़ती डिजिटल टेक्नोलॉजी के साथ शायद बाजार पर अपना नियंत्रण खो देंगी। इन खामियों के कारण, सभी भुगतान चैनलों में परिवर्तन आ गया है। उदाहरण के लिए ऑनलाइन (जैसे पेपाल), मोबाइल (जैसे एमपैसा), बिना संपर्क (एप्ल पे), पीयर टू पीयर (जैसे स्क्वायर, वेनमो आदि), सीमा पार भुगतान (रिप्पल लैब्स) और कूटमुद्रा अधीत क्रिप्टोकरेसी (जैसे बिटकॉइन) आदि के नाम लिए जा सकते हैं। भुगतान पद्धतियों के बहुत बड़े परिवर्तन शायद अभी दूर होंगे लेकिन ब्लॉकचेन अभी से ही तेज और प्रभावी लेनदेन, कम कीमत पर करने में सक्षम है। भारत में पेटीएम जैसे भुगतान माध्यम बड़े पैमाने पर लोगों को आकर्षित कर रहे हैं और भरपूर व्यापार भी कर रहे हैं।

(4) नई तकनीक : अगले दस सालों में ब्लॉक चेन टेक्नोलॉजी में होने वाले नए-नए आविष्कार, रिटेल और कॉर्पोरेट दोनों ही प्रकार की बैंकिंग में क्रांति ला देंगे। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2025 तक भुगतान की मात्रा नाटकीय रूप से बढ़ने वाली है। इसमें महत्वपूर्ण होंगे इंटरनेट ऑफ थिंग्स, डिजिटल भुगतान और सीधे कॉर्पोरेट भुगतान। भुगतान पद्धतियों में परिवर्तन और विकास से मात्रा तो बढ़ेगी ही, साथ ही खर्चों में भी कमी आएगी। मध्यस्थों की घटती जुरतों से भी ? खर्च कम होंगे और दुनिया भर की जानकारी में पारदर्शिता होगी।



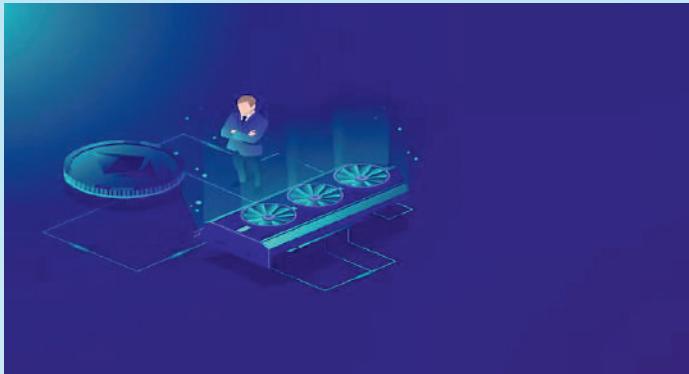
केवल प्लास्टिक क्रेडिट कार्ड को विप बेस्ड कार्ड बनाने में ही बैंकों को परेशानियां आ रही हैं। ये परिवर्तन लाने में ही बहुत सारी पारंपरिक विधियां व्यवधान पैदा कर रही हैं। ब्लॉक चेन जैसी नई टेक्नोलॉजी को आत्मसात करने के लिए बहुत बड़े पैमाने पर सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। एक और नई तकनीक जो जल्द ही उत्पादन और सेवा क्षेत्र में छा जाने वाली है, वह है कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग। एक्सचेंजों का डिजिटलीकरण होने के बाद से तो सौदे पहले से ही ऑनलाइन किए जा चुके हैं। जल्द ही अल्गोरिदमिक ट्रेडिंग से इंसानी ट्रेडिंग, शेयर और वायदा बाजार में लगभग खत्म हो जाएगा। मशीनों द्वारा सटीक निर्णय लेना और उसके द्वारा उद्यमों को बढ़ाना, यह आने वाले वर्षों में बहुत तेजी से बढ़ेगा। ये नई तकनीकें बैंकिंग की पद्धतियों को पूरी तरह से बदल देंगी।



(5) मार्केट प्लेस लैंडिंग : तकनीकी में परिवर्तन से बैंकिंग क्षेत्र की जिस बहुत महत्वपूर्ण विधा पर बहुत असर होगा, वह है- ऋण। क्राउड सोर्सिंग और पी-टू-पी बैंकिंग, ये दो ऐसे उदाहरण हैं जो बताते हैं की भविष्य में ऋण किस प्रकार का होगा। ये सारे नए मध्यम पारंपरिक बैंकिंग के बोझ से पूरी तरह मुक्त हैं। उन पर नियामक संस्था भी बहुत अधिक नियंत्रण नहीं कर सकती। अमेरिका में कुछ ऋणदाता जैसे लैंडिंग क्लब, प्रॉस्पर, कैबेज, सोफाई इस नई टेक्नोलॉजी को अच्छी तरह से निचोड़ रहे हैं। उन्होंने पारंपरिक ऋण की सारी जटिलताएं समाप्त कर दी हैं। इसी प्रकार के रुद्धान अब भारत में भी देखने को मिल रहे हैं। भारत में भी अब कई स्टार्ट-अप बिजनेस आ रहे हैं। इन आशंकाओं के बावजूद कि मार्केट लैंडिंग बैंकों के व्यापार को हानि पहुंचाएगा, पारंपरिक बैंक और मार्केट लैंडिंग कंपनियां आपस में साझेदारी अवश्य करेंगी।

उक्त बिंदुओं के अतिरिक्त भविष्य की बैंकिंग में नियो बैंक की उपस्थिति महत्वपूर्ण होने वाली है। दरअसल ये वर्चुअल या डिजिटल बैंकिंग प्लेटफॉर्म हैं जो कस्टमर-फ्रेंडली इंटरफेस में विशिष्ट प्रोडक्ट और अनुभव प्रदान करते समय लाइसेंस प्राप्त बैंकिंग संस्थानों के साथ भागीदारी में कार्य करते हैं। हालांकि वैश्विक स्तर पर नियो बैंक लगभग एक दशक तक रहे हैं लेकिन यह हाल ही में भारत में तेजी से विकसित होने वाला उद्योग है। नियो बैंक के प्रोडक्ट आमतौर पर सस्ते होते हैं जिनमें कोई मासिक अनुरक्षण शुल्क नहीं होता है।

नियो बैंक, स्मार्टफोन एप के माध्यम से अधिकांश बैंकिंग सुविधाएं (अगर संपूर्णता नहीं है) उपलब्ध कराते हैं। बुनियादी बैंकिंग कार्यों के अलावा नियो बैंक आपके फाइनेंस को मैनेज करने और खातों में गतिविधि का विश्लेषण कर भविष्य की आर्थिक गतिविधियों का अनुमान लगाने में आपको सक्षम करता है। ये टेक-सेवी संस्थान, ग्राहकों को तुरंत अकाउंट सेट करने और अनुरोध प्रोसेस करने की अनुमति देते हैं। लोन प्रदान करने वाले नियो बैंक, आपके क्रेडिट का मूल्यांकन करने और प्रोसेस को तेज करने के लिए इनोवेटिव रणनीतियों के पक्ष में समय लेने वाली प्रक्रियाओं को कम कर सकते हैं। यह सब कुछ ऑनलाइन करना बहुत आसान हो रहा है और नियो बैंक, प्रायः एटीएम नेटवर्क के साथ भागीदारी बनाए रखते हैं लेकिन कुछ लोग चाहते हैं कि व्यक्तिगत रूप से ब्रांच और बैंक में जाएं। जब जटिल लेन-देन की बात आती है तो यह विशेष रूप से सही है।



भविष्य में 7 बैंकिंग ट्रेंड्स की अहम भूमिका:

दूरदराज के स्थानों में बैंक ब्रांच और एटीएम की स्थापना करना बहुत मुश्किल है। अब बढ़ती इंटरनेट उपयोगिता और आधार संयोजकता की मदद से इन स्थानों में इंटरनेट के माध्यम से वित्तीय सेवाएं प्रदान करना काफी आसान होगा। भारत में इंटरनेट कनेक्टिविटी और ई-कॉमर्स की दृष्टि से काफी तेजी से विकास होने की उम्मीद है। स्वाभाविक रूप से भारत में वित्तीय तकनीक के क्षेत्र में होने वाली बढ़ोत्तरी, भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं और ई-कॉमर्स के विकास के समान होने की उम्मीद है। आने वाले समय में बैंकिंग क्षेत्र में इन चलन की भूमिका महत्वपूर्ण होने वाली है।

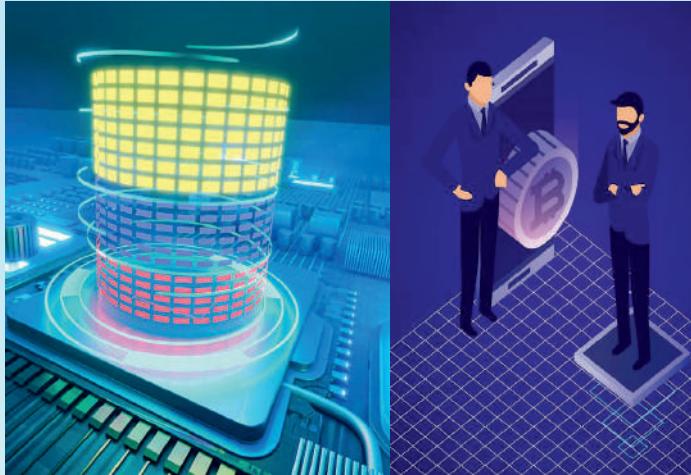
- पेपरलेस बैंकिंग :** आज खाता खोलने की प्रक्रिया कहां है और आने वाले समय में कहां हो सकती है। आज यदि आप एक बचत खाता खोलना चाहते हैं, बीमा उत्पाद लेना चाहते हैं, ऋण लेना चाहते हैं या म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहते हैं तो आपको बैंक या वित्तीय संस्थान में जाना पड़ता है। आप या तो अपने दस्तावेज लेकर शाखा में जाते हैं या वे आपके पास आकर दस्तावेज ले जाते हैं। इसमें काफी समय और पैसा खर्च हो जाता है। भविष्य में आप बिना किसी कागजात के ब्रांच जाए बिना तुरंत अपना खाता खोल पाएंगे। आप अपनी केवाईसी के लिए एक भी कागजात दिए बिना, बैंक के किसी प्रतिनिधि से मिले बिना, अपने हाथ में अपना उत्पाद पाने के लिए कई दिन इंतजार किए बिना यह कर पाएंगे। सर्विस देने का काम इंटरनेट कनेक्टेड स्मार्टफोन के माध्यम से होगा। इसे हम फाइनेंस का अमेजनिफिकेशन कह सकते हैं जहां कोई ग्राहक किसी ई-कॉमर्स वेबसाइट पर खरीदारी करनेकी तरह ही तुरंत एक वित्तीय उत्पाद खरीद सकता है।

- आधार और स्मार्टफोन की भूमिका :** भारत में एक बिलियन से ज्यादा लोग रहते हैं जिनके पास आधार अकाउंट या एक सेलफोन, या दोनों चीजें हैं। एक साथ मिलकर ये दोनों चीजें वहां पहुंच सकती हैं जहां अधिकांश सरकारी संस्थान और व्यावसायिक सेवाएं भी पहुंच नहीं पाती हैं इसलिए बैंकिंग और वित्तीय संस्थानों पर इनका बहुत गहरा असर पड़ता है। जहां एक तरफ गोपनीयता की चिंता की दृष्टि से आधार की आलोचना की गई है वहीं दूसरी तरफ, वित्तीय सेवा देने के मामले में यह बेहद महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। अधिक से अधिक भारतीय अपने आधार और इंटरनेट से जुड़े फोन का इस्तेमाल कर प्रमाणीकरण कर सकेंगे, खाता खोल सकेंगे और यह सुनिश्चित कर सकेंगे कि उन्हें सरकार द्वारा वादे के मुताबिक सेवाएं प्राप्त होती हैं।

• **ई-साइन, और ई-केवाईसी :** ऑफलाइन अकाउंट खोलने में सबसे बड़ी समस्या है - साइन और डॉक्यूमेंट कलेक्ट करना। यह एक महंगी प्रक्रिया है। आधार के इस युग में, इन प्रक्रियाओं को डिजिटल तरीके से पूरा किया जा सकता है जिससे समय और पैसा दोनों बच सकते हैं। आधार की मदद से आप अपना प्रमाणीकरण कर सकते हैं और एसएमएस ओटीपी के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक तरीके से दस्तावेजों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। इस तरह आप अपनी केवाईसी प्रक्रिया को कुछ सेकंड में ही पूरा कर लेते हैं जिसे ऑफलाइन तरीके से करने में आमतौर पर कई दिन लग सकते हैं।

- कम एनपीए :** एनपीए के युग में जहां कई बैंक, दबावग्रस्त आस्तियों से निपटने के नए-नए तरीके ढूढ़ रहे हैं, वहां पेपरलेस बैंकिंग एक राहत का काम करेगी। हम यहां उपस्थिति रहित बैंकिंग की बात कर रहे हैं, जहां एक ग्राहक अपने बैंक या वित्तीय संस्थान की शाखा में उपस्थित हुए बिना या उनके किसी प्रतिनिधि से आमने-सामने मिले बिना अपना प्रमाणीकरण कर सकता है। क्या यह सुरक्षित है? हाँ, आंकड़े यही बताते हैं। एक पेपरलेस आवेदन से एनपीए की संभावना बहुत कम होगी। सौभाग्य से आधार आधारित ई- केवाईसी की मदद से उधारकर्ताओं द्वारा दस्तावेजों की जालसाजी करने की संभावना बहुत कम है। बैंक बाजार में असुरक्षित लोन के लिए 50% से ज्यादा आवेदक, पेपरलेस बैंकिंग तरीके से आवेदन करते हैं।
- दस्तावेज साझाकरण :** डेस्क के पीछे बैठे लोगों द्वारा आपको कितनी बार याद दिलाया गया है कि आपके पास यह या वह दस्तावेज नहीं है और आपको कितनी बार वापस घर जाकर उन दस्तावेजों को लाना पड़ा है? यह समस्या भी, आगामी समय में समाप्त होने वाली है। भारत सरकार, पेपरलेस इकोसिस्टम के लिए प्रयास कर रही है जिससे एक नई चीज हमारे सामने आई है जिसका नाम है - डिजिलॉकर। यह क्लाउड पर दस्तावेजों को सहेजने और सहमति के आधार पर उन्हें साझा करने के लिए एक सुरक्षित टूल है। डिजिलॉकर खाता, निःशुल्क खोला जा सकता है। इसके प्री स्टोरेज का इस्तेमाल आधार, ड्राइविंग लाइसेंस, जन्म प्रमाण-पत्र इत्यादि दस्तावेज रखने के लिए किया जा सकता है।





- दुर्गम स्थानों तक डिजिटल पहुंच :** दूर-दराज के स्थानों में बैंक शाखा और एटीएम की स्थापना करना बहुत मुश्किल है। भारत जैसे देश में ऐसे बहुत सारे दुर्गम स्थान हैं जिन्हें औपचारिक वित्तीय क्षेत्र के दायरे में लाना जरूरी है। अब बढ़ती इंटरनेट उपयोगिता और आधार संयोजकता की मदद से इन स्थानों में इंटरनेट के माध्यम से वित्तीय सेवाएं प्रदान करना काफी आसान होगा। आप देखेंगे कि ज्यादा से ज्यादा वित्तीय सेवा प्रदान करने वाली संस्थाएं अपने डिजिटल फुट प्रिंट में बढ़ोत्तरी कर रहे हैं।
- घरेलू आय में वृद्धि :** बचत करने में सक्षम होने के नाते न्यायसंगत स्रोतों से उधार लेने, परिवार का इंश्योरेंस कराने से परिवार की घरेलू आमदनी में 10 फीसदी तक की बढ़ोत्तरी हो जाती है।

गैर संस्थागत कर्ज पर निर्भर रहने के बजाय परिवार, विनियमित संस्थानों से उधार ले सकता है और 4% तक अपनी आमदनी बढ़ा सकता है।

पेपरलेस बैंकिंग का लाभ मिलने पर अधिक से अधिक लोग बचत कर सकते हैं, उधार ले सकते हैं और इंश्योरेंस खरीद सकते हैं। इसके लिए उन्हें नौकरशाहों के चक्कर लगाने की जरूरत नहीं है, जैसे एक अकाउंट खोलने के लिए 10 तरह के कागजात जमा करने की जरूरत नहीं है। इस स्थिति में, लाखों-करोड़ों भारतवासी बैंकिंग करना शुरू करेंगे और गरीबी की सीमा से बाहर निकलेंगे।

उपर उल्लिखित बिंदुओं को देखते हुए यह समझना तो आवश्यक है कि बैंकों को अपनी रणनीतियां बदलनी होंगी और वर्ष 2025 के बाद होने वाले परिवर्तनों के लिए तैयार रहना होगा। इनमें ग्राहक केंद्रित मॉडल को अपनाकर अपने शाखा विस्तार का अनुकूलन करना, ग्राहकों को उत्कृष्ट बैंकिंग अनुभव देने के लिए अपनी उद्योग पद्धतियों को आसान बनाना, संग्रहीत जानकारी का लाभ लेना और आंकड़ों को आय में बदलना, नई टेक्नोलॉजी को अपनाना और उसके अनुसार अपनी क्षमताएं बढ़ाना, सक्रियता से जोखिम और पूँजी का प्रबंधन करना, सही टेक्नोलॉजी को जल्द से जल्द अपनाना, अपनी फीस को अलग - अलग भागों में विभाजित कर तथा ग्राहकों की सुविधानुसार उसे सेवा प्रदान करना इत्यादि शामिल है। बिना रुके, हमेशा तैयार रहना यही भविष्य के बैंकों का धोष होना चाहिए। ग्राहकों के लिए विशिष्ट बैंकिंग अनुभव, जोखिमों और नियमों दोनों का बेहतर प्रबंधन, अत्याशुनिक तकनीक की मदद से गैर-बैंकिंग असंगठित संस्थाओं से प्रतिस्पर्धा करना, भारत में यही बैंकों का भविष्य है।

—अधिकारी

सुभाष रोड, अलीगढ़ शाखा गुरुग्राम अंचल

“हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।”

— पंडित मदनमोहन मालवीय



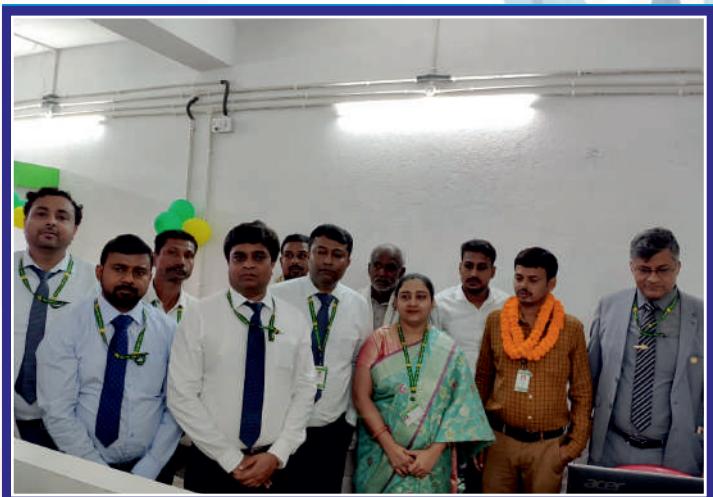
ਨਵੇਂ ਸ਼ਾਖਾਓਂ ਦਾ ਸ਼ੁਭਾਰੰਭ



ਸ਼ਾਖਾ ਨਾਥਦਾਰਾ, ਜ਼ਿਲਾ : ਰਾਜਸਮਂਦ, ਰਾਜਸਥਾਨ



ਸ਼ਾਖਾ ਦੇਵਘਰ, ਝਾਰਖੰਡ



ਸ਼ਾਖਾ ਸੋਹਇਮਾ, ਜ਼ਿਲਾ : ਪਟਨਾ, ਬਿਹਾਰ

ਨਵੇਂ ਸ਼ਾਖਾਓਂ ਦੀ ਸ਼ੁਆਰੰਭ



ਸ਼ਾਖਾ ਬਾਵਲ, ਜ਼ਿਲਾ : ਰੇਵਾਡੀ, ਹਰਿਯਾਣਾ



ਸ਼ਾਖਾ ਪਰਮਹਾਂਸਾ, ਜ਼ਿਲਾ : ਕਟਕ, ਓਡਿਸਾ



ਸ਼ਾਖਾ ਬਕਾਤੀ, ਜ਼ਿਲਾ : ਮਧੂਰਭੰਜ, ਓਡਿਸਾ



ਰੂਪ ਕੁਮਾਰ

ਜਿੰਦਗੀ ਕੀ ਕੀਮਤ



ਏਕ ਬਾਰ ਏਕ ਵਾਕਿ ਭਗਵਾਨ ਕੀ ਮੂਰਤੀ ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਬੈਠਕਰ ਪ੍ਰਯਾ ਕਰ ਰਹਾ ਥਾ। ਊਪਰ ਵਾਲੇ ਕਾ ਧਾਨ ਕਰ ਰਹਾ ਥਾ ਔਰ ਮਨ ਹੀ ਮਨ ਊਪਰ ਵਾਲੇ ਕੋ ਕੋਸ ਭੀ ਰਹਾ ਥਾ ਔਰ ਬਾਰ-ਬਾਰ ਯਹ ਬੋਲ ਰਹਾ ਥਾ ਕਿ ਭਗਵਾਨ ਆਪਨੇ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦਗੀ ਮੈਂ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਦੁਖ ਦਿਏ ਹਨ। ਮੈਂ ਅਪਨੀ ਜਿੰਦਗੀ ਸੇ ਪੇਰੇਸ਼ਾਨ ਹੋ ਗਿਆ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਮੈਂ ਜੀਨਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹਤਾ। ਜਬ ਇਤਨੇ ਸਾਰੇ ਦੁਖ ਦੇਨੇ ਥੇ ਤੋ ਮੁੜੇ ਯਹਾਂ ਕਿਉਂ ਭੇਜਾ। ਅਥ ਮੁੜਸਾਂ ਯੇ ਦੁਖ ਸਹਨ ਨਹੀਂ ਹੋਤੇ। ਮੁੜੇ ਅਪਨੇ ਪਾਸ ਬੁਲਾ ਲੋ... ਮੁੜੇ ਯਹਾਂ ਨਹੀਂ ਰਹਨਾ...। ਤਭੀ ਅਚਾਨਕ ਆਸਮਾਨ ਮੈਂ ਬਿਜਲੀ ਕਡਕੀ ਔਰ ਤੇਜ ਚਮਕ ਕੇ ਸਾਥ ਰੋਸ਼ਨੀ ਫੁੱਝੀ। ਉਸ ਰੋਸ਼ਨੀ ਮੈਂ ਸੇ ਸਾਧਾਰਣ ਸੇ ਦਿਖਨੇ ਵਾਲੇ ਪੁਰੁ਷ ਕੇ ਵੇਖ ਮੈਂ ਭਗਵਾਨ ਪ੍ਰਕਟ ਹੁਏ। ਭਗਵਾਨ ਨੇ ਆਕਰ ਉਸ ਵਾਕਿ ਕੇ ਕਥੇ ਪਰ ਹਾਥ ਰਖਾ। ਵਾਕਿ ਏਕਦਮ ਸੇ ਡਰ ਗਿਆ ਔਰ ਡਰਤੇ-ਡਰਤੇ ਬੋਲਾ-ਤੁਮ ਕੌਨ ਹੋ? ਸਾਧਾਰਣ ਸੇ ਦਿਖਨੇ ਵਾਲੇ ਪੁਰੁ਷ ਨੇ ਕਹਾ- ਮੈਂ ਭਗਵਾਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਵਾਕਿ ਬੋਲਾ- ਨਹੀਂ, ਤੁਮ ਝੂਠ ਬੋਲ ਰਹੇ ਹੋ। ਤੁਮ ਤੋ ਸਾਧਾਰਣ ਸੇ ਪੁਰੁ਷ ਦਿਖਾਈ ਦੇਤੇ ਹੋ, ਤੁਮ ਭਗਵਾਨ ਕੈਂਸੇ ਹੋ ਸਕਤੇ ਹੋ। ਅਥ ਮਜਾਕ ਮਤ ਕਰੋ, ਮੈਂ ਵੈਸੇ ਹੀ ਬਹੁਤ ਪੇਰੇਸ਼ਾਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਸਚ-ਸਚ ਬਤਾਓ ਤੁਮ ਕੌਨ ਹੋ? ਤਕ ਭਗਵਾਨ ਨੇ ਕਹਾ- ਵਤਸ! ਯਕੀਨ ਮਾਨੋ ਮੈਂ ਭਗਵਾਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਬਤਾਓ ਬਾਤ ਕਿਥਾ ਹੈ? ਤੋ ਉਸ ਵਾਕਿ ਨੇ ਕਹਾ- ਅਚਾਨਕ ਤੋ ਮਾਨ ਲਿਆ ਕਿ ਆਪ ਭਗਵਾਨ ਹੈਂ ਤੋ ਸੁਨੋ- “ ਹੇ ਭਗਵਾਨ! ਮੈਂ ਅਪਨੀ ਜਿੰਦਗੀ ਸੇ ਬਹੁਤ ਪੇਰੇਸ਼ਾਨ ਹੋ ਗਿਆ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਮੈਂਨੇ ਜਿੰਦਗੀ ਮੈਂ ਜੋ-ਜੋ ਕਰਨਾ ਚਾਹਾ, ਹਰ ਕਾਮ ਮੈਂ ਫੇਲ ਹੁਆ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸਲਿਏ ਜੀਨੇ ਕਾ ਭੀ ਮਨ ਨਹੀਂ ਕਰਤਾ, ਮੁੜੇ ਸਮਸ਼ ਨਹੀਂ ਆਤਾ ਕਿ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦਗੀ ਕੀ ਕੀਮਤ ਕਿਥਾ ਹੈ?” ਭਗਵਾਨ ਨੇ ਕਹਾ-ਚਲੋ ਏਕ ਕਾਮ ਕਰਤੇ ਹੋ। ਯੇ ਲਾਲ ਚਮਕਦਾਰ ਪਤਥਰ ਹੈ ਤੁਮ ਇਸੇ ਲੇਕਰ ਜਾਓ ਔਰ ਬਾਜਾਰ ਮੈਂ ਇਸਕੀ ਸਹੀ ਕੀਮਤ ਮਾਲੂਮ ਕਰਕੇ ਲਾਓ। ਅਗਰ ਤੁਮ ਇਸ ਪਤਥਰ ਕੀ ਸਹੀ ਕੀਮਤ ਮਾਲੂਮ ਕਰਕੇ ਲਾਓਗੇ ਤੋ ਮੈਂ ਬਤਾਊਂਗਾ ਕਿ ਤੁਮਹਾਂ ਜਿੰਦਗੀ ਕੀ ਸਹੀ ਕੀਮਤ ਕਿਥਾ ਹੈ। ਪਰ ਏਕ ਬਾਤ ਕਾ ਜ਼ਰੂਰ ਧਾਨ ਰਖਨਾ ਕਿ ਇਸ ਪਤਥਰ ਕੇ ਬੇਚਨਾ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਵਾਪਸ ਲੇਕਰ ਆਨਾ ਹੈ।

ਉਸ ਵਾਕਿ ਕੇ ਪਾਸ ਭਗਵਾਨ ਪਰ ਭਰੋਸਾ ਕਰਨੇ ਕੇ ਅਲਾਵਾ ਔਰ ਕੋਈ ਵਿਕਲਪ ਨਹੀਂ ਥਾ। ਵੋ ਪਛਲੇ ਏਕ ਸਭੀ ਮੰਡੀ ਮੈਂ ਗਿਆ ਜਹਾਂ ਏਕ ਦੁਕਾਨਦਾਰ ਸਾਮਾਨ ਤੌਲ ਰਹਾ ਥਾ। ਦੁਕਾਨਦਾਰ ਸੇ ਕਹਾ- ਭੈਂਧਾ ਕਿਥਾ ਆਪ ਯੇ ਲਾਲ ਪਤਥਰ ਖਰੀਦੋਗੇ? ਕਿਤਨੀ ਕੀਮਤ ਦੀਗੇ? ਦੁਕਾਨਦਾਰ ਬੋਲਾ- ਹਾਂ ਖਰੀਦ ਲੋਗੇ। ਵੈਸੇ ਭੀ ਮੇਰੇ ਯੇ ਕਿਸ ਕਾਮ ਕਾ, 10 ਰੁਪਏ ਲੇ ਲੇਨਾ, ਸਾਮਾਨ ਤੌਲਨੇ ਕੇ ਕਾਮ ਤੋ ਆ ਹੀ ਜਾਯੇਗਾ। 10 ਰੁਪਏ ਮੈਂ ਦੇਨਾ ਹੈ ਤੋ ਦੋ ਨਹੀਂ ਤੋ ਆਗੇ ਕਹੀਂ ਦੇਖੋ। ਵਾਕਿ ਆਗੇ ਏਕ ਫਲ ਵਾਲੇ ਕੇ ਪਾਸ ਗਿਆ ਔਰ ਬੋਲਾ- ਭੈਂਧਾ ਯੇ ਲਾਲ ਚਮਕਦਾਰ ਪਤਥਰ ਹੈ, ਕਿਥਾ ਆਪ ਇਸੇ ਖਰੀਦਨਾ ਚਾਹੋਗੇ? ਤੋ ਉਸ ਫਲ ਵਾਲੇ ਨੇ ਕਹਾ- ਹਾਂ ਖਰੀਦ ਤੋ ਲੋਗੇ, ਲੇਕਿਨ ਆਪਕੇ 10 ਕਿਲੋ ਆਮ ਸੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਨਹੀਂ ਦੇ ਪਾਏਂਗੇ। 10 ਕਿਲੋ ਆਮ ਕੇ ਬਦਲੇ ਮੈਂ ਅਗਰ ਦੇਨਾ ਹੋ ਤੋ ਦੇ ਜਾਓ ਨਹੀਂ ਤੋ ਆਗੇ ਬਢੀ। ਵਾਕਿ ਆਗੇ ਬਢੀ ਗਿਆ ਔਰ ਦੂਸਰੇ ਸਭੀ ਵਾਲੇ ਕੇ ਪਾਸ ਗਿਆ ਔਰ ਬੋਲਾ- ਭੈਂਧਾ ਯੇ ਲਾਲ ਚਮਕਦਾਰ ਪਤਥਰ ਖਰੀਦਨਾ ਚਾਹੋਗੇ? ਸਭੀ ਵਾਲੇ ਨੇ ਕਹਾ- ਹਾਂ ਖਰੀਦ ਲੂਂਗਾ, ਲੇਕਿਨ ਏਕ ਆਲੂ ਕੀ ਬੋਰੀ ਸੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਨਹੀਂ ਢੂਂਗਾ। ਵਾਕਿ ਨੇ ਕਹਾ, ਨਹੀਂ ਯਹ ਤੋ ਬਹੁਤ ਕਮ ਹੈ। ਯਹ ਕਹਕਰ ਵਾਕਿ ਆਗੇ ਬਢੀ ਹੀ ਥਾ ਕਿ ਤਭੀ ਸਭੀ ਵਾਲੇ ਨੇ ਕਹਾ- ਅਚਾਨਕ ਭੈਂਧਾ ਤੋ ਚਲੋ ਫਿਰ ਦੋ ਆਲੂ ਕੀ ਬੋਰੀ ਲੇ ਲੇਨਾ, ਅਥ ਇਸਦੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਨਹੀਂ ਦੇ ਪਾਊਂਗਾ। ਆਪਕੇ ਬੇਚਨਾ ਹੋ ਤੋ ਬੇਚੋ ਨਹੀਂ ਤੋ ਆਗੇ ਬਢੀ ਜਾਂਦੀ।

ਵਾਕਿ ਨੇ ਸੋਚਾ ਅਭੀ ਯਹ ਏਕ ਆਲੂ ਕੀ ਬੋਰੀ ਸੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਨਹੀਂ ਦੇ ਰਹਾ ਰਹਾ ਥਾ ਫਿਰ ਦੋ ਆਲੂ ਕੀ ਬੋਰੀ ਦੇਨੇ ਕੋ ਤੈਤਾਰ ਹੋ ਗਿਆ। ਇਸਕਾ ਮਤਲਬ ਯਦਿ ਆਗੇ ਔਰ ਪਤਾ ਕਿਯਾ ਜਾਏ ਤੋ ਸ਼ਾਯਦ ਇਸਕੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਕੀਮਤ ਮਿਲ ਸਕਤੀ ਹੈ। ਯਹ ਸੋਚਕਰ ਵਾਕਿ ਵਹੀ ਸੇ ਆਗੇ ਬਢੀ ਗਿਆ। ਸ਼ਾਮ ਕਾ ਕਤਕ ਹੋ ਗਿਆ ਥਾ। ਵਹ ਵਾਕਿ ਏਕ ਬਾਜਾਰ ਮੈਂ ਸੁਨਾਰ ਕੀ ਦੁਕਾਨ ਪਰ ਪਹੁੰਚਾ। ਵਹੀ ਜਾਕਰ ਉਸਨੇ ਸੋਚਾ ਕਿ ਸ਼ਾਯਦ ਇਸਕੀ ਸਹੀ ਕੀਮਤ ਯਹੀ ਮਾਲੂਮ ਚਲੇਗੀ। ਵਾਕਿ ਨੇ ਸੁਨਾਰ ਕੀ ਲਾਲ ਚਮਕਦਾਰ ਪਤਥਰ ਦਿਖਾਯਾ ਔਰ ਕਹਾ- ਭੈਂਧਾ ਆਪ ਯੇ ਖਰੀਦੋਗੇ? ਅਗਰ ਆਪ ਇਸੇ ਖਰੀਦੋਗੇ ਤੋ ਕਿਤਨੇ ਮੈਂ ਖਰੀਦ ਸਕਤੇ ਹੋਣੇ?

ਲਾਲ ਚਮਕੀਲਾ ਪਤਥਰ ਦੇਖਕਰ ਸੁਨਾਰ ਕੀ ਆੱਖੀਆਂ ਮੈਂ ਚਮਕ ਆ ਗਿਆ। ਸੁਨਾਰ ਨੇ ਕਹਾ- ਭੈਂਧਾ ਯੇ ਪਤਥਰ ਆਪ ਮੁੜੇ 50 ਲਾਖ ਮੈਂ ਦੇ ਜਾਓ। ਇਸਦੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਰੁਪਏ ਦੇ ਨਹੀਂ ਪਾਊਂਗਾ। ਯਹ ਸੁਨਕਰ ਵਾਕਿ ਚੌਂਕ ਗਿਆ ਕਿ ਯਹ ਲਾਲ ਚਮਕਦਾਰ ਪਤਥਰ ਜਿਸੇ ਥੋੜੀ ਦੇਰੇ ਪਛਲੇ ਏਕ ਦੁਕਾਨਦਾਰ 10 ਰੁਪਏ ਮੈਂ, ਫਲਵਾਲਾ 10 ਕਿਲੋ ਆਮ ਮੈਂ ਖਰੀਦ ਰਹਾ ਥਾ, ਸੁਭੀ ਵਾਲਾ ਦੋ ਬੋਰੀ ਆਲੂ ਮੈਂ ਖਰੀਦ ਰਹਾ ਥਾ ਔਰ ਅਥ ਯੇ ਸੁਨਾਰ 50 ਲਾਖ ਰੁਪਏ ਮੈਂ ਖਰੀਦਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਤੈਤਾਰ ਹੈ। ਵਾਕਿ ਨੇ ਸੋਚਾ ਯਹ ਪਤਥਰ ਕੋਈ ਮਾਮੂਲੀ ਪਥਰ ਨਹੀਂ, ਯਹ ਬਹੁਤ ਕੀਮਤੀ ਹੈ ਔਰ ਇਸਕੀ ਕੀਮਤ ਸ਼ਾਯਦ 50 ਲਾਖ ਰੁਪਏ ਦੇ ਭੀ ਕਹੀਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਹੋ ਸਕਤੀ ਹੈ। ਇਸਲਿਏ ਕਿਉਂ ਨ ਆਗੇ ਚਲਕਰ ਔਰ ਪਤਾ ਕਿਯਾ ਜਾਏ। ਤਕ ਵਾਕਿ ਨੇ ਸੁਨਾਰ ਸੇ ਕਹਾ- ਭੈਂਧਾ ਮੈਂ ਆਪਕੋ ਇਸੇ ਬੇਚੁੱਗਾ ਨਹੀਂ। ਸੁਨਾਰ ਕੀ ਲਗਾ ਸ਼ਾਯਦ ਯੇ ਮੋਲ-ਭਾਵ ਕਰਨਾ ਚਾਹ ਰਹਾ ਹੈ। ਤੋ ਸੁਨਾਰ ਨੇ ਕਹਾ- ਦੇਖੋ ਭੈਂਧਾ ਐਸਾ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਨ ਆਪਕੀ ਨ ਮੇਰੀ, 1 ਕਰੋડ ਰੁਪਏ ਫਾਇਨਲ... ਆਪ 1 ਕਰੋਡ ਰੁਪਏ ਮੈਂ ਮੁੜੇ ਯੇ ਲਾਲ ਪਤਥਰ ਦੇਕਰ ਚਲੇ ਜਾਓ। ਆਪਕੀ ਊਪਰ ਵਾਲਾ ਖੁਸ਼ ਰਖੇਗਾ ਔਰ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀ ਖੁਸ਼ਿਆਂ ਦੇਗਾ। ਉਸ ਵਾਕਿ ਨੇ ਕਹਾ- ਭੈਂਧਾ ਮੈਂ ਆਪਕੋ ਇਸੇ ਬੇਚ ਨਹੀਂ ਪਾਊਂਗਾ, ਕਿਉਂਕਿ ਜਿਸਨੇ ਮੁੜੇ ਯੇ ਦਿਯਾ ਹੈ ਉਸਨੇ ਮੁੜੇ ਬੇਚਨੇ ਕੋ ਮਨਾ ਕਿਯਾ ਹੈ। ਸੁਨਾਰ ਕੀ ਗੁਸ਼ਾ ਆ ਗਿਆ ਔਰ ਬੋਲਾ- ਨਿਕਲੋ ਯਹੀ ਨਹੀਂ ਹੈ ਤੋ... ਆਪ ਕਿਉਂ ਸੌਦਾ ਕਰਨੇ ਆ ਗਏ... ਜਵ ਬੇਚਨਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਹੈ ਤੋ... ਆਪ ਮੁੜੇ ਇਸਕੀ ਕੀਮਤ ਕਿਉਂ ਜਾਨ ਰਹੇ ਹੋ? ਨਿਕਲੋ... ਬਾਹਰ ਨਿਕਲੋ....

व्यक्ति को वहाँ से बाहर निकाल दिया गया। उसने सोचा जब सुनार इसे 1 करोड़ रुपये में लेने को तैयार है तो कोई तो बात जखर है इस पत्थर में। यह व्यक्ति हीरे के व्यापारी के पास गया। वहाँ जाकर व्यक्ति ने हीरे के व्यापारी को वह पत्थर दिखाया और कहा- भैया ये लाल चमकदार पत्थर है। क्या आप इसे खरीदेंगे? और यदि खरीदेंगे तो कितने में खरीदेंगे? लाल चमकदार पत्थर देखकर हीरे का व्यापारी भौचक्का रह गया और उसने कहा- अरे भैया! आपको ये कहाँ मिला? ये तो दुनिया का सबसे अनमोल रत्न है। मेरे पास जितना पैसा है, उतना दे दूँ तब भी इसे नहीं खरीद सकता। मैं तो क्या दुनिया में कोई भी बंदा इसे नहीं खरीद सकता। आपको ये दिया किसने? व्यक्ति ने कहा- भैया वो तो मैं आपको बता नहीं सकता। पर जिसने दिया है उसने बेचने से मना किया है, इसलिए बेच भी नहीं पाऊँगा।

व्यक्ति दौड़कर भगवान के पास गया और पूरी कहानी सुनाई कि किस तरह कोई इस पत्थर को 10 रुपये में खरीदने को तैयार है, कोई 10 किलो आम में खरीद रहा है, कोई दो बोरी आलू में खरीद रहा है तो कोई 1 करोड़ रुपये में, बगैरह... बगैरह...।



ज़रा सोचिए!



शिरीष कुमार पांडेय

छुट्टी के दिन घर पर टेलीविजन देख रहा था। टेलीविजन पर भी समाचार चैनल। फुरसत के क्षणों में अधिकतर यहीं देखता हूँ। जैसा कि आजकल चलन है, न्यूज चैनल में किसी बड़े आयोजन का सीधा प्रसारण आ रहा था। भव्यता को देखकर लग रहा था कि कार्यक्रम किसी महत्वपूर्ण विषय पर निर्धारित है। थोड़ा और देखने पर पता चला कि देश की राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और क्रियान्वयन पर कोई महिला विदुषी अपना वक्तव्य दे रही हैं। शायद वह देश के किसी लोकसभा क्षेत्र की प्रतिनिधि थीं।

अपने वक्तव्य के दौरान उन्होंने बड़ी अच्छी बात कही कि राजभाषा हिंदी का प्रयोग देश के प्रत्येक नागरिकों का दायित्व है और केंद्र सरकार के संगठनों में कार्य करने वाले कार्मिकों के लिए कार्यालयीन समय पर इसका निर्वहन अपरिहार्य है। हिंदी के विषय में कुछ और जानकारी देने के पश्चात महिला सांसद ने अपने विषय में कुछ व्यक्तिगत जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि जिस प्रकार राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रयोग आवश्यक है उसी प्रकार परिवार के स्तर पर मातृभाषा का प्रयोग आवश्यक है। भावी पीढ़ी को यदि मातृभाषा का हस्तांतरण नहीं किया गया तो मातृभाषा के साथ-साथ उस भाषा से जुड़ी मनोरम संस्कृति भी समाप्त हो जाएगी। देश में आज स्थिति यह है कि मातृभाषा, घर के बुजुर्गों तक ही सिमित रह गई है, बच्चों को मातृभाषा सिखाने का हमारा रवैया उदासीन होता जा रहा है।

व्यक्ति ने कहा, अब आप मुझे बताओ कि मेरी जिंदगी की कीमत क्या है? भगवान ने कहा- मैं तुझे यही समझाना चाहता था कि ये लाल चमकदार पत्थर तेरी जिंदगी है। यह किसी के लिए 10 किलो आम के बराबर है, किसी के लिए दो बोरी आलू के बराबर है तो किसी के लिए 1 करोड़ रुपये के बराबर है और किसी के लिए अनमोल रत्न के बराबर है। तेरी जिंदगी हर किसी के लिए अलग-अलग है। अब तू सही व्यक्ति की तलाश कर जो तुझे जिंदगी में सही रास्ता दिखाए, सही अवसर दे और तू कमाल कर पाए। ये छोटी सी कहानी हमें जिंदगी में बहुत बड़ी बात सिखाती है।

हम कई बार इस बात से परेशान रहते हैं और अपने आपको कोसते रहते हैं कि जिंदगी में हमें वो नहीं मिल पा रहा है जो हम चाह रहे हैं। कोसना बंद कीजिए और सही अवसर का इंतजार कीजिए। सही अवसर जिस दिन आएगा उस दिन आप कमाल कर दिखाएंगे।

—राजभाषा अधिकारी
प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग

मातृभाषा सिखाने को लेकर स्वयं का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि विगत छह माह से वे अपने बच्चे को मातृभाषा सिखा रही हैं और इसके बाद कोई एक और भारतीय भाषा भी सिखाने की योजना है। अपनी बात समाप्त करते समय उन्होंने श्रोताओं से अपने-अपने बच्चों को मातृभाषा सिखाने का अनुरोध किया।

भाषाशैली के साथ-साथ उनका अनुरोध भी तार्किक था। मातृभाषा सिखाने के लिए हमें बच्चों को कहीं भी भेजने की आवश्यकता नहीं है। यदि हम घर पर बच्चों के साथ यदा-कदा अपनी मातृभाषा में बात करते रहेंगे तो बच्चा सरलता से मातृभाषा सीख लेगा। टीवी पर कार्यक्रम समाप्त होने के बाद मैंने यह तय किया कि अपने बच्चे को अपनी मातृभाषा अवश्य सिखाऊंगा। बच्चों में सीखने की तीव्र लालसा होती है, लगभग चार माह ही प्रयास करने पर मेरे बच्चे ने अपनी मातृभाषा पर पकड़ मजबूत कर ली है। अभी उसे अपनी मातृभाषा समझने में कोई समस्या नहीं होती है। बस थोड़ी सी समस्या मातृभाषा में बोलने की है लेकिन मैंने सोच लिया है कि उसकी यह समस्या भी जल्द से जल्द दूर कर लूँगा। अपने बच्चे को उसकी मातृभाषा सिखाने की बारी अब आपकी है? कहीं ऐसा तो नहीं कि आप अपने परिवार में अपनी मातृभाषा को समझने-बोलने वाले अंतिम व्यक्ति हैं? इस विषय पर जरूर सोचिए!

—मुख्य प्रबंधक
प्रधान कार्यालय परिसर विभाग



पूजा अग्रवाल

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव जीवन

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, दो शब्दों आर्टिफिशियल और इंटेलिजेंस से मिलकर बना है जो मानव निर्मित बुद्धिमत्ता को दर्शाता है। इसलिए, जब मशीनें, मनुष्यों के समान कार्य करने के लिए मानव निर्मित बुद्धिमत्ता से सुसज्जित होती हैं, तो इसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के रूप में जाना जाता है। यह सब बुद्धिमान मशीनें विकसित करने के बारे में हैं जो मानव मस्तिष्क का अनुकरण कर सकें और मनुष्यों की तरह काम व व्यवहार कर सकें।

हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं, “कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंप्यूटर विज्ञान की एक शाखा है जो बुद्धिमान मशीनों को विकसित करने से संबंधित है। ये मशीनें मानव की तरह व्यवहार कर सकती हैं, मानव की तरह सोच सकती हैं और स्वयं निर्णय लेने की क्षमता रखती हैं।” कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ, मशीनों में सीखने, तर्क करने और तार्किक समस्याओं को हल करने जैसे मानव-आधारित कौशल हो सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता सबसे तेजी से बढ़ती तकनीक में से एक है जो जटिल समस्याओं का समाधान प्रदान करके मानव जीवन को बहुत आसान बना रही है। यह सभी के लिए अलग-अलग अवसर भी लेकर आया है और इसलिए यह बाजार में बहुत मांग वाली तकनीक है।

चूंकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता बड़ी मात्रा में डेटा को बहुत तेजी से संसाधित कर सकता है और मानवीय रूप से संभव से अधिक सटीक भविष्यवाणियां कर सकता है इसलिए कृत्रिम न्यूरल नेटवर्क और गहन शिक्षण कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकियां तेजी से विकसित हो रही हैं। जबकि दैनिक आधार पर बनाए गए डेटा की भारी मात्रा एक मानव शोधकर्ता के लिए दिक्कत पैदा कर देगी, मशीन लर्निंग का उपयोग करने वाले कृत्रिम बुद्धिमत्ता एप्लिकेशन उस डेटा का उपयोग कर तुरंत इसे कार्रवाई योग्य जानकारी में बदल सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्राथमिक नुकसान यह है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रोग्रामिंग के लिए आवश्यक बड़ी मात्रा में डेटा को संसाधित करना महंगा है। जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकों को अधिक उत्पादों और सेवाओं में शामिल किया जाता है, संगठनों को जानबूझकर या अनजाने में पक्षपातपूर्ण और भेदभावपूर्ण प्रणाली बनाने की कृत्रिम बुद्धिमत्ता की क्षमता के प्रति भी सचेत रहना चाहिए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कुछ लाभ निम्नलिखित हैं -

(1) **मानवीय त्रुटि में कमी** - कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सबसे बड़े लाभों में से एक यह है कि यह त्रुटियों को काफी कम कर सकता है और सटीकता के साथ परिणाम दे सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा हर चरण में लिए गए निर्णय पहले से एकत्र की गई जानकारी और एल्गोरिदम के एक निश्चित सेट द्वारा तय किए जाते हैं। जब ठीक से प्रोग्राम किया जाता है, तो इन त्रुटियों को न्यून कर सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से मानवीय त्रुटि में कमी का एक उदाहरण रोबोटिक सर्जरी सिस्टम का उपयोग है, जो सटीक और सटीकता के साथ जटिल प्रक्रियाएं कर सकता है। मानव त्रुटि के जोखिम को कम कर सकता है और स्वास्थ्य सेवा में रोगी की सुरक्षा में सुधार कर सकता है।

(2) **शून्य जोखिम** - कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक और बड़ा लाभ यह है कि एआई रोबोट को हमारे लिए कार्य करने की अनुमति देकर मनुष्य कई जोखिमों को दूर कर सकता है। चाहे वह बम को निष्क्रिय करना हो, अंतरिक्ष में जाना हो, महासागरों के सबसे गहरे हिस्सों की खोज करना हो। धातु निकायों वाली मशीनें, प्रकृति में प्रतिरोधी और विपरीत वातावरण से बच सकती हैं। इसके अलावा, वे अधिक जिम्मेदारी के साथ सटीक काम कर सकते हैं और आसानी से खराब नहीं होते हैं। शून्य जोखिम का एक उदाहरण एक विनिर्माण सुविधा में पूरी तरह से स्वचालित उत्पादन लाइन है। रोबोट खतरनाक वातावरण में मानवीय त्रुटि और चोट के जोखिम को समाप्त करते हुए सभी कार्य करते हैं।



(3) **24X7 उपलब्धता** - ऐसे कई अध्ययन हैं जो यह दिखाते हैं कि मनुष्य एक दिन में केवल 3 से 4 घंटे ही उत्पादक होते हैं। मनुष्य को अपने कार्य जीवन और व्यक्तिगत जीवन को संतुलित करने के लिए अंतराल और अवकाश की भी आवश्यकता होती है लेकिन कृत्रिम बुद्धिमत्ता बिना अंतराल के अंतर्हीन काम कर सकता है। वे मनुष्यों की तुलना में बहुत तेजी से सोचते हैं और सटीक परिणामों के साथ एक समय में कई कार्य करते हैं। वे एआई एल्गोरिदम की मदद से थकाऊ दोहराव वाले कार्यों को भी आसानी से संभाल सकते हैं। इसका एक उदाहरण ऑनलाइन ग्राहक सहायता चैटबॉट है जो ग्राहकों को कहीं भी तत्काल सहायता प्रदान कर सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण का उपयोग करते हुए चैटबॉट सामान्य प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं, मुद्दों को हल कर सकते हैं और चौबीसों घंटे निर्बाध ग्राहक सेवा सुनिश्चित कर सकते हैं।

(4) **डिजिटल सहायता** – सबसे तकनीकी रूप से उन्नत कंपनियां डिजिटल सहायकों का उपयोग करने वाले उपयोगकर्ताओं के साथ जुड़ती हैं जो मानव कार्मिकों की आवश्यकता को समाप्त करती हैं। कई वेबसाइटें उपयोगकर्ता-अनुरोधित सामग्री वितरित करने के लिए डिजिटल सहायकों का उपयोग करती हैं। हम बातचीत में उनके साथ अपनी खोज पर चर्चा कर सकते हैं। कुछ चैटबॉट इस तरह से बनाए जाते हैं जिससे यह बताना मुश्किल हो जाता है कि हम किसी इंसान से बातचीत कर रहे हैं या चैटबॉट से। हम सभी जानते हैं कि व्यवसायों में एक ग्राहक सेवा समूह होता है जिसे हितधारकों के संदेह और चिंताओं को दूर करना चाहिए। व्यवसायी एक चैटबॉट बना सकते हैं जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करके अपने सभी ग्राहकों के सवालों का जवाब दे सकता है।

(5) **नए आविष्कार** – व्यावहारिक रूप से हर क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता कई नवाचारों के पीछे प्रेरक शक्ति के रूप में है जो अधिकांश चुनौतीपूर्ण मुद्दों को हल करने में मनुष्यों की सहायता करेगा। नए आविष्कारों का एक उदाहरण सेल्फ-ड्राइविंग कार है जो मानव हस्तक्षेप के बिना सड़कों और यातायात को नेविगेट करने के लिए कैमरों, सेंसर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता एल्गोरिदम के संयोजन का उपयोग करती है। सेल्फ-ड्राइविंग कारों में सड़क सुरक्षा में सुधार, यातायात की भीड़ को कम करने और दिव्यांग या सीमित गतिशीलता वाले लोगों के लिए पहुंच बढ़ाने की क्षमता है। वे टेस्ला, गूगल और उबर सहित विभिन्न कंपनियों द्वारा विकसित किए जा रहे हैं और इससे परिवहन में क्रांति की उम्मीद है।

(6) **निष्पक्ष निर्णय** – मनुष्य भावनाओं से प्रेरित होते हैं चाहे हम इसे पसंद करें या नहीं। दूसरी ओर कृत्रिम बुद्धिमत्ता भावनाओं से रहित है और इसके दृष्टिकोण में अत्यधिक व्यावहारिक और तर्कसंगत है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक बड़ा फायदा यह है कि इसमें कोई पक्षपाती विचार नहीं है जो अधिक सटीक निर्णय लेने को सुनिश्चित करता है। इसका एक उदाहरण कृत्रिम बुद्धिमत्ता-संचालित भर्ती प्रणाली है जो जनसांख्यिकी के बजाय कौशल और योग्यता के आधार पर नौकरी आवेदकों की जांच करती है। यह भर्ती प्रक्रिया में पूर्वाग्रह को खत्म करने में मदद करता है जिससे एक समावेशी और अधिक विविध कार्यबल बनता है।

(7) **दोहराव** – हम अपने दैनिक कार्य के हिस्से के रूप में बहुत सारे दोहराए जाने वाले कार्य करेंगे, जैसे कि दस्तावेजों की जांच करना और धन्यवाद नोट्स मेल करना इत्यादि। हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग इन मासिक कार्यों को कुशलतापूर्वक स्वचालित करने के लिए कर सकते हैं और यहां तक कि लोगों के लिए ‘नीरस’ कार्यों को भी समाप्त कर सकते हैं जिससे वे अधिक रचनात्मक होने पर ध्यान केंद्रित कर सकें। इसका एक उदाहरण लाइनों के निर्माण में रोबोट का उपयोग कर रहा है जो उच्च सटीकता और गति के साथ वेल्डिंग, पेंटिंग और पैकेजिंग जैसे दोहराए जाने वाले कार्यों को संभाल सकता है, लागत कम कर सकता है और दक्षता में सुधार कर सकता है।

(8) **दैनिक अनुप्रयोग** – आज, हमारा रोजमर्रा का जीवन पूरी तरह से मोबाइल उपकरणों और इंटरनेट पर निर्भर है। हम गूगल मानचित्र, एलेक्सा, सिरी, विंडोज पर कॉर्टना, ओके गूगल, सेल्फी लेने, कॉल करने, ईमेल का जवाब देने आदि सहित कई तरह के ऐप का उपयोग करते हैं। विभिन्न कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित तकनीकों के उपयोग से हम आज के मौसम और आने वाले दिनों का भी अनुमान लगा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर लगभग 20 साल पहले, आपने किसी ऐसे व्यक्ति से पूछा होगा जो पहले से ही निर्देशों के लिए वहां गया था जब आप यात्रा की योजना बना रहे थे। अब आपको बस गूगल से पूछना है कि बैंगलोर कहां है, आपके और बैंगलोर के बीच सबसे अच्छा मार्ग गूगल मानचित्र पर बैंगलोर के स्थान के साथ प्रदर्शित किया जाएगा।

(9) **कृत्रिम बुद्धिमत्ता जोखिम भरी स्थितियों में** – कृत्रिम बुद्धिमत्ता के मुख्य लाभों में से एक यह है। एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता रोबोट बनाकर जो हमारी ओर से खतरनाक कार्य कर सकता है, हम मनुष्यों के सामने आने वाले कई खतरनाक प्रतिबंधों से परे जा सकते हैं। इसका उपयोग किसी भी प्रकार की प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदा में प्रभावी ढंग से किया जा सकता है, चाहे वह मंगल ग्रह पर जा रहा हो, बम को निष्क्रिय कर रहा हो, महासागरों के सबसे गहरे क्षेत्रों की खोज कर रहा हो या कोयले और तेल के लिए खनन कर रहा हो। इसका एक उदाहरण यूक्रेन में चेरनोबिल परमाणु ऊर्जा सुविधा में विस्फोट को लिया जा सकता है। जैसा कि कोर के करीब आने वाला कोई भी व्यक्ति कुछ ही मिनटों में मर जाता था, उस समय, कोई कृत्रिम बुद्धिमत्ता-संचालित रोबोट नहीं थे जो आग को उसके शुरुआती चरणों में नियंत्रित करके विकिरण के प्रभाव को कम करने में हमारी सहायता कर सकते थे।

(10) **चिकित्सा अनुप्रयोग** – कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने चिकित्सा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिसमें निदान और उपचार से लेकर दवा की खोज और नैदानिक परीक्षणों तक के अनुप्रयोग शामिल हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता-संचालित उपकरण, डॉक्टरों और शोधकर्ताओं को रोगी डेटा का विश्लेषण करने, सभावित स्वास्थ्य जोखिमों की पहचान करने और व्यक्तिगत उपचार योजना विकसित करने में मदद कर सकते हैं। इससे रोगियों के लिए बेहतर स्वास्थ्य परिणाम हो सकते हैं और नए चिकित्सा उपचार और प्रौद्योगिकियों के विकास में तेजी लाने में मदद मिल सकती है।



उक्त लाभ के अतिरिक्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता की कुछ हानियां भी हैं जिन्हें इस प्रकार सूचीबद्ध किया जा सकता है :

(1) उच्च लागत – ऐसी मशीन बनाने की क्षमता जो मानव बुद्धि का अनुकरण कर सके, कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। इसके लिए बहुत समय और संसाधनों की आवश्यकता होती है और इसमें बहुत अधिक धन व्यय हो सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अद्यतित रहने और नवीनतम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नवीनतम हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर पर काम करने की भी आवश्यकता होती है, जिससे यह काफी महंगा हो जाता है।

(2) रचनात्मकता नहीं – कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक बड़ा नुकसान यह है कि यह लीक से हटकर सोचना नहीं सीख सकता। कृत्रिम बुद्धिमत्ता पूर्व-डेटा और पिछले अनुभवों के साथ समय के साथ सीखने में सक्षम है, लेकिन अपने दृष्टिकोण में रचनात्मक नहीं हो सकता है। एक उत्कृष्ट उदाहरण बॉट किलत है जो फोर्ब्स की कमाई रिपोर्ट लिख सकता है। इन रिपोर्टों में केवल बॉट को पहले से उपलब्ध कराए गए डेटा और तथ्य शामिल हैं। हालांकि यह प्रभावशाली है कि बॉट स्वयं लेख लिख सकता है, लेकिन इसमें फोर्ब्स के अन्य लेखों में मौजूद मानवीय स्पर्श का अभाव है।



(3) बेरोजगारी – कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक अनुप्रयोग रोबोट है जो व्यवसायों को विस्थापित कर रहा है और बेरोजगारी बढ़ा रहा है (कुछ मामलों में)। इसलिए, कुछ लोग दावा करते हैं कि चैटबॉट और रोबोट द्वारा मनुष्यों की जगह लेने के परिणामस्वरूप बेरोजगारी की संभावना हमेशा बनी रहती है।

(4) कोई नैतिकता नहीं – नैतिकता एक महत्वपूर्ण मानवीय विशेषता है जिन्हें कृत्रिम बुद्धिमत्ता में शामिल करना मुश्किल हो सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की तीव्र प्रगति ने कई चिंताएं पैदा कर दी हैं कि एक दिन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनियंत्रित रूप से बढ़ेगा और अंततः मानवता को मिटा देगा। इस क्षण को कृत्रिम बुद्धिमत्ता विलक्षणता के रूप में जाना जाता है।

(5) भावशून्य – कंप्यूटर और अन्य मशीनों में भावनाएं नहीं होती हैं। मनुष्य एक टीम के रूप में कार्य करता है और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए टीम प्रबंधन आवश्यक है। हालांकि, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है



कि प्रभावी ढंग से काम करने के मामले में रोबोट इंसानों से बेहतर हैं लेकिन यह भी सच है कि मानवीय संबंध, जो टीमों का आधार बनते हैं, उन्हें कंप्यूटर द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है।

(6) कोई सुधार नहीं – मनुष्य, कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकसित नहीं कर सकता क्योंकि यह पहले से लोड किए गए तथ्यों और अनुभव पर आधारित तकनीक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ही कार्य को बार-बार करने में कुशल है लेकिन यदि हम कोई समायोजन या सुधार चाहते हैं तो हमें कोड को मैन्युअल रूप से बदलना होगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को मानव बुद्धि की तरह आकलन और उपयोग नहीं किया जा सकता है लेकिन यह अनंत डेटा संग्रहीत कर सकता है।

मशीनें केवल वही कार्य पूरा कर सकती हैं जिनके लिए उन्हें विकसित या प्रोग्राम किया गया है। यदि उनसे कुछ और पूरा करने के लिए कहा जाता है, तो वे अव्सर असफल हो जाते हैं या बेकार परिणाम देते हैं जिसके महत्वपूर्ण नकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं। इस प्रकार, हम किसी भी चीज को पारंपरिक नहीं बना पा रहे हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता निस्संदेह एक ट्रैंडिंग और उभरती हुई तकनीक है। यह दिन-ब-दिन बहुत तेजी से बढ़ रहा है और यह मशीनों को मानव मस्तिष्क की नकल करने में सक्षम बना रहा है। अपने उच्च कार्य- प्रदर्शन के कारण और चूंकि यह मानव जीवन को आसान बना रहा है, इसलिए यह उद्योगों के बीच अत्यधिक मांग वाली तकनीक बन रही है। हालांकि, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ कुछ चुनौतियां और समस्याएं भी हैं। दुनिया भर में कई लोग अभी भी इसे एक जोखिम भरी तकनीक के रूप में सोच रहे हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि अगर यह इंसानों से आगे निकल गई तो यह मानवता के लिए खतरनाक होगी, जैसा कि विभिन्न विज्ञान फिल्मों में दिखाया गया है। हालांकि, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का दिन-ब-दिन विकास इसे एक आरामदायक तकनीक बना रहा है और लोग इससे अधिक जुड़ रहे हैं। इसलिए हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह एक उच्च तकनीक है लेकिन बिना किसी नुकसान के प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए प्रत्येक तकनीक का उपयोग सीमित तरीके से किया जाना चाहिए।

– अधिकारी
डीएचएलआई शाखा, दिल्ली 1 अंचल

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

बैंक के आंचलिक कार्यालय बठिंडा को वर्ष 2022-23 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन हेतु गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा उत्तर-1 क्षेत्र के अंतर्गत “ख” क्षेत्र के लिए बैंकों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। 28 दिसंबर, 2023 को जोधपुर में आयोजित उत्तर-1 और उत्तर-2 क्षेत्रों के संयुक्त राजभाषा सम्मेलन में राजस्थान के माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र तथा केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्र के कर कमलों से आंचलिक प्रबंधक श्री सुनील कुमार तथा आंचलिक कार्यालय बठिंडा में पदस्थ प्रबंधक (राजभाषा) श्री सुशील कुमार ने क्रमशः पुरस्कार व प्रमाण-पत्र ग्रहण किए।



नराकास सम्मान



वर्ष 2022-23 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन हेतु गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा उत्तर-1 क्षेत्र के अंतर्गत “ख” क्षेत्र के लिए नराकास गुरुदासपुर को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार (द्वितीय) प्रदान किया गया। यह पुरस्कार आंचलिक कार्यालय गुरुदासपुर में पदस्थ मुख्य प्रबंधक श्री नवीन चंद छाबड़ा तथा प्रबंधक (राजभाषा) श्री सुमन कुमार ने प्राप्त किया। उल्लेखनीय है कि नराकास गुरुदासपुर का गठन व संचालन पंजाब एण्ड सिंध बैंक आंचलिक कार्यालय गुरुदास की अध्यक्षता में किया जा रहा है।

ੴ ਸ਼੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ

ਪੰਜਾਬ ਏਣਡ ਸਿੰਘ ਬੈਂਕ
(ਭਾਰਤ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਉਪਕ੍ਰਮ)



Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

ਜਹਾਂ ਸੇਵਾ ਹੀ ਜੀਵਨ - ਧ੍ਯੇਯ ਹੈ

PSB UnIC
You & I Connected
Mobile & Internet Banking Solution



ਹਮਾਰੇ ਲੋਕਪਿਆਂ ਦੀ ਉਪਕਾਰੀ ਅਤੇ ਉਪਕਾਰੀ ਦੀ ਸਾਥ ਆਪਕੀ ਬਚਤ ਪਰ ਉਚਿਤ ਲਾਮਾ

ਪੀਏਸਬੀ ਧਨ ਲਕ्षਮੀ

444 ਦਿਨ

ਬਿਧੁਤ ਦਰ
7.40%^{*}
ਵਾਰੀਕ

ਵਰਿ਷਼ਟ ਨਾਗਰਿਕਾਂ
ਕੇ ਲਿਏ
0.50%^{*}
ਵਾਰੀਕ
ਅਤਿਰਿਕਤ

ਅਤਿ ਵਰਿ਷਼ਟ
ਨਾਗਰਿਕਾਂ ਕੇ ਲਿਏ
0.65%^{*}
ਵਾਰੀਕ
ਅਤਿਰਿਕਤ

ਕ੍ਰਾਨ/ਓਡੀ
ਸੁਵਿਧਾ
ਉਪਲਬਧ[#]



1800 419 8300 (ਟੋਲ ਫ੍ਰੋ)

ਹਮਾਰਾ ਅਨੁਸਰਣ ਕਰੋ @PSBIndOfficial

